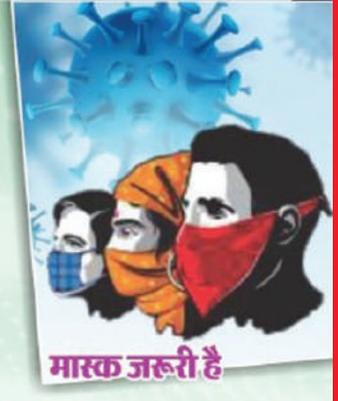


सामुदायिक

RNI No. MPBIL02443/2020-TC

GOONJ



National News Magazine

वर्ष : 01 अंक : 04

अप्रैल 2021

मूल्य : ₹ 25 पृष्ठ : 52

WE SALUTE



CORONA WARRIORS





जन-जन तक पहुंच रही आपकी अपनी आवाज़



गूज नेशनल मैगजीन का विमोचन करते पंडित सतीश कौशिक जी महाराज।



गूज नेशनल मैगजीन का अवलोकन करते विधायक डॉ. सतीश सिंह सिकरवार



गूज नेशनल मैगजीन का अवलोकन करते दक्षिण विधायक प्रवीण पाठक



गूज नेशनल मैगजीन का अवलोकन करते ग्वालियर कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह



गूज नेशनल मैगजीन का अवलोकन एवं साक्षात्कार देते ग्वालियर एसपी अमित सांघी



गूज नेशनल मैगजीन का अवलोकन एवं साक्षात्कार देते जेएएचसी अधीक्षक आर. के. एस. धाकड़



गूज नेशनल मैगजीन का विमोचन करते जी एस मौर्य , अपर संचालक जनसंपर्क ग्वालियर



गूज नेशनल मैगजीन का अवलोकन करते बीजेपी नेता तुषमुल झा



गूज नेशनल मैगजीन का अवलोकन करते सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा

कोरोना वॉरियर्स को सलाम....

कोरोना के इस संकटकाल में हम और आप सुरक्षित रहें इसके लिए बहुत से लोग मैदान में मोर्चा संभाले हुए हैं। ये वो कोरोना वारियर्स हैं, जो अपनी जान और परिवार से पहले आपका सोच रहे हैं। ऐसे ही कोरोना वारियर्स हैं वो डॉक्टर, पैरामेडिकल स्टाफ और अन्य स्वास्थ्यकर्मी जो हर समय मैदान में उठे हैं भारत सरकार द्वारा कोरोना के जंग में उठाए गए कदम कारगर साबित हो रहे हैं। पूरे देश में पसरा लॉकडाउन जैसा उपाय आज कोरोना के विरुद्ध कारगर बन रहा है। मगर कुछ ऐसे लोग भी है या कह लीजिये कर्मवीर या कोरोना वॉरियर्स है जो

मेहनत कर रहे हैं और लोगों की जान बचा रहे हैं। भारत में कोरोना वायरस के फैलने के बाद से डॉक्टरों से लेकर मेडिकल स्टाफ दिन-रात लोगों की मदद कर रहे हैं, और कोरोना से जंग में देश का साथ दे रहे हैं।

पूरे देश में करोड़ों कोविड वारियर्स काम कर रहे हैं जिनमें डॉक्टरों और एमबीबीएस स्टूडेंट भी शामिल हैं मेडिकल प्रोफेशनल्स के अलावा पूर्व कर्मचारी, पंचायत सेवक, आशा वर्कर्स, आंगनबाड़ी सदस्यों को भी कोरोना योद्धाओं की लिस्ट में रखा गया है एनसीसी से लेकर ग्राम रोजगार सेवक और पंचायत सेक्रेटरी का भी कोरोना से जंग में शामिल किया गया है। वहीं, रेलवे अस्पताल और डिफेंस हॉस्पिटल्स को भी कोरोना वॉरियर माना गया है। कुछ डॉक्टरों तो ऐसे हैं जो मरीजों की सेवा करते-करते खुद भी संक्रमित हो गए और अपनी जान तक गंवा बैठे। सभी का एक ही मकसद है कोरोना को हराना है, जिंदगी को बचाना है। इन तमाम चुनौतियों के साथ काम करते वक्त डॉक्टर शारीरिक तौर पर भी मुश्किल स्थितियों से जूझ रहे हैं।

कोविड-19 के फैलने के साथ ही समाज में एक भय का माहौल है। लोगों के दिमाग में इस महामारी को लेकर पहले से ही कई चीजें चल रही हैं। ज्यादातर नकारात्मक ही हैं। डॉक्टर या स्वास्थ्यकर्मी ड्यूटी पर जाते हैं तो परिवार और शुभचिंतकों को कई तरह की चिंता होने लगती हैं। कोविड-19 की ड्यूटी के दौरान डॉक्टरों को विशेष सुरक्षा कवच के साथ अपने सहयोगी, परिवार और शुभचिंतकों के बारे में भी सोचना पड़ता है। उन्हें यह सोचना पड़ता है कि कहीं उनकी एक गलती से संक्रमण ना फैल जाए। उन्हें ड्यूटी के दौरान चौकस रहते हुए और पीपीई किट पहने हुए मरीजों की जांच करनी पड़ती है। दिमाग के किसी कोने में परिवार और बच्चों के बारे में भी कुछ ना कुछ चलता रहता है। अन्त में एक बात और कि कोरोना महामारी और घातक विकराल रूप ले चुकी है इसलिए अपने अपनों का ख्याल रखें मास्क लगाएं घर पर रहें नियमों का पालन करें - स्टे हॉम-स्टे सेफ



कृति सिंह
संपादक

“

डॉक्टरों, नर्सों, वॉर्डबॉयस, पुलिसकर्मी, सफाईकर्मचारी, मीडियाकर्मी, डिलीवरी बॉयज, भारत के वीर जवान इत्यादि आज निरंतर कोरोना की जंग में अपना योगदान दे रहे हैं। इन सबकी जितनी सराहना की जाये उतनी कम है। गूज पत्रिका आज अपनी कलम के माध्यम से इन सभी कोरोना वॉरियर्स को तह दिल से सलाम और शुक्रिया करते हैं। लॉकडाउन के इस दौर में कुछ कहानियां ऐसी भी हैं जो मिसाल बन रही हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों से कोरोना वॉरियर्स की खबरें सामने आ रही हैं, जो सिस्टम के साथ मिलकर या खुद के दम पर कोरोना वायरस से जुड़ी दिक्कतों से लड़ रहे हैं। यह वीर योद्धा अपनी चिंता न करते हुए हम सबके समक्ष अपना सर्वस्य दे रहे हैं।

”



इस वैश्विक महामारी से निपटने में अपना निरंतर और निष्ठापूर्वक योगदान दे रहे हैं। डॉक्टरों, नर्सों, वॉर्डबॉयस, पुलिसकर्मी, सफाईकर्मचारी, मीडियाकर्मी, डिलीवरी बॉयज, भारत के वीर जवान इत्यादि आज निरंतर कोरोना की जंग में अपना योगदान दे रहे हैं। इन सबकी जितनी सराहना की जाये उतनी कम है। गूज पत्रिका आज अपनी कलम के माध्यम से इन सभी कोरोना वॉरियर्स को तह दिल से सलाम और शुक्रिया करते हैं। लॉकडाउन के इस दौर में कुछ कहानियां ऐसी भी हैं जो मिसाल बन रही हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों से कोरोना वॉरियर्स की खबरें सामने आ रही हैं, जो सिस्टम के साथ मिलकर या खुद के दम पर कोरोना वायरस से जुड़ी दिक्कतों से लड़ रहे हैं। यह वीर योद्धा अपनी चिंता न करते हुए हम सबके समक्ष अपना सर्वस्य दे रहे हैं। देश में कोरोना के मामले तेजी से फैल रहे हैं। ऐसे में सबसे ज्यादा उम्मीदें हमें डॉक्टरों से हैं क्योंकि वो दिन-रात



गुंज का मार्च 2021 एडिशन

IN THIS ISSUE...



ग्वालियर, अप्रैल 2021

(वर्ष 01, अंक 04, पृष्ठ 52, मूल्य 25 रुपए)

प्रेरणास्रोत

श्रीमती संध्या सिकरवार

प्रधान सम्पादक

डॉ. जे. एस. सिकरवार

सम्पादक

कृति सिंह

कार्यकारी संपादक

डॉ. आर. एन. एस. तोमर

सह संपादक

कुशाग्र तोमर

सहायक संपादक

अछेन्द्र सिंह कुशवाह

सब एडिटर/एडिटिंग

इमरान गौरी

एडिटोरियल प्रभारी

दिलीप जूदेव, पुनीत शर्मा, आरती शेखावत

संकलन

भरत सिंह

कानूनी सलाहकार

अरविन्द दूदावत

कार्यालय प्रभारी

स्नुति सिंह

छायांकन/सिटी रिपोर्टर

अनिल सिंह सिकरवार

कार्यालय प्रभारी

आकांक्षा तिवारी

गुंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय

ई-69/70, हरिश्चंकरपुरम लखकर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्क: 7987167692)

स्वात्वाधिकारी एवं प्रकाशक कृति सिंह के लिए मुद्रक संदीप कुमार सिंह द्वारा नेहा ग्राफिक्स, 32 ललितपुर कॉलोनी, लखर ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई-69/70, हरिश्चंकरपुरम लखर ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित। संपादक कृति सिंह। सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र ग्वालियर होगा।

RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, रचनाएं, एवं स्तंभ लेखक के स्वयं के हैं इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। (पत्रिका में सभी पद अवैतनिक एवं अस्थाई हैं।) संपर्क: 7987167692



सावधानी बरतते रहिए, मास्क चेहरे से हटने ना पाए, मास्क जरूरी है

वैक्सीन जरूर लगवाएं: डॉ. आर के एस धाकड़

डॉक्टर धरती पर भगवान का दूसरा रूप होते हैं. भगवान तो हमें एक बार जीवन देता है पर डॉक्टर हमारे अमूल्य जान को बार-बार बचाता है. दुनियां में ऐसे कई उदाहरण हैं जहां डॉक्टरों ने भगवान से भी बढ़कर काम किया है. बच्चे को जन्म देना हो या किसी वृद्ध को बचाना हो डॉक्टरों की मदद हमेशा हमें मुश्किल से बचाती है. यही एक पेशा है जहां दवा और दुआ का अनोखा संगम देखने को मिलता है, इंसान को भगवान भी यहीं बनाया जाता है. डॉक्टरों ने मानव जाति के लिए बहुत समर्पण किया है. अगर भारत की बात की जाए तो हम देखेंगे कि यहां आज भी डॉक्टरों का विशेष आदर-सत्कार होता है. कोरोना काल में सच्चे कोरोना वॉरियर्स के रूप में डॉक्टर समर्पण भाव से मरीजों की सेवा में लगे हैं ऐसा ही एक नाम है जेएच अधीक्षक डॉ. आर. के. एस. धाकड़ जो कोरोना काल में पूरी मेहनत से हर परिस्थिति का सामना कर रहे हैं और पूरे समर्पण के साथ मरीजों की सेवा भाव में लगे हैं गुंज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से उन्हें सलाम करती है।



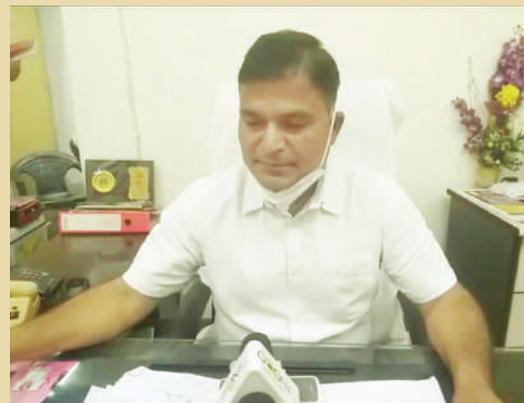
● गुंज न्यूज नेटवर्क

आ आप पाठकों में से कई लोगों ने कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में सबसे आगे खड़े स्वास्थ्य कर्मियों के लिए तालियां और थालियां बजाई होंगी। गुंज ने इन कोरोना वारियर्स को सम्मानित करने और आप से इनका और इनके विचारों का परिचय करवाने का एक प्रयास किया। आइये इस श्रृंखला में जानते हैं अधीक्षक जेएच डॉ श्री आर के धाकड़ जी के विचार।
एमपी में कोरोना ने अब विकराल रूप धारण कर लिया है। मास्क लगाने के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए व्यापक जन अभियान की जरूरत है क्योंकि अब भी कई लोग कोविड-19 से बचाव के इस साधन का इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं. कोरोना वायरस संक्रमण से सेहत कर्मी अकेले नहीं लड़ सकते और महामारी की रोकथाम के लिए समाज को भी आगे आना होगा। आज के इस मौजूदा हालात को पिछले साल कि कोरोना की स्थिति से तुलना करते हुए डॉक्टर धाकड़ ने



कहा कि एक साल पूरा हो चुका है और हम सभी बहुत ही खराब हालत से गुजरे हैं। उस समय यह एक ऐसी बीमारी थी जिस से लोग परिचित भी नहीं थे। फिर भी जनता और प्रशासन ने मिलकर कोरोना को पछाड़ दिया था। तो आज हम कह सकते हैं कि जो भी परिस्थिति आगे आएगी हम उस से जूझने में पूरी तरह सक्षम है। डॉक्टर धाकड़ ने गुंज पत्रिका के माध्यम से सभी लोगों से यह प्रार्थना की है कि जिस तरह लोग लापरवाही कर रहे हैं उसे बदलने की जरूरत है और सतर्कता बढ़ाने की भी आवश्यकता है, नहीं तो हमारे देश में सेहत कर्मी एक निश्चित संख्या में ही है और उनकी भी एक सीमा है। इतने ज्यादा बढ़े हुए केसेस को संभालने के लिए जनता के सहयोग और उनके सतर्कता की बहुत अधिक आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि वैक्सीनेशन जरूर लगवाएं और शहरी लोग तो खासकर वैक्सीनेशन लगवाएं। कोरोना का दूसरी लहर के चलते तेजी से बढ़ते हुए मरीजों के बारे में डॉक्टर धाकड़ ने कहा कि पिछले साल से इस साल सिचुएशन जरा अलग है। पिछले साल लॉकडाउन लगा दिया गया था जिसके चलते

आसपास के इलाके जैसे कि भिंड मुरैना इत्यादि जगहों से सामान्य बीमारी वाले लोग ग्वालियर नहीं आ रहे थे। परंतु इस साल स्थिति यह है कि चिकित्सा कर्मी और हॉस्पिटल दोहरी लड़ाई लड़ रहे हैं, एक और तो कोरोना के मरीजों में तेजी से इजाफा हो रहा है वहीं लॉकडाउन ना लगने के कारण सामान्य रोगों वाले मरीज भी न केवल ग्वालियर से बल्कि आसपास के इलाकों से भी इलाज के लिए ग्वालियर के अस्पतालों में आ रहे हैं।
वैक्सीन को लेकर डॉक्टर धाकड़ ने कहा कि जनता को वैक्सीन का मुद्दा थोड़ा सजीदीगी से लेना चाहिए और कोई भी गैर जिम्मेदाराना हरकत किसी को भी नहीं करनी चाहिए अफवाहों पर विश्वास ना करें। यह वैक्सीन पूरी तरह सुरक्षित है। इन्हें अपनी बारी आने पर



जन-जन की आवाज़ बनेगी गुंज

डॉक्टर धाकड़ ने गुंज मैगजीन के बारे में बोलते हुए कहा - बड़ी खुशी और हर्ष का विषय है की गुंज न्यूज चैनल और मैगजीन की शुरुआत हो गई है। मैं मानता हूं कि यह जन-जन में सही जानकारी पहुंचाने में कारगर सिद्ध होगी और जन-जन की आवाज़ बनेगी और मुझे उम्मीद है कि गुंज के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी व अन्य जानकारियां अपने सही स्वरूप में जनता तक पहुंचेंगी गुंज को बहुत-बहुत बधाइयां।

जरूर लगवाएं। सरकार की तरफ से हमें जो सेंटर अलॉट किया गया है वहां पर वैक्सीनेशन जोर शोर से हो रहा है। जो भी कोई आ रहा है सबको वैक्सीन दी जा रही है। डॉक्टर धाकड़ ने कहा -मैं एक बार फिर लोगों से गुंज के माध्यम से यही अपील करना चाहूंगा की सावधानी बरतते रहिए, मास्क चेहरे से हटने ना पाए, सफाई का ख्याल रखें और भीड़ भाड़, ब्याह शादी या सामाजिक कार्यक्रमों में जाने से बचें। आपकी समझदारी ही आपको व समाज को कोरोना की दूसरी लहर से बचा सकती है।



दो गज दूरी, अभी मास्क है जरूरी: डॉ. संजय धवले

वो सोते नहीं ताकि मरीज की आँखें बंद ना हों

गूज पत्रिका के सभी पाठकों को सन्देश देते हुए डॉक्टर संजय जी ने कहा कोरोना अभी गया नहीं है। दुसरी लहर आ चुकी है मुँह पर मास्क बाँधे रखें, हाथ साफ़ रखें और मीड़ भाड़ वाली जगहों से दूर रहें।



डॉ. संजय धवले
मेडीकल प्रोफेसर
(JAH & GRMC Gwalior)

को रोना वायरस महामारी के बीच डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ बिना थके मरीजों की सेवा में लगे हुए हैं। घर पर उनका भी परिवार घिंतिर रहता है लेकिन उनका कहना है कि वे भी सैनिक की तरह देश की सेवा में लगे हुए हैं भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था की हालत तो पहले से ही अच्छी नहीं थी, लेकिन कोरोना वायरस ने इस व्यवस्था को और हिलाकर रख दिया है। भारत जैसे घनी आबादी वाले देश में डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी मरीजों को कोरोना से

बचाने के लिए ढाल बने हुए हैं। वे 12-12 घंटे काम करते हैं, परिवार से दूर रहते हैं और फिर कार्टीन में चले जाते हैं। उनकी जगह कोई और डॉक्टर ले लेता है। यह सिलसिला बिना रुके पिछले एक साल से ऐसे ही चल रहा है। डॉक्टरों और मेडिकल स्टाफ के सामने केवल यही चुनौतियाँ ही नहीं हैं। आज गूज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से ऐसे ही कोरोना वॉरियर्स को सलाम कर रहे हैं जो मरीजों की सेवा में तत्पर होकर जुटे हुए हैं।

टीम गूज न्यूज नेटवर्क

को रोना वायरस के डर जब लोग घरों से निकलने की हिम्मत नहीं जुटा पाते, तब ऐसे भी जांबाज हैं जो बिना भय के सदिरधों और मरीजों की सेवा करने



में जुटे हैं। इनमें डॉक्टर, वो शख्स है जो भी समाज के लिए आवश्यक है। जिंदगियाँ बचाने के लिए ये जांबाज दिन रात काम पर लगे हुए हैं। कई बार ऐसी भी स्थिति आ जाती है जब ये जांबाज संक्रमित के सीधे संपर्क में आ जाते हैं। इसके बावजूद उनका न तो हौंसला डिगा है और न ही बेहतर करने में कोई कमी आई है। ये सेना के जवानों की तरह सलामी के हकदार हैं। डॉक्टरों के लिए यह इम्तिहान की घड़ी मरीजों की देखभाल में लगे ऐसे ही एक डॉक्टर है डॉ संजय धवले जिन्होंने गूज को बताया कि संक्रमण न फैले, यही उनकी ड्यूटी है। डॉक्टर संजय के अनुसार कोरोना की दुसरी लहर में

संक्रमित होने वाले मरीजों के सिम्पटम्स पहले जैसे ही है - सर्दी, खांसी, बदन दर्द, लगातार बुखार आना और साँस लेने में दिक्कत। यदि इन में से कोई भी लक्षण आप में मौजूद हो तो तुरन्त कोरोना की जांच करवानी चाहिए। जरूरी नहीं के युवकों में ये सारे ही सिम्पटम्स नजर आएँ, पर शंका होने पर टेस्ट अवश्य करवाए क्योंकि आप असिम्पटोमैटिक करिएर हो सकते हैं। आपके वजह से घर के और आस पास के बड़े बुजुर्ग संक्रमित हो सकते हैं। अगर आपके के घर में कोई उम्रदराज और डायबिटीज का मरीज हो तो खास ख्याल रखें क्योंकि ऐसे लोगों में कोरोना तेज़ी और घातक रूप से फैल सकता है और उनके लंस को भी प्रभावित करसकता है।

कोरोना वायरस संक्रमण के खिलाफ भारत में व्यापक स्तर पर टीकाकरण अभियान शुरू हो चुका है। सबसे पहले हेल्थ वर्कर्स, फ्रंटलाइन वर्कर्स और गंभीर खतरे वाले लोगों को टीका लगे है। इस टीकाकरण के बारे में डॉ संजय का कहना है कि देश में कोरोना वायरस के दो टीकों के इमरजेंसी इस्तेमाल को मंजूरी मिली है। इनमें सीरम इंस्टीट्यूट की कोविशील्ड और भारत बायोटेक की कोवैक्सीन शामिल हैं। उनका कहना है कि अगर कोई बीमारी है तो कोरोना वैक्सीन लगवाते वक्त उसकी पूरी जानकारी डॉक्टर को जरूर दें। डॉ का कहना है की यह दोनों ही वैक्सीन सेफ है और पूरी तरह सुरक्षित भी। इस लिए बेझिझक हो के आप इन दोनों का इस्तेमाल करें, खासकर अगर आप 45 वर्ष या उससे अधिक उम्र के है तो जल्द ही वैक्सीन लगवा लें। एक डॉक्टर होने के साथ ही डॉक्टर संजय एक मंझे हुए



कलाकार भी है। वे चित्रकारी/पेंटिंग करने का शौक रखते हैं। इनकी पेंटिंग्स के सोलो और ग्रुप शोज कई नेशनल आर्ट गैलरीज में लग चुके हैं। अपने बेटे के साथ टेबल टेनिस खेलना संजय जी का पसंदीदा काम है।





मास्क लगाएं, घर पर रहें, नियमों का पालन करें: डॉ. अजय पाल

वे अपनी जान की परवाह किए बगैर निभा रहे फर्ज

कोरोना वायरस की वजह से लोग घरों में कैद हैं लोगों ने जरूरी चीजें स्टोर कर ली हैं और बाहर कम से कम निकल रहे हैं। लेकिन इस सब के बीच कुछ लोग ऐसे हैं जो अपनी इयूटी पर मुस्तैद हैं डॉक्टर मरीज को देख रहे हैं ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जो अपने को खतरे में डालकर इयूटी निभा रहे हैं ऐसे ही शहर के एक डॉक्टर कोरोना वॉरियर्स के रूप में काम कर रहे हैं ग्वालियर के जाने-माने चिकित्सक डॉ. अजय पाल जिन्होंने इस नाजुक समय पर बहुत निडरता से अपना काम किया ऐसी बीमारी जिसमें परिवार के लोग अपने सदस्य से दूर भाग रहे हैं उस समय पर चिकित्सकों ने आगे आकर उनकी देखभाल की, उनकी साफ-सफाई की यह बहुत ही प्रशंसा का विषय है आज ऐसे ही कोरोना वॉरियर्स को हम अपनी कलम के माध्यम से सलाम कर रहे हैं।

● टीम गूँज न्यूज नेटवर्क

ध रती पर भगवान के रूप में मदद को तैयार बैठे डॉक्टरों की किसे जरूरत नहीं पड़ती। हमारे जीवन में उनके इस योगदान को याद करने के लिए यू तो हम हर साल नेशनल डॉक्टर्स डे मनाते हैं। कोरोना महामारी

काल को ले कर। डॉक्टर अजय पाल जिन्होंने अपने मेडिकल करियर कि शुरुआत 1994 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस कॉलेज से एमबीबीएस कि डिग्री ले के कि आज ग्वालियर के एक जाने माने डॉक्टर है। डॉ अजय ने ग्वालियर में अपनी मेडिकल प्रैक्टिस के दौरान काफी बदलाव देखे है। जहाँ एक समय ग्वालियर में डायग्नोस्टिक सेवाएं इतनी विकसित नहीं थी और इन जांचों के लिए दिल्ली का रुख करना पड़ता था वही आज के ग्वालियर में

मात्रा होने चाहिए। सम्पूर्ण आहार या बैलेंस्ड डाइट ले और पानी अच्छी मात्रा में पियें।

हालाकि एक डॉक्टर होने के नाते और वह भी इस कठिन समय में निजि समय कुछ काम ही मिल पता है फिर भी जब भी कुछ समय डॉक्टर साहब निकल पाते है वे यह समय अपने परिवार के साथ गुजारना परसंद करते है साथ ही उन्हें म्यूजिक सुनने और किताबे पढ़ने का भी खूब शौक है। जब भी मन उदास, परेशान या शांति कि तलाश में



डॉ. अजय पाल को सम्मानित करतीं गूँज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह।

एजियोग्राफी, एजियोप्लास्टी और कैंसर केयर जैसी सुविधाएं भी आसानी से उपलब्ध है।

डॉ पाल ने पी जी जीआरएमसी, ग्वालियर से ही पूरी की। वे बताते है कि कोरोना की महामारी ने ना केवल ग्वालियर के लोगों को बल्कि सारी दुनिया को ही बदल डाला है। लोगों के रहन सहन के साथ उनके विचार धरा भी बदल गयी है, अब वे पहले से ज्यादा जागरूक है। सर्दी खांसी जैसी अनियमितताओं की तरफ अब एक आम इंसान ध्यान देता है और सजग रहता है। उसे अपने इस दायित्व का एहसास है कि उसकी एक लापरवाही उसके परिवार और पूरे समाज पर भारी पड़ सकती है। डाइट को ले कर डॉ पाल का कहना है कि न केवल कोरोना के मरीज बल्कि सबको ही अपने डाइट का खास ख्याल रखना चाहिए। याद रहे आपके डाइट में 60-70 त कार्बोहाइड्रेट्स , 10 त फैट्स और 20 त प्रोटीन्स के

होता है तो उन्हें सुकून और शांति मिलती है पुराने गाने सुन के। जी हां आपके और मेरे तरह डॉक्टर पाल भी किशोर कुमार , रफी और लता जी के फैन है।

“
गूँज के माध्यम से डॉ अजय पाल आप सब को एक ही सन्देश देना चाहते है , ध्यान से पढ़ियेगा ये जीवन में उतरने लायक सीख। डॉ पाल कहते है- मैं लोगों से ये ही कहना चाहूँगा कि स्वास्थ्य और खुशी यह दो ऐसी चीजें जिन का कोई मुकाबला नहीं है। हम बहुत सारा पैसा कमा सकते हैं तरह तरह का सामान खरीद सकते हैं पर यह सब कभी भी खुशी या स्वास्थ्य कि कीमत पर नहीं होना चाहिए। जीवन में सबसे जरूरी खुश और स्वस्थ रहना है।

के बीच जिस तरह डॉक्टरों और मेडिकल स्टाफ के लोग हमारी मदद कर रहे हैं, बिना अपनी जान की परवाह किए बगैर वे लोग फर्ज निभा रहे हैं उसके लिए उन्हें शुक्रिया करना तो बनता है। यहाँ हम कुछ ऐसे ही ग्वालियर के कोरोना वारियर्स से आज आपको रूबरू कराते हैं और ये भी बताते है के क्या कहना है उनका कोरोना और कोरोना



अपने अपनों को सुरक्षित करें, मास्क जरूर लगाएं

समाजसेवा के लिए जीवन किया समर्पित : डॉ. वीणा प्रधान

कोरोना के केस जिस तरह से बढ़ रहे हैं, उससे हर कोई डर रहा है। पूरे विश्व में रोजाना हजारों की संख्या में लोग मर रहे हैं। ऐसे में डर लगना लाजिमी है लेकिन कुछ ऐसे भी हैं, जो कोरोना के खतरे के बीच मरीजों की सेवा में दिनरात जुटे हुए हैं। पूरा देश इन्हें कोरोना वॉरियर्स के नाम से जानता है। गूज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से ऐसी ही एक समाजसेवक कोरोना वॉरियर्स डॉ. वीणा प्रधान से आपको रुबरू करा रहे हैं जिन्होंने एक चिकित्सक के रूप में लोगों की सेवा के लिए जीवन समर्पित किया और कोरोना काल में भी समाजसेवा के रूप में कार्य कर रही हैं।

टीम गूज न्यूज नेटवर्क

कहते हैं हर सक्सेस के पीछे संघर्ष की एक लंबी कहानी होती है। ऊपर से जब कोई महिला साठ और सत्तर के दशक में अपने हालात को पछड़ते हुए देश कि कठिनतम परीक्षाओं पे काबिज होती है, तो पूरे समाज के

अवार्ड्स

- आनंदी जोशी अवार्ड नारी शक्ति अवार्ड
- ऑक्टोबर गौरव अवार्ड ABBS 2019
- ग्वालियर रतन अवार्ड
- कार्यार्थ रत्न अवार्ड- 2015
- सर्टिफिकेट ऑफ अप्रेसिअशन रोटरी वीरांगना ग्वालियर (2013-2017)
- सर्टिफिकेट ऑफ अप्रेसिअशन वाई दैनिक भास्कर -2017



लिए एक आदर्श बन जाती है। साधारण परिवार से होने के बावजूद असाधारण सफलता हासिल करने वाली डॉक्टर वीणा प्रधान भी ऐसी ही शिखरियत हैं, जिनकी मेहनत पत्थर की लकीर बन कर उभरी। यह बात है उन्नीस सौ साठ और सत्तर के दशकों कि जब न बेटे बचाओ बेटे पढ़ाओ का नारा था न महिला सशक्तिकरण का माहोल। ऐसे दौर में जन्मी और पढ़ी डॉ वीणा तब सिर्फ वीणा ही थी। पटना के गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल कि वो पहली छात्रा बनी जिसने मेडिकल की कॉम्पिटिटिव परीक्षा उत्तीर्ण की। माता पिता ने भी कोई कमी नहीं रखी, रिश्तेदारों और मित्रों कि आपत्ति होने पर भी उन्होंने वीणा को हॉस्टल में रह कर अपनी पढ़ाई पूरी करने के इजाजत दी। पटना मेडिकल कॉलेज से शिक्षा पूरी कर वे विवाह के पश्चात् ग्वालियर आगयी।



कच्ची अम्र में हुए एक वाक्य ने बदल दी पूरी जिंदगी

हेमसिंह की परेड से शुरु किया डॉ वीणा ने अपना ग्वालियर का सफर, जिसमे वो न केवल एक कामयाब और हृदयिल अजीज डॉक्टर बनकर उभरी पर एक समाज सेवी भी। डॉ. वीणा जी अतीत के पत्रों को पलटते हुए बताती हैं कि यह वाक्या उन दिनों का है जब वे स्कूल में पढ़ती थी। एक शाम उनके पिताजी दफ्तर से घर आये और उनकी माताजी के हाथ में पगार थमाई। आश्चर्यचकित उनकी माताजी ने दो बार रुपये

गिने और बोली कि यह तो आधे ही है। पिताजी मुस्करा के बोले आधे किसी ऐसे को दे आया हूँ जिसे उनकी हमसे ज्यादा जरूरत थी। उसी दिन डॉ वीणा ने मन बना लिया था के वे भी जरूरतमंदों और समाज के सेवा करेंगी। नदी को कोई रास्ता देता नहीं है नदी अपना रास्ता खुद बनाती है। जिंदगी में सफलता और असफलता दोनों मिलती हैं, लेकिन असफलता मिलने का मतलब जिंदगी में रुक जाना नहीं बल्कि एक सबक होता है। हारते तो वहीं है जो चुनौतियों से लड़ते नहीं और जीतते वहीं है जो कुछ कर गुजरने की ठान लेते हैं। हेमसिंह की परेड क्षेत्र में काम करने के शुरुआती दिन बहुत चुनौतीपूर्ण थे 23-24 वर्षीय नयी और इस क्षेत्र के पहली महिला डॉक्टर के लिए। समय बीतने और अपनी कड़ी मेहनत के कारण कुछ ही वर्षों में डॉ वीणा ने सबका दिल और विश्वास जीत लिया और अपनी ऐसी जगह बनाई कि आज रिटायरमेंट के बाद भी लोग उन्हें याद करते है और चाहते है कि वो अपने ड्यूटी फिर ज्वाइन करलें। डॉ वीणा का कहना है कि समाज सेवा करने के लिए पैसे कि नहीं मन की शुद्धता चाहिए। हर व्यक्ति जहाँ और जिस भी हाल में है समाज सेवा कर सकता है। किसी का मुश्किल वक में साथ देना किसी का हैसला बढ़ाना भी तो समाज सेवा ही है। हेमसिंह की परेड क्षेत्र में अपनी पूरी सर्विस के दौरान इन्होंने इस क्षेत्र के सभी आंगनवाड़ीओ में और स्कूलों में जागरूकता लाने के लिए मुफ्त लेक्चर्स दिये और कभी कभी तो स्वयं गोली दवाई खाके भी दिखाई कि इन से कोई नुक्सान नहीं होता। आपने चालीस साल के करियर में इन्होंने सीनियर सिटिजनस को हमेशा मुफ्त चिकित्सा मुहैया कराई तथा स्टूडेंट्स से हमेशा ही कम फीस ली। इस सब के अलावा इन्होंने स्कूली बच्चों के बीच कई विषयों पर जागरूकता व मोटिवेशन भरी स्पीचेज निशुल्क दी है। तमाम वैक्सिनेशन और इमुनाइजेशन प्रोग्राम्स इनकी देख रेख में सफलतापूर्वक चलायें गए है। आज रिटायरमेंट के बाद भी डॉ साहिबा कई सामाजिक और अवेयरनेस प्रोग्राम्स (कैंसर) का संचालन स्वयं और कुछ दूसरी समाजसेवी संस्थाओं के साथ मिलकर करती है। डॉ वीणा को मिले हुए अवार्ड्स और प्रशंसा पत्रों का तो कोई हिसाब किताब ही नहीं है और ना ही वो रखती है। उनके लिए तो यह एक जीवन शैली है। दूसरों के कल्याण में ही सदा उन्होंने अपना कल्याण माना है।





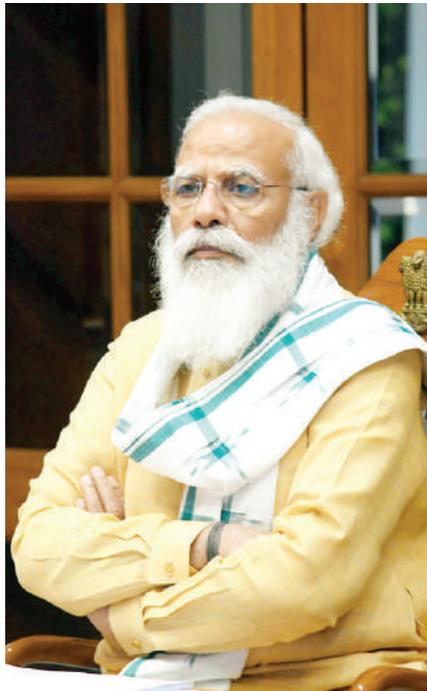
कोरोना पर पीएम मोदी का संबोधन देश को लॉकडाउन से बचाना है

कोरोना संकट के बढ़ते मामलों के बीच पीएम नरेंद्र मोदी ने लॉकडाउन जैसी आशंकाओं से देशवासियों को राहत दी है। देश की जनता को भरोसा दिलाते हुए पीएम मोदी ने कहा कि देश में रोजगार और टीका साथ चलेंगे। यही नहीं उन्होंने राज्यों से भी अपील की है कि लॉकडाउन जैसी चीजों को आखिरी विकल्प के तौर पर ही अपनाएं। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमें आज जागरुकता की जरूरत है। यदि समाज खुद से उठ खड़ा हो तो फिर कंटेनमेंट जोन्स से लेकर लॉकडाउन तक की पाबंदियों की जरूरत नहीं होगी। उन्होंने कहा कि इस जागरुकता के अभियान के लिए सामाजिक संगठनों को आगे आने की जरूरत है।

पी एम मोदी ने कहा कि प्रचार माध्यमों से भी मेरी प्रार्थना है कि लोगों को सतर्क और जागरुक करने के लिए अपने प्रयासों को बढ़ाएं। इसके अलावा यह प्रयास भी करें कि उर का माहौल कम हो सके और लोग किसी भी तरह के भय और भ्रम की स्थिति में न आएं। प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं राज्यों से भी अपील करूंगा कि लॉकडाउन को अंतिम विकल्प के तौर पर ही इस्तेमाल करेंगे। पीएम मोदी ने कहा कि हम देशवासियों की भी सेहत सुधारेंगे और अर्थव्यवस्था का भी सुधार करेंगे। देश के कई राज्यों में ऑक्सीजन की किल्लत को मानते हुए पीएम मोदी ने कहा कि इस संकट से निपटने के लिए तेजी से उपाय किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि फैसिलिटी बढ़ाने से लेकर ऑक्सीजन रेल चलाने तक की कोशिशें की जा रही हैं। कोरोना की नई लहर आने के बाद से फार्मा कंपनियों ने दवाइयों के उत्पादन में तेजी लाने का काम किया है। इसे और बढ़ाया जा रहा है। कल भी मेरी फार्मा कंपनियों के लोगों से बात हुई है। उत्पादन में इजाफे के लिए हर तरह से दवा कंपनियों की मदद ली जा रही है। हमारा सौभाग्य है कि देश में इतना मजबूत फार्मा सेक्टर है। इसके अलावा देश के अस्पतालों में बेड्स को बढ़ाने का काम भी तेजी से चल रहा है। कुछ शहरों में बड़े कोविड अस्पताल भी बनाए जा रहे हैं।

12 करोड़ लोगों को लगा टीका

पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि देश की कंपनियों ने तेजी से वैक्सीन तैयार की हैं। हमारे यहां कम दाम में बड़ी मात्रा में वैक्सीन उपलब्ध हैं। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमने दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीनेशन अभियान



शुरू कर दिया है। हमने तेजी से 10 करोड़, 11 करोड़ और फिर 12 करोड़ के टारगेट को हासिल किया है। पीएम मोदी ने कहा कि हमने कल ही फैसला लिया है कि अब 1 मई से 18 साल से अधिक आयु वाले लोगों को भी टीका लगाया जाएगा। इसके अलावा 45 साल से अधिक आयु के सभी लोगों को भी पहले की तरह ही टीका लगता रहेगा।

टीका और रोजगार साथ चलेंगे

जान भी और जहान भी की बात करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि हमारा प्रयास जीवन बचाने के लिए है और

आर्थिक गतिविधियां भी चलाए रखने पर है। उन्होंने कहा कि 18 साल से अधिक आयु वाले लोगों को टीका लगाए जाने से वर्कफोर्स तक दवा पहुंचेगी। इससे कोरोना संकट से निपटने में मदद मिलेगी। इसके अलावा पीएम मोदी ने राज्यों से अपील की कि वे मजदूरों को भरोसा दिलाएं कि शहरों को छोड़कर न जाएं और जहां हैं, वहीं रहें। बीते साल के लॉकडाउन का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि तब इसलिए जरूरत थी क्योंकि हमारे पास लैब, अस्पताल, पीपीई किट और जानकारी तक का अभाव था। लेकिन आज हमने अनुभव और क्षमता दोनों हासिल की हैं। आज हमारे पास पीपीई किट से लेकर टेस्टिंग तक के लिए बड़ा इन्फ्रास्ट्रक्चर है।

कठिन समय में काम करने के लिए मेडिकल स्टाफ की तारीफ की

मोदी ने कहा, 'साथियो! अपनी बात को विस्तार देने से पहले मैं देश के सभी डॉक्टरों, मेडिकल-पैरा मेडिकल स्टाफ, सफाई कर्मी, एंबुलेंस के ड्राइवर, सुरक्षाबल, पुलिसकर्मी सभी की सराहना करूंगा। आपने कोरोना की पहली लहर में भी अपना जीवन दांव पर लगाया था। आज आप फिर इस संकट में अपने परिवार, सुख और चिंताएं छोड़कर दूसरों का जीवन बचाने में दिन-रात जुटे हुए हैं। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि कठिन से कठिन समय में भी हमें धैर्य नहीं खोना चाहिए। किसी भी परिस्थिति से निपटने के लिए हम सही निर्णय लें, तभी हम विजय हासिल कर सकते हैं। इसी मंत्र को सामने रखकर आज देश दिन-रात काम कर रहा है।'



अब मुश्किल दौर में ले जा रही है कोरोना महामारी

संक्रमण का शिकंजा

देश में कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर हर दिन नए रिकॉर्ड बना रही है। यह लहर पहले की तुलना में ज्यादा संक्रामक और घातक मानी जा रही है।

महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान जैसे कई राज्यों और मुंबई, पुणे, दिल्ली, रायपुर, सूरत, अहमदाबाद और लखनऊ जैसे बड़े शहरों में स्थिति बहुत गंभीर होती जा रही है। कोरोना संक्रमण के

अत्यधिक तेजी से बढ़ते मामलों के बीच टेस्टिंग और कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग की व्यवस्था से लेकर सरकारी और निजी

अस्पतालों में बिस्तरों खासकर आईसीयू और वेंटिलेटर की उपलब्धता पर दबाव बहुत ज्यादा बढ़ गया है।

जाहिर है कि इससे आम लोगों में घबराहट और बेचैनी बढ़ रही है।

अधिकांश जगहों पर कोरोना के गंभीर मामलों में इलाज के लिए इस्तेमाल होने वाले रेमडेसवीर इंजेक्शन की किल्लत और कालाबाजारी की रिपोर्टें हैं, सोशल मीडिया पर प्लाज्मा थेरपी के लिए प्लाज्मा की मार्फिक गुहारें लगाई जा रही हैं और श्मशान घाटों पर भीड़ बढ़ने और टोकन बंटने की खबरें हैं।

अ गर हम फिर लॉकडाउन जैसे हालात में पहुंच गए हैं, तो यह जितना दुखद है, उतना ही चिंताजनक भी। यह बेहद चिंता और अफसोस की बात है, तमाम सावधानियों और दिशा-निर्देशों के बावजूद भारत ने कोरोना संक्रमण के मामले में अपना पिछला रिकॉर्ड तोड़ दिया है। कोरोना की दूसरी लहर में संक्रमण के मामलों ने पुराने सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। प्रतिदिन के कुल मामलों में करीब दस-दस हजार की वृद्धि हो रही है, इससे संक्रमण के बढ़ते खतरे का अंदाजा लगाया जा सकता है।

दुनिया में इसके पहले केवल अमेरिका ही एक ऐसा देश है, जहां एक दिन में एक लाख से ज्यादा मामले सामने आए थे। अब अमेरिका में जहां प्रतिदिन 70 हजार के करीब मामले आ रहे हैं, वहीं भारत एक लाख के पार पहुंच गया है। अगर यही रफ्तार रही, तो अप्रैल घातक सिद्ध होगा। भारत चूक अमेरिका की तुलना में चार गुना से ज्यादा आबादी वाला देश है, इसलिए आंकड़े कहां जाकर दम लेंगे, सोचना भी भयावह है। कोई आश्चर्य नहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बढ़ते कोरोना मामलों को देखते हुए एक उच्च स्तरीय बैठक की है। कोरोना पर नियंत्रण पाने के

लिए लोगों में जागरूकता और लोगों की भागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है। कोरोना के खिलाफ अपनाए जाने वाले उपायों को और मजबूत करने व इन्हें बेहतर तरीके

हवाई अड्डों पर कोरोना जांच की व्यवस्था को सोलह आना दुरुस्त कर लिया है? जहां एक ओर, सरकार को नए सिरे से जागना होगा, तो वहीं दूसरी ओर,



से लागू करने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है। कोरोना दिशा-निर्देशों की अवहेलना हुई है, जिसका खामियाजा ये प्रदेश भुगत रहे हैं। इन तीनों राज्यों और खासकर महाराष्ट्र में लॉकडाउन जैसी स्थिति है। कई राज्यों ने अपने यहां प्रवेश करने वालों के लिए कोरोना जांच को अनिवार्य बनाया है, पर व्यावहारिक रूप से देख लेना चाहिए कि क्या वाकई आदेशों की पालना हो रही है? क्या हमने

विशेषज्ञों को कोरोना की उखल के वैज्ञानिक कारणों की पड़ताल भी करनी पड़ेगी। लोगों के बीच कई तरह की भ्रांतियां फैलने लगी हैं। लोगों को इस खतरे के प्रति पूरी तरह सूचित व सचेत करना होगा। सरकार के कोविड-19 टास्क फोर्स के शीर्ष सदस्य डॉक्टर रणदीप गुलेरिया ने बताया है कि म्यूटेंट स्ट्रेन्स मामलों में आने वाले उखल का एक बड़ा कारण है। उन्होंने कुछ सुझाव



भी साझा किए हैं, जिनमें कटेनमेंट जोन बनाना, लॉकडाउन, जांच, खोज और क्वारंटीन करना शामिल है। आशंका है, सरकार को लॉकडाउन जैसी कड़ाई के लिए मजबूर होना पड़ेगा। क्या एक और लॉकडाउन झेलने की स्थिति में यह देश है? इसलिए सही राह यही है कि बचाव के प्रति लोग सजग हों और प्रशासन अपने स्तर पर उनको दंडित भी करे, जो अभी जागे नहीं हैं।

देश में कोरोना की दूसरी लहर बेलगाम हो गई है। रोजाना के नए मामले 1.80 लाख का आंकड़ा पार कर चुके हैं। कई बड़े शहरों में लॉकडाउन जैसी कड़ाई भी शुरू हो गई है। दिल्ली, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान जैसे राज्यों में लॉकडाउन लगाने के अलावा कोई और चार राज्य सरकारों के पास नहीं बचा है स्थिति काफी भयावह होती जा रही है। इन सबको देखकर महानगरों के प्रवासी मजदूर फिर से अपनी जन्मभूमि की ओर लौटने लगे हैं। इससे असंगठित क्षेत्र के साथ-साथ संगठित क्षेत्र पर भी खासा दबाव बढ़ गया है। अर्थव्यवस्था के फिर से लुढ़कने का अंदेश है। लिहाजा, सभी की यही चिंता है कि बिगड़े हालात कैसे संभाले जाएं?

पिछली बार जब 68 दिनों का देशव्यापी लॉकडाउन लगाया गया था, तब अर्थव्यवस्था को आघात लगने के साथ ही आम लोगों पर भी गहरा मनोवैज्ञानिक असर पड़ा था। इसका हमें सबक लेना चाहिए था। मगर हमने यही देखा कि दिवाली, बिहार चुनाव और किसान रैलियों के बावजूद कोरोना के मामले कम आए। इससे लोगों का हौसला बढ़ता गया, और वे करीब-करीब बेपरवाह हो गए। यह आलम तब था, जब हमें पता था कि हर महामारी का दूसरा दौर आता है, जो पहले चरण से कहीं ज्यादा घातक होता है। हमने सुरक्षा-उपायों की अनदेखी जारी

रखी। रेमडेसिविर जैसी दवाओं का उत्पादन कम कर दिया, और जिस टीकाकरण की ओर हमें पिछले साल के जून-जुलाई महीने में ही कदम बढ़ाने चाहिए थे, जनवरी 2021 में हमने टीके का ऑर्डर दिया। कोविड-19 वायरस के नए 'वेरिएंट' को समझने के लिए जीनोम टेस्टिंग की जरूरत भी नहीं समझी। 'ट्रेसिंग' (संक्रमित

हीला-हवाली से हालात इतने बिगड़ गए कि कोरोना संक्रमण और मौत के मामले में वह दूसरे स्थान पर पहुंच गया। लिहाजा, तमाम सुरक्षा उपायों के साथ लॉकडाउन लगना ही चाहिए। अगर फरवरी या मार्च में सख्त प्रतिबंध लगा दिए गए होते, तो शायद यह नौबत नहीं आती। महाराष्ट्र में हुई अनदेखी का नतीजा हम



के संपर्क में आए लोगों की पहचान) में तो लापरवाह रहे ही। अब चूँकि संक्रमण देश में काफी ज्यादा फैल गया है, इसलिए नए सिरे से रणनीति बनाने की दरकार है। चुनावी रैलियां बड़े आयोजन 'सुपर स्प्रेडर' साबित हो सकते हैं और अगले चार-पांच हफ्तों में इसका असर दिखने लगेगा। इसको रोकने के लिए करोड़ों लोगों की ट्रेसिंग की जरूरत है, जो संसाधनों की कमी के कारण संभव नहीं। अभी टीकाकरण से भी 'हर्ड इम्यूनिटी' मुमकिन नहीं, क्योंकि इसके लिए हमें हरेक महीने औसतन 14 करोड़ टीके लगाने होंगे। आपात स्थितियों में कुछ विदेशी टीकों को मंजूरी देने से टीकाकरण में गति आने और टीके की कमी से पार पाने में मदद मिल सकती है, लेकिन आदर्श स्थिति को पाना फिलहाल मुश्किल जान पड़ता है। ऐसे में, लॉकडाउन ही एकमात्र विकल्प है। अगर तुरंत देशव्यापी तालेबंदी नहीं की गई, तो हालात और खराब हो सकते हैं। ब्राजील का उदाहरण हमारे सामने है। वहां लॉकडाउन को लेकर की गई

भुगत ही रहे हैं। हालांकि, वहां के लॉकडाउन सरीखे प्रतिबंध खासा मानवीय हैं, जिनकी तारीफ की जानी चाहिए। अच्छी बात यह है कि हमारे पास खाद्यान्न का पर्याप्त भंडार है। लॉकडाउन-1 से सबक लेकर हमें इस बार हर गरीब और वंचित को मुफ्त में भोजन उपलब्ध कराना होगा। इसी तरह, जहां-जहां जनसंख्या घनत्व ज्यादा है, वहां लोगों के बीच शारीरिक दूरी बढ़ाने के लिए उन्हें नजदीकी स्कूल-कॉलेज में अस्थाई आसरा देना होगा। नगदी की सहायता भी नियमित तौर पर जरूरतमंदों तक पहुंचनी चाहिए। नौजवान और बच्चे भी वायरस का शिकार बन रहे हैं। नए-नए क्षेत्रों, खासकर उन शहरों में भी इसका प्रसार दिख रहा है, जहां स्वास्थ्य सेवाओं का ढांचा काफी कमजोर है। इसलिए यदि हम यूं ही लापरवाही बरतते रहे, तो आने वाले दिन भयावह हो सकते हैं। इससे हमें आर्थिक व मनोवैज्ञानिक चोट पहुंच सकती है। इसके बाद सख्त कदमों का कोई अर्थ भी नहीं रह जाएगा।





मजदूर एक बार फिर पलायन को मजबूर

“

कोरोना वायरस की दूसरी लहर के खतरों से मुम्बई, पुणे दिल्ली आदि बड़े शहरों में रह कर रोजी-रोटी कमा रहे उत्तर प्रदेश-बिहार के मजदूरों के ऊपर एक बार फिर जीवनयापन का खतरा मंडराने लगा है। महाराष्ट्र में कोरोना के चलते काम-धंधे बंद हो रहे हैं तो उद्धव सरकार अपने यहां काम करने वाले प्रवासी मजदूरों को विश्वास नहीं दिला पा रही है कि सब कुछ ठीक हो जाएगा, जिसके चलते प्रवासी मजबूर अपने गांव-घर को पलायन को मजबूर हो गए हैं।

को

रोना के चलते देशभर में देशभर में कई राज्यों में लॉकडाउन लगाया गया है जिसके चलते एक बार फिर मजदूर पलायन को मजबूर हो गया है। मुम्बई से यूपी-बिहार की ओर आनी वाली ट्रेनों में जबर्दस्त भीड़ दिखाई पड़ रही है, तो मुम्बई जाने वाली गाड़ियों में आसानी से टिकट मिल रहा है। दरअसल, कोरोना महामारी के चलते मुम्बई में काफी उद्योग-धंधों पर 'ताला' लग गया है। लॉकडाउन जैसे कदमों की आशंका ने एक बार फिर मजदूरों के पलायन का खतरा पैदा कर दिया है। विभिन्न क्षेत्रों से मिल रही सूचनाओं के अनुसार कोरोना की दूसरी लहर के मद्देनजर लॉकडाउन जैसे कदमों की आशंका ने एक बार फिर मजदूरों के पलायन का खतरा पैदा कर दिया है।

कोरोना वायरस के प्रसार के बीच सख्त लॉकडाउन की शंकाओं ने एक बार फिर मजदूरों के लिए संकट पैदा कर दी है। पिछले साल की स्थिति से वाकिफ श्रमिक दिल्ली, चेन्नई, मुंबई जैसे महानगरों से अपने गृह राज्य बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, राजस्थान की ओर लौट रहे हैं। दिल्ली सरकार की ओर से एक सप्ताह के लिए लॉकडाउन लगाने की घोषणा के बाद बस स्टेशनों पर बड़ी संख्या में लोग शहर छोड़ने के लिए इकट्ठा हुए। उन्हें डर है कि अगर देशव्यापी लॉकडाउन होता है तब पिछले साल की तरह उन्हें सैकड़ों किलोमीटर चलने के लिए उन्हें मजबूर होना पड़ जाएगा। पिछले साल, सैकड़ों प्रवासी मजदूर

लॉकडाउन के दौरान सार्वजनिक परिवहन के अभाव में शहर से पैदल ही अपने घर की ओर निकल पड़े थे।

राज्यों में ट्रेनों, बसों और हवाई जहाजों से दिल्ली, मुंबई, पुणे और बेंगलूरू जैसे शहरों से प्रवासी मजदूरों का



प्रवासी मजदूरों ने शुरू किया पलायन

बड़े शहरों में काम कर रहे प्रवासी मजदूर गांवों का रूख करने लगे हैं, लेकिन अभी हालात उतने खराब होते नहीं दिख रहे हैं जितने पिछले वर्ष देखने को मिले थे। पिछले साल लॉकडाउन के दौरान जैसी स्थिति अभी नहीं दिख रही है, न ही ऐसे हालात बन ही पाएंगे। यूपी-बिहार जैसे

सपरिवार लौटना बताता है कि उनमें भविष्य को लेकर आशंका गहरा रही है। अगर यह चलन बढ़ता है तो पिछले कुछ माह के कामकाज के आधार के बाद से अर्थव्यवस्था में मांग बढ़ने से जो रौनक लौटने लगी थी, वह फीकी पड़ सकती है। वैसे प्रधानमंत्री ने कहा है कि



कोरोना की पहली लहर के मुकाबले आज महामारी से निपटने के कहीं अधिक संसाधन हैं। उन्होंने यह भी कहा कि लॉकडाउन इसे रोकने का पसंदीदा उपाय नहीं है। लेकिन नाइट कर्फ्यू और अन्य आंशिक पाबंदियों की प्रभावित इकाइयों ने मजदूरों, कर्मचारियों को औपचारिक या अनौपचारिक रूप से घर भेजना शुरू किया है ताकि उन्हें बैठाकर खिलाने की मजबूरी न आन पड़े।

कोरोना के कारण जब पिछले साल लॉकडाउन की घोषणा हुई तो यातायात अचानक बंद होने से सबसे ज्यादा परेशानी प्रवासी मजदूरों को झेलनी पड़ी थी। मजदूरों के लिए जब खाने की परेशानी हुई तो वह पैदल ही घर को निकल पड़े और सैकड़ों किमी पैदल चलकर किसी तरह अपने घर पहुंचे थे। जिसके बाद फैक्टरी शुरू हुई तो मजदूर काफी मशकत के बाद वापस लौटे थे। लेकिन अब दोबारा से कोरोना के मामले बढ़ने पर सख्ती शुरू हुई तो प्रवासी मजदूरों ने लॉकडाउन के भय से पलायन शुरू कर दिया है। यहाँ कुंडली, राई, नाथपुर औद्योगिक क्षेत्र से करीब तीन हजार मजदूर पलायन कर चुके हैं। वहीं राष्ट्रीय राजमार्ग पर केजीपी-केएमपी गोल चक्कर के पास मजदूरों की लाइन लगी रहती है। बहरहाल, प्रवासी मजदूरों के पलायन से उद्यमियों की परेशानी भी बढ़नी शुरू हो गई है। क्योंकि पहले कोरोना के कारण फैक्टरी बंद रही तो उसके बाद किसान आंदोलन ने परेशानी बढ़ा दी। अब दोबारा से स्थिति सामान्य होती जा रही थी तो अब फिर से मजदूरों ने पलायन शुरू कर दिया। ऐसे में उद्यमियों के लिए मजदूरों का संकट खड़ा हो सकता है और उससे उद्योग प्रभावित होने का डर सताने लगा है।

बहरहाल, इससे फर्क नहीं पड़ता कि मजदूर कोरोना हो जाने के डर से गांव जा रहे हैं या काम बंद होने की आशंका से या मालिक के आदेश पर। वजह चाहे जो भी हो, नतीजा अगर इस रूप में सामने आता है कि कारखाने और कारोबार लेबर की कमी से बैठने लग जाएं तो यह सबके लिए चिंता की बात है। इस बीच कई राज्यों ने वैक्सीन की कमी बताते हुए केंद्र पर भेदभाव का आरोप लगाना शुरू किया है, जिसका जवाब केंद्र की ओर से इस आरोप की शकल में दिया गया कि राज्यों को ऐसे मामले में राजनीति नहीं करनी चाहिए। इस विवाद का इससे बुरा समय नहीं हो सकता। अगर किसी क्षेत्र में

किसी वजह से वैक्सीन की सप्लाई में तात्कालिक कमी आई है तो उसका निदान जरूर किया जाना चाहिए, लेकिन उस पर हाथ-तौबा मचाने या एक दूसरे पर दोषारोपण शुरू करने से आम लोगों में और घबराहट फैलेगी, जिससे नई समस्याएं पैदा होंगी। इस लिहाज से

देखा जाए तो प्रधानमंत्री की यह सलाह उपयुक्त है कि वैक्सिनेशन के साथ टेस्ट, ट्रेस एंड ट्रीट का आजमाया हुआ तरीका अपनाया जाए। इसके साथ ही यह जरूर ध्यान रखा जाना चाहिए कि कोरोना से लड़ाई के क्रम में आर्थिक गतिविधियां बाधित या बंद न की जाएं, उन्हें

लॉकडाउन को ना कहें, सावधानी को हां

कोरोना की दूसरी लहर से जुड़ी डराने वाली खबरों के बीच यह तथ्य कहीं दब गया कि कोरोना का टीका लगाने के मामले में भारत ने नया रेकॉर्ड बनाया है। सोमवार को यहां एक दिन में 43 लाख से ज्यादा टीके

का कहर चरम पर था। जाहिर है, मामला पहली या दूसरी लहरों का नहीं है। बात यह है कि जिस वायरस को काबू में आया हुआ माना जाने लगा था, उसने यह दूसरा ऐसा हमला किया है, जो पहले से भी ज्यादा



खतरनाक है। स्वाभाविक ही सरकारें एक बार फिर अलर्ट मोड में आ रही हैं। राजधानी दिल्ली में नाइट कर्फ्यू की घोषणा कर दी गई है। महाराष्ट्र में पहले ही यह घोषणा की जा चुकी है। कई इलाकों में आंशिक लॉकडाउन लागू किया जा रहा है। कई राज्य बाहर से आने वालों पर तरह-तरह की पाबंदियां लगाने का ऐलान कर रहे हैं। इन सबका मकसद यह बताया जा रहा है कि लोगों के स्तर पर देखी जा रही लापरवाहियों में कमी आए। मगर इन पाबंदियों का कुछ और ही असर हो रहा है। लगभग साल भर की सुस्ती के बाद बिजनेस गतिविधियों में जो तेजी दिखाई दे रही थी, वह दोबारा मंद पड़ने लगी है। गांवों से काम की तलाश में शहर लौटे मजदूरों के भी वापस गांवों का रुख करने के संकेत मिल रहे हैं। इसने कंपनी प्रबंधकों की चिंता बढ़ा दी है। लेबर की कमी उनकी रिवाइवल की योजना पर पानी फेर सकती है। यही नहीं कर्फ्यू और लॉकडाउन जैसे कदम वैक्सिनेशन प्रक्रिया को भी प्रभावित करेंगे। लोगों की चिकित्सा सुविधाओं तक पहुंच को मुश्किल बनाएंगे। इससे लोगों की आजीविका तो संकट में पड़ेगी ही, कोरोना को रोकने के उपाय भी कमजोर होंगे। साफ है कि चुनौती कठिन भले हो, लेकिन जरूरत लॉकडाउन की तरफ बढ़ने की नहीं, टीकाकरण को जितना हो सके बढ़ाने और मार्क लोगों तक मुफ्त पहुंचाने जैसे कदम उठाने की है।

का कहर चरम पर था। जाहिर है, मामला पहली या दूसरी लहरों का नहीं है। बात यह है कि जिस वायरस को काबू में आया हुआ माना जाने लगा था, उसने यह दूसरा ऐसा हमला किया है, जो पहले से भी ज्यादा खतरनाक है। स्वाभाविक ही सरकारें एक बार फिर अलर्ट मोड में आ रही हैं। राजधानी दिल्ली में नाइट कर्फ्यू की घोषणा कर दी गई है। महाराष्ट्र में पहले ही यह घोषणा की जा चुकी है। कई इलाकों में आंशिक लॉकडाउन लागू किया जा रहा है। कई राज्य बाहर से आने वालों पर तरह-तरह की पाबंदियां लगाने का ऐलान कर रहे हैं। इन सबका मकसद यह बताया जा रहा है कि लोगों के स्तर पर देखी जा रही लापरवाहियों में कमी आए। मगर इन पाबंदियों का कुछ और ही असर हो रहा है। लगभग साल भर की सुस्ती के बाद बिजनेस गतिविधियों में जो तेजी दिखाई दे रही थी, वह दोबारा मंद पड़ने लगी है। गांवों से काम की तलाश में शहर लौटे मजदूरों के भी वापस गांवों का रुख करने के संकेत मिल रहे हैं। इसने कंपनी प्रबंधकों की चिंता बढ़ा दी है। लेबर की कमी उनकी रिवाइवल की योजना पर पानी फेर सकती है। यही नहीं कर्फ्यू और लॉकडाउन जैसे कदम वैक्सिनेशन प्रक्रिया को भी प्रभावित करेंगे। लोगों की चिकित्सा सुविधाओं तक पहुंच को मुश्किल बनाएंगे। इससे लोगों की आजीविका तो संकट में पड़ेगी ही, कोरोना को रोकने के उपाय भी कमजोर होंगे। साफ है कि चुनौती कठिन भले हो, लेकिन जरूरत लॉकडाउन की तरफ बढ़ने की नहीं, टीकाकरण को जितना हो सके बढ़ाने और मार्क लोगों तक मुफ्त पहुंचाने जैसे कदम उठाने की है।



चुनौती को अवसर में बदल आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश गढ़ रहे हैं शिवराज सिंह चौहान कोरोना नियंत्रण के लिए सरकार ने लिए त्वरित निर्णय

सदी की सबसे भयंकर प्राकृतिक आपदा-कोरोना महामारी, जिसने समूचे विश्व को हिला कर रख दिया, से जूझना तथा उससे प्रदेश को सफलतापूर्वक न्यूनतम हानि के साथ बाहर

निकाल ले जाना किसी भागीरथ प्रयास से कम नहीं था। कोरोना महामारी ने जन-स्वास्थ्य को तो प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया ही, प्रदेश की अर्थ-व्यवस्था की कमर तोड़ कर रख दी। एक ओर हर नागरिक

को कोरोना से बचाव व उपचार के लिए निःशुल्क एवं उत्कृष्ट चिकित्सा सुविधा देना तथा दूसरी ओर लॉकडाउन से ध्वस्त व्यापार, व्यवसाय एवं सेवा क्षेत्र को नवजीवन देने का कार्य वही व्यक्ति कर सकता है,

जिसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य जनता जनार्दन की सेवा करना हो।

मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने गत एक वर्ष की अल्प अवधि में यह कार्य कर दिखाया है।



उन्होंने गंभीर चुनौती को अवसर में बदला तथा न केवल प्रदेश में कोरोना के संक्रमण को प्रभावी ढंग से रोका, कोरोना पीड़ितों को सर्वश्रेष्ठ इलाज मुहैया कराया, टीकाकरण अभियान का सफल संचालन किया अपितु



मृतप्राय अर्थ-व्यवस्था में नवजीवन का संचार भी किया। कोरोना से जंग में जनता की भागीदारी बढ़ाने में स्वास्थ्य आग्रह सफल रहा मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के इस अभिनव प्रयास को कांग्रेस सहित सभी धर्मगुरुओं और समाज के विभिन्न वर्गों का साथ मिला है। इस दौरान सभी ने कोरोना गाइडलाइन के पालन का संकल्प जताया, वहीं स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को अधिक दुरुस्त करने की मांग भी रखी। इस प्रयास की खास बात यह रही कि आयोजन स्थल राजधानी के मिंटो हाल में भीड़ जुटाने के बजाय इंटरनेट मीडिया के माध्यम से पूरे प्रदेश में कोरोना से बचाव का संदेश पहुंचाया गया। पिछले साल मुख्यमंत्री चौहान ने प्रदेश की सत्ता संभाली थी, तब तक कोरोना राज्य में दस्तक दे चुका था। वह शपथ ग्रहण के तत्काल बाद मंत्रालय पहुंचे और कोरोना को लेकर स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य महकमों की तैयारी का जायजा लेना शुरू किया। मैराथन बैठकों के माध्यम से वह जहां पूरे प्रदेश के चप्पे-चप्पे पर नजर रखते और निर्देश देते, वहीं मौका निकालकर सड़क से लेकर हॉस्टल, आश्रयस्थलों तक जाते और लोगों को जागरूक करने के साथ कोरोना से बचाव के उपायों को देखते।





मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि कोरोना संक्रमण के संबंध में जन-जागृति के लिए आरंभ किए गए स्वास्थ्य आग्रह अभियान को मिले जन-समर्थन से मैं अभिभूत हूँ। यह युद्ध समाज के सहयोग के बिना नहीं लड़ा जा सकता। राज्य शासन हरसंभव व्यवस्थाएँ कर रहा है, पर समाज का सहयोग आवश्यक है। स्वास्थ्य आग्रह अभियान में सभी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक संगठनों, रहवासी संघों, व्यापार संघों, कर्मचारी संगठनों आदि का सहयोग

और समर्थन मिला। कोरोना के विरुद्ध अभियान में जनता को सहभागी बनाने के लिए आरंभ की गई कोरोना वॉलेंटियर योजना में अब तक 34 हजार से अधिक लोगों ने अपना पंजीयन कराया है। प्रदेश की जनता के इस सहयोग से यह स्पष्ट है कि सरकार और समाज साथ-साथ हैं। कोरोना हारेगा और मानवता जीतेगी।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि कोरोना संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए लॉकडाउन अंतिम उपाय है। देश-दुनिया सहित मध्यप्रदेश में भी कोरोना संक्रमण तेजी से फैल रहा है। राज्य सरकार स्थिति पर नजर रखे हुए है, नियंत्रण के हरसंभव प्रयास जारी है। जिलों के आपदा प्रबंधन समूह स्थानीय परिस्थितियों के संबंध में चौकस हैं। आवश्यकता होने पर स्थिति पर नियंत्रण के लिए अंतिम विकल्प के रूप में लॉकडाउन लगाने या बढ़ाने के संबंध में विचार किया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कोरोना के विरुद्ध युद्ध के लिए चार टी - टेस्टिंग, ट्रेसिंग, ट्रैटमेंट और टीकाकरण का मंत्र दिया है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि इसमें एक टी और सम्मिलित करने की आवश्यकता है। वह है टेडेंसी अर्थात हमें कोविड अनुकूल व्यवहार अपनाना होगा। यह आवश्यक है कि सभी व्यक्ति मास्क, सोशल डिस्टेंसिंग, बार-बार हाथ धोने की आदत बना लें। इन सावधानियों को लगातार अपनाना आवश्यक है। यह भाव विकसित करना होगा कि यदि हम ये सावधानियाँ नहीं अपना रहे हैं तो हम कोई पाप या अपराध कर रहे हैं। मेरी सुरक्षा मेरा कवच का भाव सभी व्यक्तियों में होना चाहिए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मध्यप्रदेश को कोरोना के भय और प्रकोप से मुक्त करना है, एम.पी. का अर्थ है मास्क पहनो। हम मास्क पहन कर ही इस भय और कोरोना के प्रकोप से मुक्त हो पाएंगे। मुख्यमंत्री श्री चौहान मिंटो हॉल में महात्मा गांधी की प्रतिमा के पास 6 अप्रैल से आरंभ स्वास्थ्य आग्रह के समापन अवसर पर मीडिया प्रतिनिधियों से संवाद कर रहे थे।

23 मार्च 2020 - यही वह दिन था, जिस दिन श्री शिवराज सिंह चौहान को चौथी बार मध्यप्रदेश की बागडोर मिली। कोरोना महामारी ने प्रदेश में पाँव पसार लिए थे और उसकी रोकथाम एवं उपचार की कोई व्यवस्था नहीं थी। श्री शिवराज सिंह चौहान को इस संकट का मली-भाति अंदेश था। इसीलिए वे शपथ ग्रहण करने के पश्चात सीधे मंत्रालय गए और कोरोना की व्यवस्थाओं के संबंध में बैठक ली। फिर युद्ध स्तर पर कोरोना के संक्रमण को रोकने तथा हर कोरोना पीड़ित को सर्वश्रेष्ठ इलाज देकर स्वस्थ करने का कार्य प्रारंभ हुआ। प्रदेश में आईआईटीटी अर्थात इन्वेस्टिगेट, आईडिफाई, टेस्ट एंड ट्रीट की रणनीति पर प्रभावी ढंग से कार्य किया गया। मुख्यमंत्री श्री चौहान प्रतिदिन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से प्रत्येक जिले के साथ कोरोना की स्थिति एवं व्यवस्थाओं की समीक्षा करते थे और एक-एक गंभीर मरीज के इलाज की स्वयं मॉनिटरिंग करते थे। उनके लिए हर जान कीमती थी, जिसे वे गँवाना नहीं चाहते थे। परिणाम था कोरोना पर प्रभावी नियंत्रण, कोरोना रिकवरी रेट का निरंतर बढ़ना और मृत्यु दर का न्यूनतम होना।



मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के लिए जन-कल्याण सर्वोपरि है। जनता की सेवा ही उनकी पूजा है। उन्होंने मध्यप्रदेश में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को चरितार्थ किया है। मध्यप्रदेश में सबके लिए रोटी, कपड़ा, मकान, पढ़ाई, लिखाई, दवाई और रोजगार के साथ ही जनता को मन, बुद्धि और आत्मा का आनंद भी मिल रहा है। इसके लिए पूरा शासन तंत्र दिन रात कार्य कर रहा है।



धरती की सेहत सुधारने के लिए हर दिन मने पृथ्वी दिवस



“

प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कभी भूकम्प, कभी सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप दिखाकर हमें निरन्तर चेतावनियां देती रही है किन्तु जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक चिंता व्यक्त करने से आगे हम शायद कुछ करना ही नहीं चाहते। पृथ्वी पर बढ़ते दबाव का एक महत्वपूर्ण कारण बेतहाशा जनसंख्या वृद्धि भी है। जहां 20वीं सदी में वैश्विक जनसंख्या करीब 1.7 अरब थी, अब बढ़कर करीब 7.8 अरब हो चुकी है। अब सोचने वाली बात यह है कि धरती का क्षेत्रफल तो उतना ही रहेगा, इसीलिए कई गुना बढ़ी आबादी के रहने और उसकी जरूरतें पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर दोहन किया जा रहा है। इससे पर्यावरण की सेहत पर जो प्रहार हो रहा है, उसी का परिणाम है कि धरती अब धक रही है।

तमाम तरह की सुख-सुविधाएं और संसाधन जुटाने के लिए किए जाने वाले मानवीय क्रियाकलापों के कारण आज पूरी दुनिया ग्लोबल वार्मिंग की भयावह समस्या से त्रस्त है। इसीलिए पर्यावरण संरक्षण को लेकर लोगों में जागरूकता पैदान करने तथा पृथ्वी को बचाने के संकल्प के साथ प्रतिवर्ष 22 अप्रैल को विश्वभर में

दिखाकर हमें निरन्तर चेतावनियां देती रही है किन्तु जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक चिंता व्यक्त करने से आगे हम शायद कुछ करना ही नहीं चाहते। अगर प्रकृति से खिलवाड़ कर पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर हम स्वयं इन समस्याओं का कारण बने हैं और गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर हम वाकई चिंतित हैं तो इन समस्याओं का निवारण भी हमें ही करना होगा ताकि हम प्रकृति के प्रकोप का भाजन होने से बच सकें अन्यथा प्रकृति से जिस बड़े पैमाने पर खिलवाड़ हो रहा है, उसका खामियाजा समस्त मानव जाति को अपने विनाश से चुकाना पड़ेगा। लोगों को पर्यावरण एवं पृथ्वी संरक्षण के लिए जागरूक करने के लिए साल में केवल एक दिन अर्थात् 22 अप्रैल को 'पृथ्वी दिवस' मनाने की औपचारिकता निभाने से कुछ हासिल नहीं होगा। अगर हम वास्तव में पृथ्वी को खुशहाल देखना चाहते हैं तो यही 'पृथ्वी दिवस' प्रतिदिन मनाए जाने की आवश्यकता है। पृथ्वी दिवस पहले प्रतिवर्ष दो बार 21 मार्च तथा 22 अप्रैल को मनाया जाता था लेकिन वर्ष 1970 से यह दिवस 22 अप्रैल को ही मनाया जाना तय किया गया। 21 मार्च को पृथ्वी दिवस केवल उत्तरी गोलार्द्ध के वसंत तथा दक्षिणी गोलार्द्ध के पतझड़ के प्रतीक स्वरूप ही मनाया जाता रहा है। 21 मार्च को मनाए जाने वाले 'पृथ्वी दिवस' को हालांकि संयुक्त राष्ट्र का समर्थन प्राप्त है लेकिन उसका केवल वैज्ञानिक व पर्यावरणीय महत्व ही है जबकि 22 अप्रैल को मनाए जाने वाले 'पृथ्वी दिवस' का पूरी दुनिया में सामाजिक एवं राजनैतिक महत्व है। संयुक्त राष्ट्र में पृथ्वी दिवस को प्रतिवर्ष मार्च एंक्रिनोक्स (वर्ष का वह समय, जब दिन और रात बराबर होते हैं) पर मनाया जाता है और यह दिन प्रायः 21 मार्च ही होता है। इस परम्परा की स्थापना शांति कार्यकर्ता जॉन मकनोनेल द्वारा की गई थी। वैश्विक स्तर पर लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए 22 अप्रैल 1970 को पहली बार पृथ्वी दिवस

वृहद् स्तर पर मनाया गया था। तभी से हर साल 22 अप्रैल को यह दिवस मनाए जाने का निर्णय लिया गया। हालांकि पृथ्वी दिवस को मनाए जाने का वास्तविक लाभ तभी है, जब हम आयोजन को केवल रस्म अदायगी तक ही सीमित न रखें बल्कि धरती की सुरक्षा के लिए इस अवसर पर लिए जाने वाले संकल्पों को पूरा करने हेतु हरसंभव प्रयास भी करें। हमें बखूबी समझ लेना होगा कि अगर पृथ्वी का तापमान साल दर साल इसी प्रकार बढ़ता रहा तो आने वाले वर्षों में हमें इसके बेहद गंभीर परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा। 'प्रदूषण मुक्त सांस' पुस्तक के अनुसार पैट्रोल, डीजल से उत्पन्न होने वाले धुएं ने वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड तथा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है और वातावरण में पहले की अपेक्षा 30 फीसदी ज्यादा कार्बन डाईऑक्साइड मौजूद है, जिसकी जलवायु परिवर्तन में अहम भूमिका है। पेड़-पौधे कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में वन-क्षेत्रों को बड़े पैमाने पर कंक्रिट के जंगलों में तब्दील किया जाता रहा है।

पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। पिछले साल कोरोना महामारी के चलते दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में लगे लॉकडाउन के दौर में थम गई मानवीय गतिविधियों के कारण यह दिवस ऐसे समय में मनाया गया था, जब दुनियाभर के लोगों को पहली बार पृथ्वी को काफी हद तक साफ-सुथरी और प्रदूषण रहित देखने का सुअवसर मिला था। हालांकि कोरोना संकट के चलते लगाए गए लॉकडाउन के कारण पूरी दुनिया को पर्यावरण संरक्षण को लेकर सोचने का बेहतरीन अवसर मिला था, जिससे दुनियाभर के तमाम देश एकजुट होकर ऐसी योजनाओं पर विचार सकें, जिनसे पर्यावरण संरक्षण में अपेक्षित मदद मिल सके लेकिन विडम्बना देखिये कि लॉकडाउन हटते ही धरती की हालत धीरे-धीरे हर जगह पूर्ववत बदतर होती गई।

प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कभी भूकम्प, कभी सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप



हरिद्वार कुंभ 2021



प्रतीकात्मक हरिद्वार कुंभ

प्रधानमंत्री द्वारा हरिद्वार कुंभ को प्रतीकात्मक बनाने की अपील पर साधु-संतों का सकारात्मक प्रतिसाद स्वागतयोग्य है। इसके बाद नागा संन्यासियों के सबसे बड़े पंचदशनाम जूना अखाड़ा ने शनिवार को कुंभ विसर्जन की घोषणा कर दी। साथ ही जूना अखाड़े के सहयोगी अग्नि, आह्वान व किन्नर अखाड़ा भी इसमें शामिल हुए। इससे पहले श्री निरंजनी अखाड़ा और श्री आनन्द अखाड़ा भी कुंभ विसर्जन की घोषणा कर चुके हैं। हालांकि, आधिकारिक रूप से एक अप्रैल को शुरू हुआ कुंभ मेले का आयोजन तीस अप्रैल तक होना था, लेकिन कोरोना की दूसरी भयावह लहर के चलते यह निर्णय निश्चित रूप से स्वागतयोग्य कदम है। बेहतर होता कि देश में संक्रमण की स्थिति को देखते हुए 14 अप्रैल के मुख्य स्नान के बाद ही ऐसी रचनात्मक पहल की गई होती। मुख्य स्नान पर आई खबर ने पूरे देश को चौंकाया था कि चौदह लाख लोगों ने कुंभ में डुबकी लगायी। निस्संदेह कुंभ सदियों से करोड़ों भारतीयों की आस्था का पर्व रहा है। यह समाज की आस्था का पर्व है, अतः समाज की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। समाज से ही आस्था है और कुंभ भी है। आस्था ही वजह है कि देश के कोने-कोने से करोड़ों लोग बिना किसी बुलावे के गंगा के तट पर डुबकी

लगाने पहुंच जाते हैं। निस्संदेह मनुष्य से ही धर्म और संत समाज का अस्तित्व है। सही मायनों में आपदा के



वक्त धर्म के निहितार्थ बदल जाते हैं। यही धर्म का सार भी है; जिसका लक्ष्य लोक का कल्याण है, जिसकी फिर्त संत समाज को भी करनी चाहिए। यही वजह है कि कुंभ को टालने और मानवता धर्म का पालन करने का आग्रह राजसत्ता की तरफ से किया गया। देश में बड़ी विकट स्थिति है। हमारा चिकित्सातंत्र पहले ही सांसें गिन रहा है। अस्पतालों में बिस्तर, चिकित्सा सुविधाओं, आवसीजन की कमी देखी जा रही है। ऐसे में इस संकट को विस्तार देने वाले हर कार्य से बचना

हमारा धर्म ही है, जिसका सरल व सहज उपाय शारीरिक दूरी को बनाये रखना है। ऐसा करके भी हम कुंभ की सनातन परंपरा का ही निर्वहन कर सकते हैं। इसे अब भी प्रतीकात्मक रूप से मनाकर संत समाज आपातकाल के धर्म का पालन कर सकता है। इस समय लाखों लोगों का जीवन बचाना ही सच्चा धर्म है। जब देश दुखी है तो कोई भी धार्मिक आयोजन अपनी प्रासंगिकता खो देगा। अतीत में भी मानवता की रक्षा के

लिये कुंभ के आयोजन का स्थगन हुआ है। वर्ष 1891 में हरिद्वार कुंभ में हैजा-कॉलरा फैलने के बाद मेला स्थगित किया गया। वर्ष 1897 में अर्धकुंभ के दौरान प्लेग फैलने पर मेला स्थगित किया गया था। यही आपातकाल का धर्म ही है कि मानवता की रक्षा की जाये। वक्त का धर्म है कि कुंभ को टाला जाये अथवा प्रतीकात्मक रूप में आगे के पर्वों का निर्वाह किया जाये। यह मुश्किल समय विवेकपूर्ण फैसले लेने की मांग करता है।

एंटीलिया केस में 3 किरदार, फंसी सरकार?



भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों से घिरे एनसीपी नेता अनिल देशमुख ने आखिरकार महाराष्ट्र के गृहमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। जैसा कि ऐसे मामलों में अक्सर होता है, पद पर बने रहने का नैतिक अधिकार खो देने का अहसास उन्हें तब हुआ, जब वसूली के आरोपों की सीबीआई जांच कराने का हाईकोर्ट का फैसला आने के बाद उनके सामने कोई और रास्ता नहीं रह गया। यों तो पूर्व मुंबई पुलिस

खारिज कर दी। जाहिर है, ऐसे में शिवसेना और कांग्रेस के इस्तीफे पर जोर देने का मतलब था एमवीए सरकार का गिरना। सो किसी ने जोर नहीं दिया, देशमुख पद पर बने रहे। सोमवार को हाईकोर्ट के फैसले ने आखिर उन्हें बाहर का रास्ता दिखाया। उनकी जगह दिलीप वलसे पाटिल गृहमंत्री बना दिए गए। इससे कम से कम ऊपरी तौर पर ऐसा लगता है कि मौजूदा सरकार पर मंडरा रहा संकट फिलहाल टल

अपना संतुलन बनाए रखने की वजह से सरकार की स्थिरता पर तत्काल कोई खतरा नहीं दिख रहा है। लेकिन जब से यह सरकार बनी है, तभी से इसे असहज राजनीतिक गठजोड़ बताया जा रहा है। सच भी यही है कि पारंपरिक तौर पर कांग्रेस और एनसीपी भले मिलकर सरकार बनाती रही हों, शिवसेना हमेशा इनके विरोधी खेमे में रही है। उसका गठबंधन बीजेपी से रहता आया था। हिंदुत्व दोनों की राजनीति का समान आधार रहा है। जब इस समान आधार के बावजूद दोनों का साथ रहना संभव नहीं हुआ तो महाराष्ट्र में नया राजनीतिक प्रयोग हुआ और उद्धव सरकार बनी। इस प्रयोग की सफलता-असफलता अन्य राज्यों में भी संभावित राजनीतिक गोलबंदी को प्रभावित करेगी, लेकिन अभी तो सबसे बड़ा सवाल गवर्नेंस का है। राजनीतिक प्रयोग की नाकामी या कामयाबी तो तब देखी जाएगी, जब सरकार नियम-कानून और शासन-प्रशासन की न्यूनतम मर्यादा बनाए रख पाएगी। अभी तो इसी पर सवालिया निशान लगा हुआ है।



कमिश्नर परमबीर सिंह के सार्वजनिक तौर पर आरोप लगाने के तुरंत बाद एनसीपी के सर्वोच्च नेता शरद पवार ने भी इसे गंभीर माना था, लेकिन उन्होंने इस्तीफा मांगने या न मांगने का सवाल मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के विवेक पर छोड़ दिया था। तब एनसीपी के अन्य नेता अड़ गए कि देशमुख किसी भी सूरत में इस्तीफा नहीं देंगे। बाद में पवार ने भी देशमुख के कोरोना संक्रमण, हॉस्पिटल में इलाज और आइसोलेशन जैसे तथ्यों के सहारे इस्तीफे की मांग

गया है। लेकिन आरोप आज भी बरकरार हैं। देखना होगा कि सीबीआई जांच से किस तरह के तथ्य बाहर आते हैं और उनका सरकार की स्थिरता पर क्या असर पड़ता है। वैसे उद्धव सरकार से यह पहला इस्तीफा नहीं है। इससे पहले एक टिकटॉक स्टार पूजा चव्हाण की आत्महत्या के बाद विवादों में आए शिवसेना के संजय राठौड़ को वनमंत्री पद छोड़ना पड़ा था। इन विवादों ने मुख्य विपक्षी दल बीजेपी के हमलावर तेवर को धार जरूर दी है, लेकिन राजनीतिक तौर पर

मुकेश अंबानी के घर के बाहर मिली संदिग्ध कार और सचिन वाजे मामले ने अब ऐसा राजनितिक मोड़ लिया है कि महाराष्ट्र की सियासी हलचल तेज हो गई है। महाराष्ट्र के गृहमंत्री अनिल देशमुख ने इस्तीफा दे दिया है पर मुंबई के पूर्व पुलिस कमिश्नर परमबीर सिंह द्वारा लगाए गए सनसनीखेज आरोपों से महाराष्ट्र सरकार के सामने मुश्किल की घड़ी खड़ी हो गई है। अनिल देशमुख पर लगे आरोपों ने सबसे अधिक एनसीपी प्रमुख शरद पवार को मुश्किल स्थिति में ला खड़ा किया है। राज्य में महाराष्ट्र विकास अघाड़ी का शरद पवार को प्रमुख आर्किटेक्ट माना जाता है। शरद पवार ही थे, जिन्होंने तीन अलग-अलग पार्टियों (शिवसेना, कांग्रेस और एनसीपी) को एक बैनर तले लाने में बड़ी भूमिका निभाई।



देश की राजनीति की दिशा तय करेंगे चुनाव परिणाम

दे श में चार राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। जहां पुडुचेरी, केरल और तमिलनाडु में 6 अप्रैल को एक ही चरण में चुनाव होंगे वहीं पश्चिम बंगाल में आठ चरणों तो असम में तीन चरणों में चुनावों का आयोजन आयोग द्वारा किया गया है। भारत केवल भौगोलिक दृष्टि से एक विशाल देश नहीं है अपितु सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से भी वो अपार विविधता को अपने भीतर समेटे है। एक ओर खान पान, बोली, मजहबी एवं धार्मिक मान्यताओं की यह विविधता इस देश को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध तथा खूबसूरत बनाती है तो दूसरी ओर यही विविधता इस देश की राजनीति को जटिल और पेचीदा भी बनाती है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में देश की राजनीति की दिशा में धीरे-धीरे किंतु स्पष्ट बदलाव देखने को मिल रहा है।

तुष्टिकरण की राजनीति को सबका साथ सबका विकास और वोटबैंक की राजनीति को विकास की राजनीति चुनौती दे रही है। यही कारण है कि इन पाँच राज्यों के चुनाव परिणाम देश की राजनीति की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सिद्ध होंगे। इतिहास में अगर पीछे मुड़कर देखें तो आजादी के बाद देश के सामने कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी के अलावा राष्ट्रीय स्तर पर कोई और विकल्प मौजूद नहीं था। धीरे-धीरे क्षेत्रीय दल बनने लगे जो धीरे-धीरे अपने अपने क्षेत्रों में मजबूत होते गए। लेकिन ये दल क्षेत्रीय ही बने रहे, अपने-अपने क्षेत्रों से आगे बढ़कर राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस का विकल्प बनने में कामयाब नहीं हो पाए। लेकिन इसका दूसरा पहलू यह भी रहा कि समय के साथ ये दल अपने अपने क्षेत्रों में कांग्रेस का मजबूत विकल्प बनने में अवश्य कामयाब हो गए। आज स्थिति यह है कि विधानसभा चुनावों में कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय स्तर की पार्टी इन क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन करके चुनाव लड़ कर अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है।

वहीं आम चुनावों में कांग्रेस की स्थिति का आकलन इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि वो लगातार दो बार से अपने इतने प्रतिनिधियों को भी लोकसभा में नहीं पहुंचा पा रही कि सदन को नेता प्रतिपक्ष दे पाए। उसे चुनौती मिल रही

है एक ऐसी पार्टी से जो अपनी उत्पत्ति के समय से ही तथाकथित सेक्युलर सोच वाले दलों ही नहीं वोटों के लिए भी राजनैतिक रूप से अछूत बनी रही। 1980 में अपनी स्थापना, 1984 के आम चुनावों में में मात्र दो सीटों पर विजय, फिर 1999 में एक वोट से सरकार गिरने से लेकर

में शामिल करना, डॉ. भूपेंद्र हजारिका सेतु, बोगिबिल ब्रिज, सरायघाट ब्रिज जैसे निर्माणों से असम को नार्थ ईस्ट के अलग-अलग हिस्सों से जोड़ना। कालीबाड़ी घाट से जोहराट का पुल और धुबरी से मेघालय में फुलबारी तक पुल जो असम और मेघालय की सड़क मार्ग की करीब ढाई सौ किमी

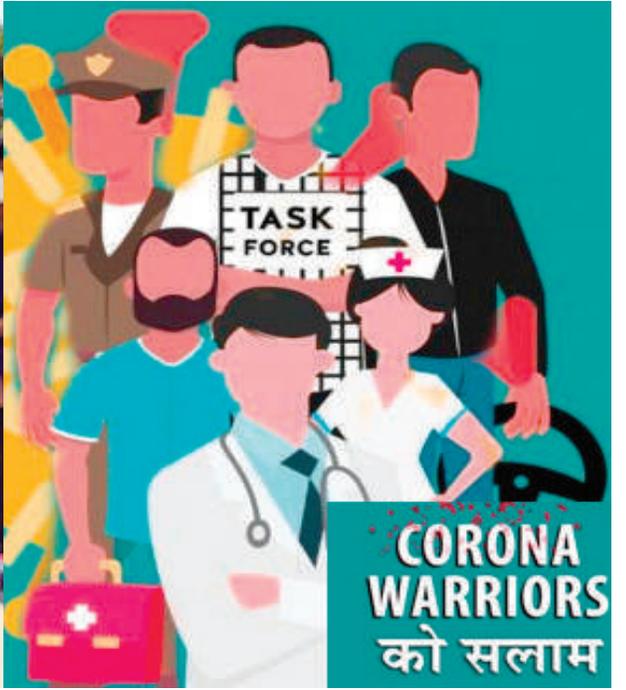


Symbolic Image

2019 लोकसभा चुनावों में 303 सीटों तक का सफर तय करने में बीजेपी ने जितना लम्बा सफर तय किया है उससे कहीं अधिक लम्बी रेखा अन्य दलों के लिए खींच दी है। क्योंकि आज वो पूर्ण बहुमत के साथ केवल केंद्र तक सीमित नहीं है बल्कि लगभग 17 राज्यों में उसकी सरकारें हैं। वो दल जो केवल हिंदी भाषी राज्यों तक सीमित था आज वो असम में अपनी सरकार बचाने के लिए मैदान में है तथा केरल, तमिलनाडु और पुडुचेरी जैसे राज्यों में अपनी जड़ें जमा रहा है तो पश्चिम बंगाल में सत्ता का प्रमुख दावेदार बनकर उभरा है।

असम की अगर बात करें तो घुसपैठ से परेशान स्थानीय लोगों की वर्षों से लंबित एनआरसी की मांग को लागू करना, बोडोलैंड समझौता, बोडो को असम की ऑफिशियल भाषा

की वर्तमान दूरी को मात्र 19 से 20 किमी तक कर देगा। बंगाल की बात करें तो यहाँ लगभग 34 वर्षों तक शासन करने वाली लेफ्ट और 20 वर्षों तक शासन करने वाली कांग्रेस दोनों ही रिस से बाहर हैं। विगत दो बार से सत्ता पर काबिज तृणमूल का एकमात्र मुख्य मुकाबला भाजपा से है। उस भाजपा से जिसका 2011 के विधानसभा चुनावों में खाता भी नहीं खुला था। इससे भी दिलचस्प बात यह है कि जिस हिंसा और भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाकर ममता बनर्जी ने वाम का 34 साल पुराना किला ढहाया था आज उनकी सरकार के खिलाफ भाजपा ने उसी हिंसा और भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाया है। केरल की अगर बात करें तो यहाँ लेफ्ट और कांग्रेस आमने सामने हैं, यह अलग बात है कि अन्य राज्यों में लेफ्ट उसकी सहयोगी होती है।



कोरोना के कर्मवीर

हिम्मत से जांबाज लड़ रहे कोरोना से जंग; डॉक्टरों से लेकर, सफाई और पुलिस कर्मचारी दिन-रात काम पर लगे

“

● टीम गूँज न्यूज नेटवर्क

कोरोना वायरस के डर जब लोग घरों से निकलने की हिम्मत नहीं जुटा पाते, तब ऐसे भी जांबाज हैं जो बिना भय के सदिग्धों और मरीजों की सेवा करने में जुटे हैं। इनमें डॉक्टर, सफाई कर्मचारी और पुलिस के जवान सबसे आगे हैं। कोरोना वायरस से निपटने में इनमें से किसी की भी भूमिका को कमतर नहीं आंका जा सकता। जिंदगियां बचाने के लिए ये जांबाज दिनरात काम पर लगे हुए हैं। कई बार ऐसी भी स्थिति आ जाती है जब ये जांबाज संक्रमित के सीधे संपर्क में आ जाते हैं। इसके बावजूद उनका न तो हौसला डिगा है और न ही बेहतर करने में कोई कमी आई है। ये सेना के जवानों की तरह सलामी के हकदार हैं।

को रोना वायरस से जनता को बचाने के लिए पुलिस, नगर निगम के कर्मचारी, पत्रकार और डॉक्टर लोगों की सेवा में जुट गए। यह कर्मचारी लोगों की

सेवा में रहकर अपना घर बार भूल गए हैं यह अपने बच्चों के बुलाने पर भी घर नहीं जाते इसमें एक स्वार्थ भी इसका भी छुपा है कि कहीं यह अपने घर वालों तक यह बीमारी ना पहुंचा दे, कहीं इनके घर वाले संक्रमित ना हो जाएँ। कोरोनावायरस से फैलने वाली बीमारी कोविड-19 के बारे में आज सारा विश्व जानता है यह संक्रमक बीमारी इतनी तेजी से फैली पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया इस वजह से डब्ल्यूएचओ ने इसे महामारी का नाम दिया नए तरह के विषाणु से फैलने वाली बीमारी के बारे में कोई नहीं जानता था इसलिए जल्दी से इसका इलाज नहीं मिल पा रहा था बहुत से लोग इसकी चपेट में आकर अपनी जान गवां चुके थे, और बहुत से लोग मौत के मुँह में झूल रहे थे अस्पतालों में पैर रखने की जगह ना थी अचानक इतना बड़ा संकट आने पर सभी देशों ने लॉकडाउन यानी

तालाबंदी की घोषणा कर दी
पुलिस कोरोना कर्मवीर के रूप में



लॉकडाउन कर्फ्यू जैसी स्थिति होती है जिसमें आप अपने घर से बाहर नहीं निकल सकते आप जहाँ हैं और जिस हालात में है आपको वही रहना पड़ता है आप स्वच्छंद रूप से विचरण नहीं कर सकते ऐसे में पुलिस कर्मियों की भूमिका सामने आई सरकार ने पुलिस को यह जिम्मेदारी सौंपी कि लोग कहीं पर भीड़ भाड़ ना करें इसके लिए पुलिस को बहुत सख्त रख अपना पड़ा। कई बार तो लोगों की पिटाई भी करनी पड़ी। जिसका लोगों ने विरोध किया और पुलिस कर्मचारियों को भला बुरा भी कहा सोशल मीडिया पर भी उनकी निंदा की गयी आपने कभी सोचा, क्या उन पुलिसवालों की आपसे कोई निजी दुश्मनी है, जो वह ऐसा कर रहे हैं ? यह सब जनता की भलाई के लिए ही किया जा रहा था ताकि बीमारी और अधिक ना फैले।



मरीजों के लिए देवदूत बने डॉक्टर्स

कोरोना वायरस से जब जीत जाना तो इनको मत भूल जाना!

● टीम गूज न्यूज नेटवर्क

को रोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए देशभर में कई राज्यों में सख्ती भरा लॉकडाउन लगाया गया है लगाए गए लॉकडाउन के चलते जहाँ लोग अपने परिवार के साथ घरों में बैठे हैं, वहीं कुछ लोग पूरी ताकत के साथ अपनी ड्यूटी निभा रहे हैं। संकट की इस घड़ी में मरीजों के लिए देवदूत बनकर डॉक्टर काम कर रहे हैं जिससे यह साबित हो गई है कि वाकई डॉक्टर भगवान का रूप होते हैं कोरोना के विकराल संकट से निपटने के लिए अपनी जान की परवाह किए बगैर दिन रात मरीजों की सेवा में समर्पण भाव से कार्य कर रहे हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सक, स्वास्थ्यकर्मी, एनएम्, सहिया और आंगनबाड़ी सेविकाएं कर्मवीर योद्धा की तरह लड़ रहे हैं। कोरोना वायरस से जंग जीतने के लिए स्वास्थ्यकर्मियों ने कर्मवीर योद्धा की तरह रात दिन लगे हुए हैं। स्वास्थ्यकर्मियों के अनुसार लोगों की स्क्रीनिंग से लेकर उनकी देखभाल जक की जा रही है। लोगों को जागरूक करते हुए सोशल डिस्टेंस बनाने के लिए सलाह भी देने में जुटे हैं।

लॉकडाउन का असर समाज में जी रहे हर तबके पर पड़ा है। लेकिन समाज में कुछ लोग ऐसे हैं जिनका एहसान है भारतवासियों पर और भारत सरकार पर। उनका कर्ज अदा करना भी मुश्किल है। कोरोना वायरस से तो हम जीत जाएंगे बेशक जीत जाएंगे, लेकिन समाज में जी रहे इन मसीहाओं को कभी नहीं भूला जाना चाहिए। जब तक यह लोग हैं तब तक हमारा समाज कितना खूबसूरत है इसका अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता है। आइये देखते हैं कौन-कौन लोग हैं जिनका हर भारतवासी के ऊपर एहसान है।

राशन वितरित करने वाले लोग

भारत सरकार ने जब लॉकडाउन का ऐलान किया तो दिहाड़ी मजदूर एवं गरीब तबका बेहद चिंतित हो उठा कि वह कैसे इतने दिनों तक बिना किसी आमदनी के गुज़ारा करेगा। सरकार ने राहत पैकेज का ऐलान तो बाद में किया. उससे पहले ही हर जिले और हर कस्बे से राशन एवं राहत सामग्री बाँटने की तस्वीरें आने लगी. चर्चा सबकी होती है लेकिन इन लोगों की चर्चा गायब है जो बिना किसी फायदे के समाज में रह रहे लोगों की मदद को आगे आए. ऐसे लोगों का एहसान कभी भी चुकता नहीं किया जा सकता जिन लोगों ने भुखमरी से

कोई जान नहीं जाने दी. अगर ऐसे लोग सामने न आते तो स्थिति बेहद भयावह होती और भुखमरी की खबरें सुर्खियां बनती.

सुरक्षा संबन्धी उपकरण तैयार करने वाले लोग

भारत में स्वास्थ्य विभाग के लोगों के लिए सुरक्षा



उपकरण की काफी कमी थी. मगर भारत के अलग अलग हिस्सों से कुछ ऐसे नागरिक भी सामने आए जिन लोगों ने खुद से मास्क और सेनेटाइज़र तैयार किए और प्रशासन को मुहैया कराया. यह एक छोटी मदद जरूर हो सकती है लेकिन इस मुश्किल घड़ी में उनका यह कार्य भारत के लोगों पर एहसान ही है.

बैंककर्मी

भारत के किसी भी नागरिक को किसी भी तरह से परेशानी न होने पाए पैसे की तंगी न हो इसके लिए बैंक वालों ने ऐसे मुश्किल वक्त में भी अपनी ड्यूटी निभाई, इनके योगदान को भी नहीं भूलना चाहिए.

सफाईकर्मी

लॉकडाउन में जब सब अपने अपने घरों में हैं तो भी सफाईकर्मी अपनी ड्यूटी करते नज़र आ रहे हैं, उनके पास सुरक्षा के उपकरण भी उपलब्ध नहीं हैं मगर वह लोग भारत के हर शहर की हर गली-मोहल्लों को सेनेटाइज़ करते नज़र आ रहे हैं. उनकी जान को खतरा भी हो सकता है

लेकिन वह भारत के लोगों के लिए जान जोखिम में डाले छिड़काव कर रहे हैं.

पुलिस प्रशासन

पुलिस विभाग हमेशा से लोगों की नज़र में बुरा ही रहा है खूब धब्बे भी उछाले जाते हैं. लेकिन कोरोना वायरस से जंग में पुलिस महकमा का जो कार्य है उसे शब्दों में बयान करना बेहद मुश्किल है. कोरोना से युद्ध में पुलिस प्रशासन का योगदान बेहद महत्वपूर्ण है. पुलिस जिस लगन और मेहनत से कार्य कर रही है उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम ही है.

स्वास्थ्य विभाग

स्वास्थ्य महकमों का छोटे से लेकर बड़ा कर्मचारी इस संकट की स्थिति में जिस तरह से लड़ रहा है और अपनी जान को खतरे में डाल कर भारतवासियों की सेवा कर रहा है, उसके इस एहसान को जीवन भर नहीं चुकाया जा सकता है. यही वह योद्धा हैं जिनकी भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है. इनका एहसान भारत के प्रत्येक नागरिक पर जीवन भर रहेगा.

राज्य सरकार एवं मीडिया

भारत सरकार के साथ-साथ राज्य की सरकारों का कार्य इस वक्त बेहद अहम है उचित समय पर उचित फैसला लेना और उसे मीडिया के माध्यम से घर घर तक पहुँचाना और हर एक नागरिक को वायरस से बचने की जानकारी पहुँचाने का कार्य भी एक बहुत बड़ा कार्य है. कोरोना वायरस से लड़ने में हर किसी क्षेत्र की अपनी अपनी भूमिका है. कोरोना वायरस से से लड़ने में इन सभी का योगदान अहम है और यह दर्शाता है कि पूरा भारत कैसे इस लड़ाई में एक साथ है. हर भारतवासी को यकीन है कि भारत जल्दी ही इस कोरोना वायरस को मात दे देगा, और भारत का हर नागरिक पर इन योद्धाओं का एहसान होगा. भारत का हर नागरिक इन योद्धाओं को सलाम करता है.





कोरोना से बचाव व जागरूकता अभियान अधिकारी उतरे मैदान में

ग्वालियर में कोरोना से बचाव हेतु वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं आमजनों ने मास्क लगाकर एवं सोशल डिस्टेंसिंग के साथ मानव श्रृंखला बनाई। अवसर प्रशासनिक अधिकारियों ने महाराज बाड़े पर बिना मास्क के घूम रहे लोगों को मास्क वितरित किये। साथ ही उन्हें समझाया कि कोरोना से बचाव के लिए मास्क लगाना नितांत जरूरी है। महाराज बाड़े की दुकानों के सामने अधिकारियों द्वारा गोल घेरे भी बनवाये गए।

● टीम गूज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर शहर में कोविड-19 से बचाव के लिये चलाए जा रहे जन जागरूकता अभियान में संभागीय अधिकारियों को भी प्रतिदिन सुबह शाम शहर के प्रमुख स्थानों पर जन जागृति के लिये उपस्थित रहकर आमजन को कोरोना के प्रति जागरूकता अभियान में हिस्सा लेंगे। शहरी क्षेत्र में अनुविभागीय अधिकारी राजस्व के नेतृत्व में उनके अनुभाग क्षेत्र में जन जागृति अभियान चलाया जायेगा एवं जागृति का कार्य करने तथा निशुल्क मास्क वितरण भी किया जाएगा। संभागीय आयुक्त आशीष सक्सेना, कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, पुलिस अधीक्षक अमित सांघी, नगर निगम आयुक्त शिवम वर्मा सहित कई अधिकारियों ने आमजन को कोरोना के प्रति जागरूक किया।



बिना मास्क घर से ना निकलें

संभागीय कमिश्नर श्री आशीष सक्सेना एवं पुलिस महानिरीक्षक अविनाश शर्मा कोरोना गाइडलाइन का पालन कराने के लिये शहर के विभिन्न बाजारों में पहुँचे। उनके साथ पुलिस अधीक्षक श्री अमित सांघी, अपर जिला दण्डाधिकारी रिकेश वैश्य व टी एन सिंह तथा शहर के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षकगण सहित अन्य संबंधित अधिकारी भी कोरोना गाइडलाइन का पालन कराने शहर भ्रमण पर निकले थे।

शहर भ्रमण के दौरान कमिश्नर एवं आईजी ने बस स्टैण्ड पर पहुँचकर सभी

बस चालकों व परिचालकों तथा ऑटो व टेम्पो चालकों से कहा कि बगैर मास्क के



किसी भी यात्री को अपने वाहन में कदापि न बिठाएँ। उन्होंने यात्रियों को भी समझाया कि कोरोना तेजी से फैल रहा है, इसलिए सभी लोग मास्क लगाकर ही अपनी यात्रा करें।

कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा

कई अर्थशास्त्री और किसान संगठन बिल के समर्थन में



केंद्र सरकार के प्रयासों से किसानी के क्षेत्र में उमंग पैदा हो रही है: तोमर

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण विकास, पंचायत राज तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा है कि शहद (मीठी) क्रांति देशभर में तेजी से अग्रसर होगी। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र को आगे बढ़ाने व किसानों की आय वृद्धि के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार पूरी शिद्दत के साथ काम कर रही है। केंद्र सरकार के प्रयासों से आज पूरे देश में किसान व किसानों के क्षेत्र में एक अलग प्रकार की उमंग पैदा हो रही है। प्रधानमंत्री जी के मन में किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की चिंता है, इसीलिए सरकार अनेक योजनाओं पर काम कर रही है। केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने यह बात बुधवार को कृषि भवन, नई दिल्ली में मधुक्रांति पोर्टल व हनी कॉर्नर सहित शहद परियोजनाओं का शुभारंभ करते हुए कही। श्री तोमर ने कहा कि शहद का उत्पादन बढ़ाकर निर्यात में वृद्धि की जा सकती है, रोजगार बढ़ाए जा सकते हैं, वहीं गरीबी उन्मूलन की दिशा में भी बेहतर काम किया जा सकता है। मधुमक्खीपालन, मत्स्यपालन व पशुपालन के माध्यम से हम भूमिहीन किसानों को गांवों में ही अच्छा जीवन जीने का साधन दे सकते हैं। शहद उत्पादन के लिए एक तरह से प्रतिस्पर्धा होना चाहिए। नाफेड ने शहद की मार्केटिंग की कमान संभाली, यह शुभ संकेत है। इसके माध्यम से दूरदराज के मधुमक्खीपालकों को अच्छा मार्केट मिलना चाहिए। देश में उत्पादन क्षमता से अधिक संभव है, पर क्वालिटी पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। मधुमक्खीपालन संबंधी गतिविधियों को बढ़ावा देते हुए सरकार की विभिन्न पहलें मधुमक्खीपालन का कार्यालय करने में मदद कर रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक वर्ष लगभग 1.20 लाख टन शहद का उत्पादन देश के ग्रामीण इलाकों में विशेष रूप से किया जा रहा है। इसका लगभग 50 प्रतिशत निर्यात किया जाता है। शहद व संबंधित उत्पादों का निर्यात बढ़कर करीब दोगुना हो चुका है। श्री तोमर ने कहा कि मधुक्रांति पोर्टल के माध्यम से पारदर्शिता आएगी। हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह वैश्विक मानकों पर खरा उतरना चाहिए। मंत्रालय ने पिछले कुछ समय में मापदंड बनाए हैं, जिससे स्थिति में काफी सुधार आया है। उन्होंने कहा कि कृषक उत्पादक संगठन (एफपीओ) में छोटे मधुमक्खीपालकों को शामिल करने के लिए जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है, साथ ही उन्हें ट्रेनिंग देने का कार्यक्रम भी बनाया जाए।

● गूज न्यूज नेटवर्क

कें केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने एक बार फिर किसान संगठनों से बातचीत के संकेत दिए हैं। नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि कुछ किसान किसान कृषि बिलों का विरोध कर रहे हैं। जबकि कई किसान संगठन और अर्थशास्त्री तीनों बिलों का समर्थन कर रहे हैं। किसान संगठनों के साथ अब तक 11 दौर की बातचीत हो चुकी है। सरकार और बातचीत के लिए तैयार है। किसान संगठनों से आंदोलन रोकने का आग्रह करते हुए तोमर ने कहा कि इन नए बिलों को लेकर देश के किसानों में कोई असंतोष नहीं है। सरकार उन किसान संगठनों से बात करने के लिए तैयार है

जो इन बिलों के खिलाफ हैं। बताते चलें कि सुप्रीम कोर्ट ने तीन नए विवादास्पद कृषि कानूनों का अध्ययन करने के लिए एक समिति का गठन किया था। इस समिति ने 19 मार्च को सीलबंद लिफाफे में सुप्रीम कोर्ट को अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने 11 जनवरी को इन तीनों कानूनों को अगले आदेश तक लागू करने पर रोक लगा दी थी और गतिरोध को हल करने के लिए चार सदस्यीय समिति नियुक्त की थी। गौरतलब है कि दिल्ली एनसीआर के बॉर्डर पर कई किसान संगठन आंदोलन कर रहे हैं। वहीं, किसान नेता देश के दूसरे हिस्सों में जाकर भी इन कानूनों के खिलाफ पंचायत सभाएं कर रहे हैं। विरोध कर रहे किसान नए कृषि कानून को रद्द करने की मांग पर अड़े हुए हैं।



कोरोना के बीच आईपीएल का तड़का

“

इंडियन प्रीमियर लीग यानी आईपीएल अपने 13 साल लंबे सफर में परिपक्वता हासिल करने में सफल रही है। इस दौरान टीमों की सोच में बदलाव आया। 2008 में जब यह लीग शुरू हुई थी, तब सबने ऐसे लोगों को कप्तान बनाया, जिनके पास अच्छा अनुभव था। आईपीएल के पहले संस्करण में एमएस धोनी, एडम गिलक्रिस्ट, शेन वॉर्न, वीरेंद्र सहवाग, सचिन तेंडुलकर, राहुल द्रविड़, सौरव गांगुली और युवराज सिंह को कप्तानी सौंपी गई। लेकिन रोहित शर्मा 2013 में मुंबई इंडियंस के कप्तान बने और उन्होंने अपनी टीम को जबर्दस्त सफलता दिलाई। इसके बाद से फ्रेंचाइजियों ने अनुभव के बजाय सक्षम युवा कप्तानों को कप्तान सौंपने का सिलसिला शुरू कर दिया।

इ

इस साल कोरोना और लॉकडाउन के बीच आईपीएल हो रहा है कई कोरोना गाइडलाईन के हिसाब से सभी मैच कराए जा रहे हैं दर्शकों को स्टेडियम में मैच देखने की परमिशन नहीं है सिर्फ टीवी पर दर्शक आईपीएल का मजा ले रहे हैं। नौ अप्रैल से शुरू होने वाले आईपीएल के 14वें सत्र में दिल्ली कैपिटल्स ने ऋषभ पंत को और राजस्थान रॉयल्स ने संजू सैमसन को नेतृत्व सौंपा है। पंजाब किंग्स का नेतृत्व पहले ही युवा खिलाड़ी केएल राहुल संभाले हुए हैं। आईपीएल के दशक से ज्यादा लंबे सफर के बाद अब टीमों इस बात को अच्छे से जानती हैं कि उनकी जरूरत क्या है। वे नीलामी में अपनी जरूरत के मुताबिक खिलाड़ियों को लेने का प्रयास करती हैं। इसलिए नीलामी के समय बड़े नामों के पीछे दौड़ने के बजाय टीमों उपयुक्त खिलाड़ियों के पीछे जाती हैं। इसके अलावा ज्यादातर टीमों का जोर अब तेज-तर्रार युवा खिलाड़ियों को लेने पर है। यही वजह है कि स्टीव स्मिथ और हरभजन सिंह जैसे दिग्गज क्रिकेटर बेस प्राइज पर खरीदे जा रहे हैं। यानी ऐसे खिलाड़ियों का टीमों में महत्व कम हुआ है। पिछले साल संयुक्त अरब अमीरात में हुए आईपीएल मुकामलों में बल्लेबाजों के प्रदर्शन पर नजर डालें तो युवा खिलाड़ी के रूप में केएल राहुल (670), श्रेयस अय्यर (519), ईशान किशन (516) और देवदत्त पडिक्कल (473) सबसे ऊपर हैं। ये सभी अभी टीम इंडिया में जगह बनाने या जगह पकड़ी करने के प्रयास में हैं। पिछली बार की तरह ही इस बार भी टीमों का फोकस यंग ब्रिगेड पर रहने वाला है। इन सालों में

इतना जरूर हुआ है कि सभी टीमों काफी सशक्त हो गई हैं। इसलिए पहले से यह कहना मुश्किल है कि कौन सी टीम धमाल मचाएगी। कई सालों से खिलाड़ी विशेष पर भरोसा

है। इतना ही नहीं, यह बीसीसीआई की कमाई का भी प्रमुख स्रोत है। इससे बीसीसीआई हर साल लगभग 5000 करोड़ रुपये कमाती है। मतलब यह कि आईपीएल में प्रति मैच 80



करोड़ रुपये के करीब राजस्व मिलता है। इस मामले में वह अमेरिका की एनएफएल, इंग्लिश प्रीमियर लीग और ला लिगा से ही पीछे दिखती है। लेकिन ये लीगों साल में ज्यादातर समय चलती रहती हैं। इनके मैचों की संख्या काफी ज्यादा है। वहीं, क्रिकेट की लीग को लंबे समय

करने वाली मुंबई इंडियंस जैसी टीमें थोड़ी बेहतर स्थिति में जरूर हैं, लेकिन इसका यह मतलब कतई नहीं है कि वे अजेय हैं। आईपीएल को इसलिए शुरू किया गया था ताकि दूर होते क्रिकेटप्रेमियों को फिर से इस खेल की तरफ आकर्षित किया जा सके। यह लीग इस प्रयास में तो सफल हुई ही, अब यह क्रिकेट की सबसे मालामाल लीग भी हो गई

तक आयोजित करना संभव नहीं है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का ढांचा द्विपक्षीय क्रिकेट पर आधारित है और बीच-बीच में आईसीसी टूर्नामेंटों का भी आयोजन होता रहता है। आईपीएल के लिए आईसीसी ने कोई विंडो तो नहीं दी है, पर इतना जरूर है कि अब देशों ने इसके आयोजन के समय पर सीरीज आयोजित करना काफी कम कर दिया है।

कर्तव्यनिष्ठ जाबांज पुलिस अधिकारी अमित सांधी (आईपीएस)



पुलिस, डॉक्टर्स, नर्सस, वॉर्डबॉयस, सफाईकर्मचारी, मीडियाकर्मी भारत के वीर जवान इत्यादि आज निरंतर कोरोना की जंग में अपना योगदान दे रहे है इन सबकी जितनी सराहना की जाये उतनी कम है। गुंज पत्रिका आज अपनी कलम के माध्यम से इन सभी कोरोना वॉरियर्स को तह दिल से सलाम और शुक्रिया करते हैं। कोरोना के इस संकटकाल में हम और आप सुरक्षित रहें इसके लिए पुलिस मैदान में मोर्चा संभाले हुए है ये वो कोरोना वारियर्स हैं, जो अपनी जान और परिवार से पहले आपका सोच रहे हैं। ऐसे ही कोरोना वारियस वीर योद्धा अपनी चिंता न करते हुए हम सबके समक्ष अपना सर्वस्य दे रहे हैं।



टीम गुंज न्यूज नेटवर्क

कोरोना काल में ग्वालियर पुलिस अधीक्षक एक सच्चे कोरोना वॉरियर्स के रूप में सडकों पर उतरकर लोगों को मास्क पहनने एवं सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराने के लिए दिन रात काम कर रहे हैं पुलिस अधिकारी होना बड़ी बात नहीं है, एक जिम्मेदार पद पर होकर अपने अधिनस्थों के साथ साथ जनता को भी साथ लेकर चलना बड़ी बात होती है. और इस काम को बखूबी ग्वालियर एसपी अमित सांधी कर रहे है। पुलिस कप्तान अमित सांधी एक सुलझे हुए पुलिस कप्तान के रूप में चर्चित है। मध्य प्रदेश के तमाम जिलों में अपनी सफल सेवाएँ देने वाले श्री सांधी एक मिलनसार और अपराधों के निराकरण में माहिर पुलिस अफसर माने जाते है। श्री सांधी अपराधों के नियंत्रण में पुलिस की रणनीति बनाने वाले एक सफल पुलिस अधिकारी के रूप में भी जाने जाते है। 2009 बैच के आईपीएस और ग्वालियर के पुलिस कप्तान अमित सांधी, एक बेहतरीन पुलिस अफसर है, नियमो का सख्ती से

पालन करने और करवाने वाले आईपीएस अमित सांधी के काम करने का यही तरीका है. उनकी एक और खासियत ये है की वो टीमवर्क पर यकीन करते है. अपने अधीनस्तों को अच्छे काम पुरस्कृत करने में वो पीछे नहीं रहते है. जनता की तकलीफ को वो बखूबी समझते हैं, इसलिए ही आम आदमी अपनी समस्या के निदान के लिए उनसे बिना संकोच मिल लेता है. अपनी दो दशक की पुलिस सेवा में उन्होंने ज्यादातर वक्त मैदान में ही गुजरा है. इसलिए भी शायद लोगों की परेशानी वो आसानी से समझ कर उसका निदान करने में पीछे नहीं हटते उनकी पोस्टिंग के दौरान भिंड, सागर, बालाघाट, जबलपुर, इंदौर आदि जगह पर उन्हें काम करने का मौका मिला है। बहुत कम लोगों को पता होगा की अगर अमित सांधी जी पुलिस सेवा में नहीं होते तो शायद वो पत्रकार होते , क्योंकि की मूल रूप से जबलपुर के श्री सांधी ने जर्नलिज्म में भी डिग्री हासिल की है. आप के परिवार में आप के ताऊजी रोशन लाल सांधी भी जाने-माने आईपीएस अफसर रहे है।



मास्क के प्रति लोगों को किया जागरूक





जन-जन में लोकप्रिय जनता के सच्चे जननेता विधायक प्रवीण पाठक

सहज, सरल एवं विनम्र स्वभाव के कारण जनता से है सीधा जुड़ाव

जनप्रतिनिधि जिस तक जनता सीधे पहुंच सके अपनी बात रखे सके अपनी समस्याओं से जनप्रतिनिधि को अवगत करा सके वही सच जनप्रतिनिधि होता है आज हम बात कर रहे हैं ग्वालियर दक्षिण से विधायक प्रवीण पाठक की। श्री पाठक जनता के सच्चे जनप्रतिनिधि हैं यह बात उन्होंने साबित कर दी है जब भी जनता को उनकी जरूरत होती है विधायक पाठक जनता के बीच पहुंचकर जनता की समस्याओं का निराकरण कराते हैं और जनता कहती है ग्वालियर दक्षिण का नेता नहीं बेटा है प्रवीण पाठक। प्रवीण पाठक सहज, सरल एवं विनम्र स्वभाव के नेता हैं



उनकी कार्यशैली के सभी मुरीद हैं छोटा हो या बड़ा माता-बहनें, बच्चे, बुजुर्ग हों या युवा, सभी उन्हें पसंद करते हैं। उनके विनम्र स्वभाव के कारण जनता सीधे उनसे जुड़कर अपनी बात कहती है विधानसभा में जनता जब भी समस्या में होती है विधायक पाठक उनके बीच पहुंचकर तुरन्त अफसरों को समस्या के निराकरण के निर्देश देते हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं जब अधिकारियों द्वारा जनता की बात नहीं सुनी जाती तो स्वयं विधायक जी मौके पर पहुंचकर समस्याओं का निराकरण कराते हैं।

● इमरान गौरी, गुंज न्यूज नेटवर्क

जनता के प्रति हर वक्त समर्पण भाव रखने वाले एवं अपनी विधानसभा क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए सतत प्रयत्नशील रहने वाले लोकप्रिय विधायक प्रवीण पाठक जन-जन में लोकप्रिय और जनता के सच्चे जनसेवक के रूप में काम कर रहे हैं दक्षिण विधायक प्रवीण पाठक बहुत ही कम समय में जनता के बीच काफी लोकप्रिय नेता के रूप में उभरे हैं। वह जनता से सीधे जुड़ते हैं और जनता उन्हें काफी पसंद करती है। विधानसभा में जब भी कोई समस्या होती है तो विधायक श्री पाठक समस्या का तुरन्त निराकरण करा देते हैं जिससे उनकी लोकप्रियता का ग्राफ दिनों दिन बढ़ रहा है ग्वालियर दक्षिण विधायक प्रवीण

पाठक समूचे प्रदेश ग्वालियर चम्बल अंचल में वह काफी लोकप्रिय विधायक के रूप में जाने जाते हैं। विधायक प्रवीण पाठक की कार्यशैली एवं उनकी जनता के प्रति काम करने की अलग शैली उन्हें अन्य विधायकों से अलग बनाती है। श्री पाठक काफी अच्छे वक्ता हैं वह जनता की बात भी काफी अच्छे ढंग से उठाते हैं जनता से जुड़े मुद्दों को उनके द्वारा साफगोई के साथ रखा जाता है।

विधायक जननी सेवामान

अपनी कार्यशैली के कारण जनता के बीच लोकप्रिय ग्वालियर दक्षिण विधानसभा से कांग्रेस पार्टी के विधायक श्री प्रवीण पाठक जी ने गर्भवती महिलाओं के लिए आज विधायक जननी सेवा यान के नाम से 24 घंटे निःशुल्क सुविधा का लोकार्पण किया इसके तहत विधायक श्री पाठक ने अपनी विधायक निधि से 2 एंबुलेंस विधायक जननी सेवा यान के नाम से लोकार्पित की है जो चौबीसों घंटे कार्य करेंगी ...एक एंबुलेंस कमलाराजा अस्पताल में आने वाली प्रसूता महिलाओं के लिए निःशुल्क लाने ले जाने के लिए दी गई है एवं दूसरी एंबुलेंस ग्वालियर दक्षिण विधानसभा में स्थित प्रसूति ग्रहों लक्ष्मीगंज एवं माधवगंज प्रसूतिगृहों में आने वाली प्रसूता महिलाओं की सुविधा के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराई गई है।

सर्वांगीण विकास के लिए दृढ़ संकल्पित हूं: पाठक

दक्षिण विधानसभा के सर्वांगीण विकास के लिए मैं दृढ़ संकल्पित हूं और निरंतर विधानसभा क्षेत्र के संपूर्ण विकास के लिए प्रयास करता रहूंगा यह बात बात विधायक प्रवीण पाठक ने कही उन्होंने कहा कि संपूर्ण दक्षिण विधानसभा के सर्वांगीण विकास के लिए मैं हरदम जनता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहूंगा और जब तक विधानसभा के प्रत्येक क्षेत्र का विकास पूर्ण नहीं हो जाता मैं चैन से नहीं बैठूंगा।





आम जनता के सुख-दुख का ख्याल रखना मेरी जिम्मेदारी है: विधायक पाठक

ग्वालियर दक्षिण से कांग्रेस पार्टी के विधायक प्रवीण पाठक वार्ड 35 में काजल टॉकीज के पास, सूबे की गोठ में विधायक निधि से लगभग सवा 9 लाख रुपये की राशि से बनाई जा रही सड़क का भूमि पूजन नहीं कन्या कुमारी यावी से करवायाभूमि पूजन कार्यक्रम में विधायक श्री पाठक ने वहां उपस्थित बुजुर्गों का माला पहनाकर सम्मान कर आशीर्वाद प्राप्त किया इस अवसर पर विधायक श्री पाठक ने उपस्थित जनसमूह को आश्चस्त किया कि मेरे क्षेत्र की जनता की प्रत्येक समस्या का समाधान करना मेरी प्राथमिकता में शामिल है।

विधायक जी का रिकशा

ग्वालियर दक्षिण विधायक प्रवीण पाठकद्वारा जयारोग्य अस्पताल परिसर में मरीजों एवं उनके अटेंडरों की सहूलियत के लिए विधायक जी का रिकशा नाम से निशुल्क ई-रिकशा चलाने का शुभारंभ किया जिससे जनता को काफी सहूलियत हुई है।

हुजरात सब्जी मंडी का होगा कायाकल्प

हुजरात सब्जी मंडी जल्द ही नए अंदाज में नजर आएगी। मंडी व्यापारियों के लिए सुविधा से परिपूर्ण नया मार्केट तैयार होगा। जिसमें वाहनों के लिए पार्किंग भी मौजूद रहेगी। इससे न केवल जाम के हालात खत्म हो जाएंगे बल्कि मार्केट के आस-पास सुंदर भी नजर आएगा। दक्षिण विधायक प्रवीण पाठक ने स्मार्ट सिटी की सीईओ जयति सिंह के साथ मंडी एंव नगर निगम मार्केट का जायजा लिया। मार्केट कैसा हो और क्या-क्या सुविधाएं हो इसके लिए व्यापारियों से चर्चा कर उनके मन को भी जाना।

विधायक स्टेशनरी बैंक

दक्षिण विधानसभा में विधायक पाठक द्वारा छात्र-छात्राओं के लिए स्कूल कॉलेजों में विधायक स्टेशनरी बैंक का शुभारंभ किया गया जिसके अन्तर्गत छात्र छात्राओं को मुफ्त स्टेशनरी मुहैया कराई जाती है।

एक वर्ष से बंद थैलेसीमिया वार्ड को कराया शुरू

पिछले लगभग 1 वर्ष से कोविड-19 के कारण थैलेसीमिया वार्ड बंद था और अभी कुछ दिनों से उसमें रिनोवेशन चल रहा है इस कारण से थैलेसीमिया वार्ड बंद था विधायक श्री पाठक ने कमलाराजा अस्पताल का निरीक्षण कर निर्देशित किया कि जब तक थैलेसीमिया वार्ड का रिनोवेशन चल रहा है तब तक वैकल्पिक व्यवस्था के तौर पर इसी बिल्डिंग में अन्य स्थान पर किसी दूसरे वार्ड में थैलेसीमिया पीड़ित रोगियों के लिए थैलेसीमिया वार्ड को चालू कर दिया जाए इस पर अस्पताल अधीक्षक डॉ आर के एस धाकड़ ने भी सहमत दे दी है। थैलेसीमिया का नया वार्ड भी रिनोवेशन के बाद 1 महीने में शुरू हो जाएगा।



सरकारी स्कूलों को स्मार्ट बनाएं

ग्वालियर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री प्रवीण पाठक ने कहा है कि ग्वालियर दक्षिण के सभी सरकारी स्कूलों को जुलाई 2023 तक स्मार्ट स्कूल बनाया जाएगा। कक्षा 9 वीं से 12 वीं तक के सरकारी स्कूलों के बच्चों को मैथ्स और इंग्लिश में आने वाली दिक्कत को दूर करने के लिए क्षेत्र के सभी वार्डों में निःशुल्क कोचिंग शुरू की जाएगी जिससे कि हमारे बच्चे किसी से पीछे न रहें। सामान्य तौर पर नेतागण अथवा जनप्रतिनिधि भूमि पूजन या अन्य कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होते हैं लेकिन ग्वालियर दक्षिण से विधायक श्री प्रवीण पाठक हमेशा कुछ नया सोचते और नवाचार करते रहते हैं इसी कड़ी में विधायक श्री प्रवीण पाठक जी ने दक्षिण विधानसभा के सभी शासकीय विद्यालयों में अपने प्रतिनिधि के तौर पर उसी विद्यालय के छात्र अथवा छात्रा को नन्हे विधायक के रूप में नियुक्त किया है जिसके माध्यम से विधायक श्री पाठक विद्यालय में आने वाली समस्याओं एवं विद्यालय की प्रगति के बारे में लगातार जानकारी लेते रहते हैं।

स्वयं को खतरे में डालकर दूसरों को कर रहे हैं भयमुक्त

● गूँज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर शहर में कोरोना संक्रमण के दौरान जहां हर कोई एक दूसरे से दूरी बना रहा है तथा अपने घर में ही रहना चाह रहा है वहीं दूसरी ओर स्वयं को कोरोना संक्रमण के खतरे में डालकर दूसरों को संक्रमण से भयमुक्त कर रहे हैं, नगर निगम के कर्मचारी सूरज मेवाती। यह वह नाम है जो प्रतिदिन सुबह सार्वजनिक शौचालयों की धुलाई व सफाई करने के बाद क्षेत्र में निकलकर कोरोना पॉजिटिव मरीजों के घर-घर जाकर उनके व उनके आसपास के घरों को सैनिटाइज कर रहे हैं।

कोरोना संक्रमण के खतरे के बीच नगर निगम आयुक्त श्री शिवम वर्मा के निर्देशन में निगम के कर्मचारी शहर के नागरिकों को संक्रमण के भय से मुक्त करने के लिए निरंतर साफ-सफाई एवं सैनिटाइजेशन का अभियान चला रहे हैं।

निगम के इसी अभियान का हिस्सा है गोल पहाड़िया निवासी सूरज मेवाती, जोकि नगर निगम ग्वालियर में सफाई कर्मी के पद पर पदस्थ रहकर इस कोरोना काल जैसी विकट घड़ी में अपने कार्यों को पूरी ईमानदारी से करते हैं। उनके द्वारा प्रतिदिन सुबह जोन 20 के वार्ड 47,48,51 व 53 के अंतर्गत आने वाले सभी सार्वजनिक शौचालयों की साफ सफाई व धुलाई का कार्य किया जाता है, जिससे ऐसे नागरिकों व गरीबों जिनके घर पर शौचालय नहीं है अथवा जो किसी कार्य से



घर से बाहर घूम रहे हैं और इन्हें शौचालय उपयोग करने की आवश्यकता पड़ रही है वह सभी नागरिक बिना किसी कोरोना संक्रमण के भय के इन शौचालयों का उपयोग कर सकें। उसके बाद सूरज मेवाती द्वारा चारों वार्डों में जितने भी कोरोना पॉजिटिव मरीज निकलते हैं, उनके घर बिना डरे पीपीई किट पहनकर पूरे घर व कॉलोनी को सैनिटाइज करने का कार्य करते हैं।

वैसे तो नगर निगम के सभी कर्मचारी कोरोना योद्धा के रूप में कार्य कर रहे हैं परंतु श्री सूरज मेवाती द्वारा जोखिम भरा कार्य बिना डरे किया जा रहा है। वह कहते हैं यह तो मेरा कार्य जो मुझे करना ही है साथ ही सभी साथियों का उत्साह बढ़ाते हुए उन्हें कहते हैं कि कोरोना महामारी से हम सभी को मिलकर लड़ना है तभी हम इस महामारी पर विजय पा सकते हैं।

अपनों से अगर करते हैं प्यार, तो टीकाकरण को न करे इनकार कोरोना से बचने का कारगर उपाय टीकाकरण

● गूँज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर। कोरोना महामारी को रोकने का सबसे कारगर उपाय टीका है। इसी मुहिम को और तेज करने के लिये 11 अप्रैल से महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती से टीका उत्सव शुरू किया गया, जो 14 अप्रैल अम्बेडकर जयंती तक संपूर्ण भारत में चलाया गया। टीका उत्सव में मध्यप्रदेश में टीकाकरण केन्द्रों की संख्या बढ़ाई जाकर सभी जगह मानव संसाधन, वैक्सीन एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं की पूर्ति की गई। प्रदेश में कोविड-19 से बचाव के लिए टीका उत्सव के तीसरे दिन तक 11 लाख 41 हजार 958 लोगों को वैक्सीन लगाई गई।

टीका उत्सव को सफल बनाने के लिये जन-आंदोलन के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा हितग्राहियों को टीका लगाने के लिए सभी जिलों ने अपनी अलग-अलग रणनीति बनाई गई। आशा और आँगनबाड़ी कार्यकर्ता द्वारा घर-घर



संपर्क कर लोगों को प्रेरित कर रही है। स्थानीय जन-प्रतिनिधि, धर्म गुरुओं, सामाजिक संगठन आदि के सहयोग से टीका उत्सव में टीकाकरण किया जा रहा है।

अपर संचालक, टीकाकरण श्री संतोष शुक्ला ने बताया कि अभी तक प्रदेश में 66 लाख 31 हजार 149 नागरिकों का वैक्सीनेशन हो चुका है। इनमें करीब 8 लाख 13 हजार 624 हेल्थ वर्कर और फंट लाइन वर्कर जिन्होंने पहला डोज लिया और 5 लाख 42 हजार 843 लोगों ने दूसरा डोज लिया। इसके अतिरिक्त 45 वर्ष से अधिक वर्ष की आयु सीमा वाले 52 लाख 74 हजार 682 लोगों ने टीका लगवाया। 16 जनवरी के पश्चात 87 दिन में सर्वाधिक एक दिन में 12 अप्रैल 2021 को 4 लाख 29 हजार लोगों का ऐतिहासिक टीकाकरण किया गया।

हर आपात स्थिति को ध्यान में रखकर कोविड मरीजों के इलाज के पुख्ता इंतजाम रहें: तोमर

● (अनिल सिंह सिकरवार) गूज न्यूज नेटवर्क

हर आपात स्थिति को ध्यान में रखकर कोविड संक्रमित मरीजों के इलाज के लिये अस्पतालों में ऑक्सीजन सहित पर्याप्त बैड की व्यवस्था रहे। साथ ही कोविड के इलाज के लिये चिन्हित सभी सरकारी अस्पतालों में प्रशिक्षित

पैरामेडीकल स्टाफ की कमी न रहे, इसके भी पहले से ही पर्याप्त इंतजाम किए जाएँ। यह निर्देश ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने दिए। श्री तोमर कोविड संक्रमित मरीजों के इलाज के लिये जिले में किए गए इंतजामों की

समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कोविड के लिये चिन्हित अस्पतालों में केवल बैड ही नहीं ऑक्सीमीटर, ऑक्सीजन, वेंटीलेटर सहित कोविड के इलाज से संबंधित पर्याप्त दवाएँ भी हर समय उपलब्ध रहें। मोतीमहल स्थित मानसभागार में आयोजित हुई वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने भोपाल में वरिष्ठ अधिकारियों से मोबाइल फोन से चर्चा कर सुपर स्पेशलिटी सहित जेएच की अन्य इकाईयों में कोविड संक्रमित मरीजों के इलाज के लिए आउटसोर्स के जरिए अतिरिक्त पैरामेडीकल स्टाफ तैनात करने की मंजूरी भी दिलाई। समीक्षा के दौरान यह बात सामने आई थी कि जेएच में प्रतिदिन औसतन लगभग दो से द्वाइ हजार मरीजों की ओपीडी रहती है। इस बार जेएच में कोविड के इलाज के साथ-साथ समानांतर रूप से अन्य बीमारियों से ग्रसित मरीजों का इलाज भी किया जा रहा है। इस वजह से पैरामेडीकल स्टाफ में 100 कर्मचारियों की जरूरत पड़ रही है। मंत्री श्री तोमर से भोपाल में हुई चर्चा के बाद तय किया गया कि जेएच के अधीक्षक आउटसोर्स से इन कर्मचारियों को नियुक्त करने के लिये भोपाल प्रस्ताव भेजें। इस प्रस्ताव को तत्काल मंजूरी दी जायेगी। तब तक जिला कलेक्टर एक महीने के लिये अपने स्तर से शासन निर्देशों के तहत आउटसोर्स से स्टाफ रखने की अनुमति

जारी करेंगे, जिससे कोविड मरीजों के इलाज में कठिनाई न आए। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने जोर देकर कहा कि कोरोना मरीजों के इलाज के लिये

पड़ने पर तत्काल 2800 तक बढ़ाई जा सकती है। कलेक्टर ने जानकारी दी कि इसके अलावा जिले में संचालित नर्सिंग कॉलेज में भी जरूरत पड़ने पर पर्याप्त



ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक लेकर की व्यवस्थाओं की समीक्षा, भोपाल बात कर जेएच के लिए अतिरिक्त पैरामेडीकल स्टाफ का कराया इंतजाम

ऑक्सीजन की कमी कदापि नहीं पड़ना चाहिए। इसके लिए ऑक्सीजन उत्पादन इकाईयों से सतत संपर्क रखकर पहले से ही ऑक्सीजन का पर्याप्त भण्डारण रखें। उन्होंने कहा इस संबंध में वे स्वयं भी ऑक्सीजन उत्पादन इकाईयों से बात करेंगे। कंट्रोल कमाण्ड सेंटर में रात में कम से कम दो चिकित्सकों की ड्यूटी रहे होम आईसोलेशन में स्वास्थ्य लाभ ले रहे कोरोना मरीजों को प्रॉपर चिकित्सकीय सलाह और दवाएँ उपलब्ध कराने पर जोर देते हुए ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि कंट्रोल एण्ड कमाण्ड सेंटर में रात के समय कम से कम दो चिकित्सकों की ड्यूटी लगाएँ, जिससे सभी मरीजों को जल्द से जल्द डॉक्टरों की सलाह मिल सके। कोरोना संक्रमित मरीजों के इलाज के लिए जिले के सरकारी व निजी अस्पतालों में उपलब्ध बैड की जानकारी भी बैठक में ऊर्जा मंत्री द्वारा ली गई। कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने जानकारी दी कि सरकारी अस्पतालों में 623 ऑक्सीजन व 247 आईसीयू बैड सहित कुल 1370 बैड उपलब्ध हैं। साथ ही निजी अस्पतालों में ऑक्सीजनयुक्त व आईसीयू बैडों को मिलाकर 842 बैड वर्तमान में उपलब्ध हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर 2212 बैड हर समय तैयार हैं, जिनकी संख्या जरूरत

संख्या में ऑक्सीजनयुक्त बैड कोरोना मरीजों के इलाज के लिये उपलब्ध हैं। जिन्हें जरूरत पड़ने पर तत्काल उपयोग में लाया जा सकता है।

जेएच की कोल्ड ओपीडी में जाँच काउण्टर बढ़ाएँ

जेएच परिसर में माधव डिस्पेंसरी के समीप स्थित कोल्ड ओपीडी में कोरोना जाँच के सेमल लेने के लिये काउण्टर बढ़ाएँ, जिससे लोगों को ज्यादा देर तक लाइन में खड़े रहकर अपनी बारी का इंतजार न करना पड़े। कोल्ड ओपीडी में पर्याप्त स्टाफ व ऑक्सीमीटर इत्यादि उपकरण भी उपलब्ध रहें। इस आशय के निर्देश ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कोल्ड ओपीडी के ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने संभाग आयुक्त श्री आशीष सक्सेना, कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह एवं नगर निगम आयुक्त श्री शिवम वर्मा के साथ जेएच पहुँचकर कोल्ड ओपीडी, फैजुअल्टी वार्ड सहित कोरोना मरीजों के प्राथमिक उपचार के लिये बनाए गए वार्ड का जायजा लिया। इस अवसर पर उन्होंने निर्देश दिए कि रात्रि के समय भी यदि किसी मरीज को अपने सेमल की जाँच करानी हो तो तत्समय उसकी जाँच की जाए। साथ ही संक्रमित पाए जाने पर उसके लक्षणों के आधार पर उचित अस्पताल में भर्ती कराने की व्यवस्था भी की जाए। इसके लिये कोल्ड ओपीडी के समीप पर्याप्त संख्या में एम्बुलेंस उपलब्ध रहें।



बिना पानी सब सून

जल संरक्षण: निर्णायक कदम उठाने होंगे

● आर. एन. एस. तोमर

प

क्षियों की भांति अब इंसान भी साफ पानी नहीं मिलने से मरने लगे हैं। विश्व में कई सारे देश ऐसे हैं, जहां पीने का स्वच्छ जल न होने के कारण लोग जीवन त्याग रहे हैं। स्वच्छ जल संरक्षण और इस समस्या का समाधान खोजने के लिए ही विश्व जल दिवस पर हम सबको प्रण लेना होगा।

बिना पानी सब सून....इन शब्दों की गंभीरता को समझना होगा! अगर नहीं समझे तो अंजाम भुगतने के लिए तैयार भी रहें? बेपानी के कुछ ताजा उदाहरण हमारे सामने हैं। गाजियाबाद में दो दिन पहले दूषित पानी पीने से एक साथ सौ बच्चे बीमार पड़ गए। ऐसी घटनाओं की हम लगातार अनदेखी करते जा रहे हैं। जिन जगहों पर पानी की कभी बहुतायत होती थी, जैसे तराई के क्षेत्र, वहां की जमीन भी धीरे-धीरे बंजर हो रही है। नमीयुक्त तराई क्षेत्र में कभी एकाध फिट के निचले भाग में पानी दिखता था, वहां का जलस्तर कइयों फिट नीचे खिसक गया है। राजधानी दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में पानी का जलस्तर तो पाताल में समा ही गया है।

किसी को कोई परवाह नहीं, सरकारें आ रही हैं और चली जा रही हैं। कागजों में योजनाएं बनती हैं और विश्व जल दिवस जैसे विशेष दिनों पर पानी सहेजने को लंबे-चौड़े भाषण होते हैं और अगले ही सबकुछ भुला दिया जाता है। इस प्रवृत्ति से बाहर निकलना होगा और गंभीरता से पानी को बचाने के लिए मंथन करना होगा, तभी समस्या का निदान होगा। वरना, वह कहावत कभी भी चरितार्थ

हो सकती है जो बेपानी पर कही गई है। कहावत है रहिमन पानी रखिए, पानी बिना सब सून, पानी गये ना उबरे, मोती मानस सून। पानी बचाने और उसे सहजने को जो कुछ साधन हुआ भी करते थे, वह सब चौपट हो

राजस्थान का राण प्रताप सागर, कर्नाटक का वाणी विलास सागर, ओडिशा का रेंगाली, तमिलनाडु का शोलायार, त्रिपुरा का गुमटी और पश्चिम बंगाल के मयुराक्षी व कंसाबती जलाशय सूखने के एकदम कगार पर हैं। गौरतलब है कि



गए हैं। बात ज्यादा पुरानी नहीं है। कोई एकाध दशक पहले तक छोटे-छोटे गांवों में नदी-नाले, नहर, पौखर और तालाब अनायास ही दिखाई पड़ते थे, वह अब नदारद हैं। याद आता है, वर्षा जल संरक्षण के लिए पूर्ववर्ती सरकारों ने अभियान भी चलाया था, जो बाद में बेअसर साबित हुआ। यूं कहें कि जल संचयन और जलाशयों को भरने के तरीकों को आजमाने की परवाह उस दौरान ईमादारी से किसी से नहीं की। समूचे भारत में 76 विशालकाय और प्रमुख जलाशय हैं जिनकी बदहाली चिंतित करती है। इन जल भंडारण की स्थिति पर निगरानी रखने वाले केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट रंगट खड़ी करती है। रिपोर्ट के मुताबिक एकाध जलाशयों को छोड़कर बाकी सभी मरणासन्न स्थिति में हैं। उत्तर प्रदेश के माताटीला बांध व रिहन्द, मध्य प्रदेश के गांधी सागर व तवा, झारखंड के तेनुघाट, मेथन, पंचेतहित व कोनार, महाराष्ट्र के कोयना, ईसापुर, येलदरी व ऊपरी तापी,

पूर्ववर्ती सरकारों ने इन जलाशयों से बिजली बनाने की भी योजना बनाई थी, जो कागजों में ही सिमट कर रह गईं। योजना के तहत थोड़ा बहुत काम आगे बढ़ा भी था जिनमें चार जलाशय ऐसे हैं जो पानी की कमी के कारण लक्ष्य से भी कम विद्युत उत्पादन कर पाए। सोचने वाली बात है जब पर्याप्त मात्रा में पानी ही नहीं होगा, बिजली कहां से उत्पन्न होगी। तब जलाशयों को बनाने के शायद दो मकसद थे। अक्वल- वर्षा जल को एकत्र करना, दूसरा- जलसंकट की समस्याओं से मुकाबला करना। इनका निर्माण सिंचाई, विद्युत और पेयजल की सुविधा के लिए हजारों एकड़ वन और सैंकड़ों बस्तियों को उजाड़ कर किया गया था, मगर वह सभी सरकार की लापरवाही के चलते बेपानी हो गए हैं। केंद्रीय जल आयोग ने इन तालाबों में जल उपलब्धता के जो ताजा आंकड़े दिए हैं, उनसे साफ जाहिर होता है कि आने वाले समय में पानी और बिजली की भयावह स्थिति होगी।



नवसंवत्सरः हिन्दू नववर्षः सूर्योदय के साथ हुआ था सृष्टि का प्रारंभ

“

राष्ट्रीय स्वाभिमान और सांस्कृतिक धरोहर को बचाने वाला पुण्य दिवस हिंदू नव वर्ष चैत्र मास की प्रतिपदा के दिन मनाया जाता है। इस दिन से चैत्र नवरात्रि की शुरुआत होती है। महाराष्ट्र में इस दिन को गुड़ी पड़वा कहा जाता है और दक्षिण भारत में इसे उगादि कहा जाता है। विक्रम संवत् को नव संवत्सर भी कहा जाता है। संवत्सर 5 प्रकार का होता है जिसमें सौर, चंद्र, नक्षत्र, सावन और अधिमास आते हैं। हालांकि कई विद्वानों का मत है कि भारत में विक्रमी संवत् से भी पहले लगभग 700 ई.पू. हिंदुओं का प्राचीन सप्तर्षि संवत् अस्तित्व में आ चुका था। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव वर्ष प्रारंभ होता है। इसी दिन सूर्योदय के साथ सृष्टि का प्रारंभ परमात्मा ने किया था। अर्थात् इस दिन सृष्टि प्रारंभ हुई थी तब से यह गणना चली आ रही है। ● गूज न्यूज नेटवर्क

चै

त्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा वर्ष प्रतिपदा कहलाती है। इस दिन से ही नया वर्ष प्रारंभ होता है। इसी दिन ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण किया था। इसमें मुख्यतया ब्रह्माजी और उनकी निर्माण की हुई सृष्टि के मुख्य-मुख्य देवी-देवताओं, यक्ष-राक्षस, गन्धर्वों, ऋषि-मुनियों, मनुष्यों, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों और कीटाणुओं का ही नहीं, रोगों और उनके उपचारों तक का पूजन किया जाता है। इस दिन से नया संवत्सर शुरू होता है अतः इस तिथि को नव-संवत्सर भी कहते हैं। संवत्सर अर्थात् बारह महीने का कालविशेष। संवत्सर उसे कहते हैं, जिसमें सभी महीने पूर्णतः निवास करते हों। भारतीय संवत्सर जैसे तो पाँच प्रकार के होते हैं। इनमें से मुख्यतः तीन हैं- सावन, चान्द्र तथा सौर। सावन- यह 360 दिनों का होता है। संवत्सर का मोटा सा हिसाब इसी से लगाया जाता है। इसमें एक माह की अवधि पूरे तीस दिन की होती है। चैत्र ही एक ऐसा माह है जिसमें वृक्ष तथा लताएँ पल्लवित व पुष्पित होती हैं। इसी मास में उन्हें वास्तविक मधुरस पर्याप्त मात्रा में मिलता है। वैशाख मास, जिसे माधव कहा गया है, में मधुरस का परिणाम मात्र मिलता है।

यह नववर्ष किसी जाति, वर्ग, देश, संप्रदाय का नहीं है अपितु यह मानव मात्र का नववर्ष है। यह पर्व विशुद्ध रूप से भौगोलिक पर्व है क्योंकि प्राकृतिक दृष्टि से भी वृक्ष वनस्पति फूल पत्तियों में भी नयापन दिखाई देता है। वृक्षों में नई-नई कोपलें आती हैं। वसंत ऋतु का वर्चस्व चारों ओर दिखाई देता है। मनुष्य के शरीर में नया रक्त बनता है। हर जगह परिवर्तन एवं नयापन दिखाई पड़ता है। रवि की नई फसल घर में आने से कृषक के साथ संपूर्ण समाज प्रसन्नचित होता है। वैश्य व्यापारी वर्ग का भी इकोनॉमिक दृष्टि से मार्च महीना इण्डिंग (समापन) माना जाता है। इससे यह पता चलता है कि जनवरी साल का पहला महीना नहीं है पहला महीना तो चैत्र है जो लगभग मार्च-अप्रैल में पड़ता है। 1 जनवरी में नया जैसा कुछ नहीं होता किंतु अभी चैत्र माह में देखिए नई

ऋतु, नई फसल, नई पवन, नई खुशबू, नई चेतना, नया रक्त, नई उमंग, नया खाता, नया संवत्सर, नया माह, नया दिन हर जगह नवीनता है। यह नवीनता हमें नई उर्जा प्रदान करती है।

नव वर्ष को शास्त्रीय भाषा में नवसंवत्सर (संवत्सरेष्टि) कहते हैं। इस समय सूर्य मेष राशि से गुजरता है इसलिए इसे मेष संक्रांति भी कहते हैं। प्राचीन काल में नव-वर्ष को वर्ष के सबसे बड़े उत्सव के रूप में मनाते थे। यह

प्राचीनकाल में नया संवत् चलाने से पहले विजयी राजा को अपने राज्य में रहने वाले सभी लोगों को ऋणा-मुक्त करना आवश्यक होता था। राजा विक्रमादित्य ने भी इसी परम्परा का पालन करते हुए अपने राज्य में रहने वाले सभी नागरिकों का राज्यकोष से कर्ज चुकाया और उसके बाद चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मालवागण के नाम से नया सम्वत् चलाया। भारतीय कालगणना के अनुसार वसन्त ऋतु और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि अति प्राचीनकाल से सृष्टि प्रक्रिया की भी पुण्य तिथि रही है। वसन्त ऋतु में आने वाले वासन्तिक नवरात्र का प्रारम्भ भी सदा इसी पुण्यतिथि से होता है। विक्रमादित्य ने भारत राष्ट्र की इन तमाम कालगणनापरक सांस्कृतिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए ही चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से ही अपने नवसंवत्सर सम्वत् को चलाने की परम्परा शुरू की थी और तभी से समूचा भारत राष्ट्र इस पुण्य



तिथि का प्रतिवर्ष अभिवन्दन करता है। दरअसल भारतीय परम्परा में चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य शौर्य, पराक्रम तथा प्रजाहितैषी कार्यों के लिए प्रसिद्ध माने जाते हैं। उन्होंने 95 शक राजाओं को पराजित करके भारत को विदेशी राजाओं की दासता से मुक्त किया था। राजा विक्रमादित्य के पास एक ऐसी शक्तिशाली विशाल सेना थी जिससे विदेशी आक्रमणकारी सदा भयभीत रहते थे। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला संस्कृति को विक्रमादित्य ने विशेष प्रोत्साहन दिया था। धन्वन्तरि जैसे महान वैद्य, वराहमिहिर जैसे महान ज्योतिषी और कालिदास जैसे महान साहित्यकार विक्रमादित्य की राज्यसभा के नवरत्नों में शोभा पाते थे।

रित आजकल भी दिखाई देती है। जैसे महाराष्ट्र में गुड़ी पाडवा के रूप में मनाया जाता है तथा बंगाल में पड़ला पहला वैशाख और गुजरात आदि अनेक प्रांतों में इसके विभिन्न रूप हैं। भारतवर्ष में इस समय देशी-विदेशी मूल के अनेक सम्वत्तों का प्रचलन है। किन्तु भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय राष्ट्रीय सम्वत् यदि कोई है तो वह विक्रम सम्वत् ही है। आज से 2072 वर्ष यानी 57 ईसा पूर्व में भारतवर्ष के प्रतापी राजा विक्रमादित्य ने देशवासियों को शकों के अत्याचारी शासन से मुक्त किया था। उसी विजय की स्मृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से विक्रम सम्वत् का भी आरम्भ हुआ था।

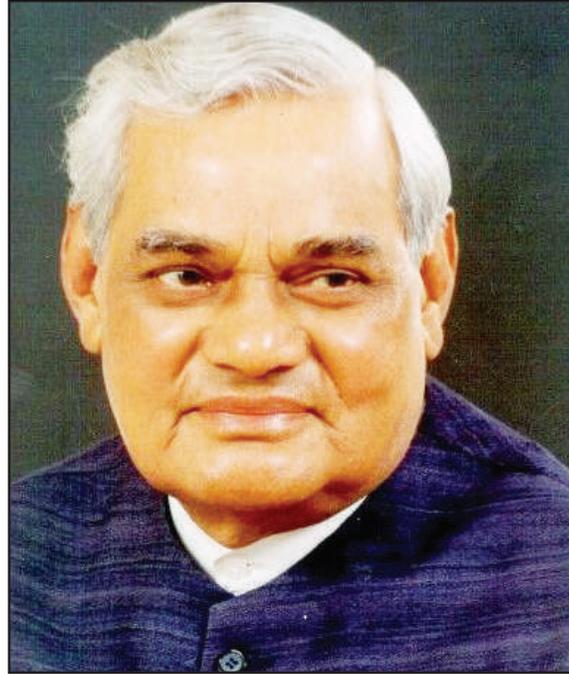
तिथि का प्रतिवर्ष अभिवन्दन करता है। दरअसल भारतीय परम्परा में चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य शौर्य, पराक्रम तथा प्रजाहितैषी कार्यों के लिए प्रसिद्ध माने जाते हैं। उन्होंने 95 शक राजाओं को पराजित करके भारत को विदेशी राजाओं की दासता से मुक्त किया था। राजा विक्रमादित्य के पास एक ऐसी शक्तिशाली विशाल सेना थी जिससे विदेशी आक्रमणकारी सदा भयभीत रहते थे। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला संस्कृति को विक्रमादित्य ने विशेष प्रोत्साहन दिया था। धन्वन्तरि जैसे महान वैद्य, वराहमिहिर जैसे महान ज्योतिषी और कालिदास जैसे महान साहित्यकार विक्रमादित्य की राज्यसभा के नवरत्नों में शोभा पाते थे।

राष्ट्र के लिए सदैव समर्पित रहे भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी

भा

रत माँ के सच्चे सपूत, राष्ट्र पुरुष, राष्ट्र मार्गदर्शक, सच्चे देशभक्त ना जाने कितनी उपाधियों से पुकारा जाता था भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी को वो सही मायने में भारत रत्न थे। इन सबसे भी बढ़कर पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी एक अच्छे इंसान थे। जिन्होंने जमीन से जुड़े रहकर राजनीति की और “जनता के प्रधानमंत्री” के रूप में लोगों के दिलों में अपनी खास जगह बनायी थी। एक ऐसे इंसान जो बच्चे, युवाओं, महिलाओं, बुजुर्गों सभी के बीच में लोकप्रिय थे। देश का हर युवा, बच्चा उन्हें अपना आदर्श मानता था। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लिया और जिसका उन्होंने अपने अंतिम समय तक निर्वहन किया। बेशक अटल बिहारी वाजपेयी जी कुंवारे थे लेकिन देश का हर युवा उनकी संतान की तरह था। देश के करोड़ों बच्चे और युवा उनकी संतान थे। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी का बच्चों और युवाओं के प्रति खास लगाव था। इसी लगाव के कारण पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी बच्चों और युवाओं के दिल में खास जगह बनाते थे। भारत की राजनीति में मूल्यों और आदर्शों को स्थापित करने वाले राजनेता और प्रधानमंत्री के रूप में पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी का काम बहुत शानदार रहा। उनके कार्यों की बदौलत ही उन्हें भारत के ढांचागत विकास का दूरदृष्ट कहा जाता है। सब के चहेते और विरोधियों का भी दिल जीत लेने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पंडित अटल बिहारी वाजपेयी का सार्वजनिक जीवन बहुत ही बेदाग और साफ सुथरा था इसी बेदाग छवि और साफ सुथरे सार्वजनिक जीवन की वजह से अटल बिहारी वाजपेयी जी का हर कोई सम्मान करता था। उनके विरोधी भी उनके प्रशंसक थे। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी के लिए राष्ट्रहित सदा सर्वोपरि रहा। तभी उन्हें राष्ट्रपुरुष कहा जाता था। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी की बातें और विचार सदा तर्कपूर्ण होते थे और उनके विचारों में जवान सोच झलकती थी। यही झलक उन्हें युवाओं में लोकप्रिय बनाती थी। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी जब भी संसद में अपनी बात रखते थे तब विपक्ष भी उनकी तर्कपूर्ण वाणी के आगे कुछ नहीं बोल पाता था। अपनी कविताओं के जरिए अटल जी हमेशा सामाजिक बुराइयों पर प्रहार करते रहे। उनकी कवितायें उनके प्रशंसकों को हमेशा सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती रहेंगी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक से

लेकर प्रधानमंत्री तक का सफर तय करने वाले युग पुरुष अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्म ग्वालियर में बड़े दिन के अवसर पर 25 दिसम्बर 1924 को हुआ। अटल जी के पिता का नाम पण्डित कृष्ण बिहारी वाजपेयी और माता का नाम कृष्णा वाजपेयी था। पिता पण्डित कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर में अध्यापक थे। कृष्ण बिहारी



वाजपेयी साथ ही साथ हिन्दी व ब्रज भाषा के सिद्धहस्त कवि भी थे। अटल बिहारी वाजपेयी मूल रूप से उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा जिले के प्राचीन स्थान बटेश्वर के रहने वाले थे। इसलिए अटल बिहारी वाजपेयी का पूरे ब्रज सहित आगरा से खास लगाव था। अटल बिहारी वाजपेयी जी की बीए की शिक्षा ग्वालियर के वर्तमान में लक्ष्मीबाई कालेज के नाम से जाने वाले विक्टोरिया कालेज में हुई। ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज से स्नातक करने के बाद अटल बिहारी वाजपेयी ने कानपुर के डीएवी महाविद्यालय से कला में स्नातकोत्तर उपाधि भी प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। अटल बिहारी वाजपेयी एक प्रखर वक्ता और कवि थे। ये गुण उन्हें उनके पिता से वंशानुगत मिले। अटल बिहारी वाजपेयी जी को स्कूली समय से ही भाषण देने का शोक था और स्कूल में होने वाली वाद-

विवाद, काव्य पाठ और भाषण जैसी प्रतियोगिताएं में हमेशा हिस्सा लेते थे। अटल बिहारी वाजपेयी छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में हिस्सा लेते रहे। अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने जीवन में पत्रकार के रूप में भी काम किया और लम्बे समय तक राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और वीर अर्जुन आदि राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। अटल बिहारी वाजपेयी जी भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे और उन्होंने लंबे समय तक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे प्रखर राष्ट्रवादी नेताओं के साथ काम किया। कारगिल युद्ध में विजयश्री के बाद हुए 1999 के लोकसभा चुनाव में भाजपा फिर अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरने के बाद भाजपा ने अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में 13 दलों से गठबंधन करके राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के रूप में सरकार बनायी। और अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने अपना पूरा पांच साल का कार्यकाल पूर्ण किया। इन पाँच वर्षों में अटल बिहारी वाजपेयी ने देश के अन्दर प्रगति के अनेक आयाम छुए। और राजग सरकार ने गरीबों, किसानों और युवाओं के लिए अनेक योजनाएं लागू की। अटल सरकार ने भारत के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना की शुरुआत की और दिल्ली, कलकत्ता, चेन्नई व मुम्बई को राजमार्ग से जोड़ा गया। 2004 में कार्यकाल पूरा होने के बाद देश में लोकसभा चुनाव हुआ और भाजपा के नेतृत्व वाले राजग ने अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में शाइनिंग इंडिया का नारा देकर चुनाव लड़ा। लेकिन इन चुनावों में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिला। लेकिन वामपंथी दलों के समर्थन से कांग्रेस ने मनमोहन सिंह के नेतृत्व में केंद्र की सरकार बनायी और भाजपा को विपक्ष में बैठना पड़ा। इसके बाद लगातार अस्वस्थ रहने के कारण अटल बिहारी वाजपेयी ने राजनीति से सन्यास ले लिया।

भारत के टॉप कॉलेजों में मेडिकल क्षेत्र में बनाएं करियर

वि कित्सा क्षेत्र में सफलता उस संस्थान पर काफी निर्भर करती है, जहां छात्र अपने चिकित्सा पाठ्यक्रम को करना चाहते हैं। इसलिए, सभी छात्र, जो वर्तमान में अपनी 12वीं बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं, उन्हें भारत के सर्वश्रेष्ठ मेडिकल कॉलेजों की पहचान करना शुरू कर देना चाहिए, जो उन्हें भविष्य में अपने अनुसार योजना बनाने में मदद करेंगे। भारत में निजी और सरकारी एमबीबीएस कॉलेजों में प्रवेश हथुथुत त परीक्षा में छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर किया जाता है।

वहीं डिप्लोमा इन फार्मसी, जो तीन साल का कोर्स है और जिन छात्रों ने साइंस स्ट्रीम (फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी / मैथमेटिक्स) के साथ क्लास 12वीं पूरा कर लिया है, वे इस कोर्स को करने के लिए योग्य हैं। उसके बाद आप बी फार्म और बी फार्म (आयुर्वेद) के लिए विकल्प चुन सकते हैं जो चार साल का कोर्स है। किसी भी फार्मसी पाठ्यक्रम में दाखिला लेने के लिए उम्मीदवारों को पात्रता मानदंडों को पूरा करने की आवश्यकता होती है और विभिन्न फार्मसी कॉलेजों / संस्थानों के संबंधित प्रवेश परीक्षाओं को पास करना होता है। चयन प्रक्रिया में प्रवेश परीक्षा में शैक्षणिक पात्रता, वैध स्कोर और रैंक शामिल होते हैं। आइये जानते हैं कुछ शीर्ष संस्थान के बारे में-

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS), नई दिल्ली

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रदान करता है। एम्स नई दिल्ली में बीएससी में प्रवेश पाठ्यक्रम प्रवेश परीक्षा के माध्यम से किया जाता है और उसके बाद साक्षात्कार होता है। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिखित परीक्षा के आधार पर विभागीय मूल्यांकन के बाद किया जाता है।

पोस्टग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, चंडीगढ़

पोस्टग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च (पीजीआईएमईआर) चंडीगढ़, भारत में एक प्रमुख चिकित्सा और अनुसंधान संस्थान है, जो भारत में चिकित्सा शिक्षा के लिए एक बहुत ही लोकप्रिय और राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है। नैदानिक सेवाओं के अलावा, PGI में पोस्ट ग्रेजुएट और पोस्ट डॉक्टरल डिग्री, डिप्लोमा और फेलोशिप सहित चिकित्सा के लगभग सभी विषयों में प्रशिक्षण होता है। चूंकि यह एक स्नातकोत्तर संस्थान है, इसलिए इसमें स्नातक एमबीबीएस पाठ्यक्रमों की सुविधाएं नहीं हैं।

क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्होर

पहले यह कॉलेज मद्रास विश्वविद्यालय से संबद्ध था, लेकिन बाद में यह डॉ एम.जी.आर. मेडिकल यूनिवर्सिटी, तमिलनाडु से संबद्ध हो गया। सीएमसी वेल्होर के पाठ्यक्रमों में बीएससी नर्सिंग, एएचएस डिग्री, डिप्लोमा नर्सिंग, एएचएस डिप्लोमा / पीजी डिप्लोमा / फेलोशिप, डीएम / एम.सी.एच, पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप, एमपीएच एंड एमएससी



एपिडेमियोलॉजी, एम.एस. बायोटेस्टिक्स, मेडिकल फिजिक्स, एमएस बायोइन्जिनियरिंग, मेडिकल पोस्ट ग्रेजुएट शामिल हैं।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेज (NIMHANS), बेंगलुरु

यह भारत का एक प्रमुख चिकित्सा संस्थान है। NIMHANS देश में मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान शिक्षा का शीर्ष केंद्र है। NIMHANS UG स्तर पर विभिन्न विषयों में क्रूर और डिप्लोमा कार्यक्रम प्रदान करता है। स्नातकोत्तर स्तर पर संस्थान पीजी डिप्लोमा के साथ M.Sc, MPH, DM, M.Ch और स्लू पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ

संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान में NEET PG स्कोर के आधार पर स्लू कार्यक्रमों और NEET SS स्कोर के आधार पर D.M और M.Ch कार्यक्रमों की सुविधा प्रदान की जाती है। छात्रों को अखिल भारतीय स्तर की एनईईटी काउंसिलिंग के लिए भी अपना पंजीकरण कराना होता है, जहां क्रमशः एनईईटी पीजी और एनईईटी एसएस के स्कोर

के आधार पर सीटें आवंटित की जाती हैं।

पंजाब यूनिवर्सिटी (PUCHD)

पंजाब यूनिवर्सिटी में स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा / पीजी डिप्लोमा, बिजनेस और मैनेजमेंट स्टडीज, अकाउंटिंग एंड कॉमर्स, आर्ट्स (फाइन / विजुअल / परफॉर्मिंग), डिजाइन, इंजीनियरिंग, मानविकी और सामाजिक विज्ञान, कानून, चिकित्सा, स्वास्थ्य विज्ञान, और विज्ञान जैसी धाराओं में व्यावसायिक पाठ्यक्रम उपलब्ध है।

जामिया हमदद, नई दिल्ली

जामिया हमदद कई क्षेत्रों जैसे इंजीनियरिंग, प्रबंधन, फार्मसी, चिकित्सा आदि में कई पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश प्रदान करता है, कुछ पाठ्यक्रमों में प्रवेश अखिल भारतीय स्तर की प्रवेश परीक्षा के माध्यम से किया जाता है, जबकि कुछ

पाठ्यक्रमों में प्रवेश जेएच द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा के माध्यम से किया जाता है।

इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल टेक्नोलॉजी (आईसीटी), मुंबई

ICT, मुंबई में B.Tech, B.Pharm, M.Tech, MSc, M.Pharm सहित इंजीनियरिंग, फार्मसी, साइंस, मेडिकल में 36 कोर्स उपलब्ध हैं। छात्रों के लिए Hostel की सुविधा उपलब्ध है। आईसीटी मुंबई प्लेसमेंट के मामले में 90 प्रश की सफलता प्रदान करता है जो काफी सराहनीय है।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, हैदराबाद

एनआईपीईआर हैदराबाद फार्मास्यूटिकल साइंसेस की धारा में उच्च शिक्षा, विकास और अनुसंधान प्रदान करने के लिए उत्कृष्टता केंद्र भी है। इसमें विभिन्न विभागों में स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट कार्यक्रमों को करने के लिए नियामक टॉक्सिकोलॉजी, फार्मास्यूटिकल एनालिसिस, मेडिकल डिवाइसेज, फार्माकोलॉजी, फार्माकोलॉजी, फार्मास्यूटिकल मैनेजमेंट, फार्मासेवटिक्स और प्रोसेस केमिस्ट्री जैसे कुल सात विभाग शामिल हैं।

वेब डिजाइनिंग के क्षेत्र में करियर का निर्माण कैसे करें

वेब डिजाइन वेबसाइटों के उत्पादन और रखरखाव में कई अलग-अलग कौशल और विषयों को शामिल करता है। वेब डिजाइन के विभिन्न क्षेत्रों में वेब ग्राफिक डिजाइन, उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस डिजाइन, मानकीकृत कोड और मालिकाना सॉफ्टवेयर सहित संलेखन, उपयोगकर्ता अनुभव डिजाइन, और सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन शामिल हैं। वेब डिजाइनिंग आज के आईटी क्षेत्र का एक अभिन्न अंग है। वेब डिजाइनिंग का उपयोग वेबसाइटों के निर्माण और योजना के लिए किया जाता है। सामान्यतया, वेब डिजाइन किसी भी वेबसाइट की विकास प्रक्रिया से डील के बारे में है। करियर के नजरिए से आईटी उद्योग में करियर शुरू करने के लिए वेब डिजाइन एक अच्छा विकल्प और अवसर है। वेब डिजाइनर अपनी ऑनलाइन पहचान स्थापित करने के लिए वेबसाइट, वेब पेज और सरकारी या गैर-सरकारी संगठनों, व्यवसायों, उद्योगों और कॉर्पोरेट फर्मों के लिए वेब एप्लिकेशन डिजाइन करते हैं।

एक वेब डिजाइनर क्या करता है?

वेबसाइट संरचना बनाने के लिए एक वेब डिजाइनर कई चीजों का उपयोग करता है, जैसे कि टेक्स्ट, सूचना वास्तुकला, चित्र, फॉन्ट, रंग, इमेज मार्कअप भाषा और अन्य इंटरैक्टिव तत्व। दूसरे शब्दों में वेब डिजाइनिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक वेब डिजाइनर विज़िटर्स को

एक ही मंच पर कई लिंक, चित्र, ग्राफिक्स, आदि के साथ वेब पेज तक पहुंचने में सक्षम बनाता है। वेब डिजाइनर किसी भी तरह की वेबसाइट पर काम करते हैं,



एक इंटरैक्टिव शिक्षा साइट से लेकर खरीदारी की ऑनलाइन साइट तक। इस भूमिका के मुख्य कार्य हैं- ग्राहकों से इस बात पर चर्चा करने के लिए कि वे अपनी साइट को क्या करना चाहते हैं और इसका उपयोग कौन करेगा एक डिजाइन योजना तैयार करना, साइट की संरचना को दिखाना और विभिन्न भागों को एक साथ जोड़ना निर्णय लेना कि कौन सा ब्रांडिंग, टेक्स्ट, रंग और पृष्ठभूमि का उपयोग करना है डिजाइन सॉफ्टवेयर का उपयोग करके पेज और पोजिशनिंग बटन, लिंक और

चित्र बनाने मल्टीमीडिया फीचर्स, जैसे साउंड, एनीमेशन और वीडियो जोड़ना परीक्षण और डिजाइन और साइट में सुधार, जब तक कि सब कुछ योजना के अनुसार काम न करे

वेब डिजाइनर बनने की पात्रता

डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स में प्रवेश लेने के लिए उम्मीदवारों को किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से किसी भी स्ट्रीम में 10 वीं कक्षा या 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए स्नातक की डिग्री में प्रवेश लेने के लिए उम्मीदवारों को किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से किसी भी विषय में 12 वीं कक्षा या समकक्ष परीक्षा (डिप्लोमा / प्रमाणन) उत्तीर्ण होना चाहिए। पीजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के लिए उम्मीदवारों के पास किसी मान्यता प्राप्त कॉलेज / संस्थान / विश्वविद्यालय से किसी भी स्ट्रीम में स्नातक की डिग्री होनी चाहिए। इसके अलावा उम्मीदवारों को वेब डिजाइनिंग में 1 से 2 साल का डिप्लोमा या वेब डिजाइनिंग में 6 महीने से 1 साल का सर्टिफिकेट होना चाहिए। कुछ संस्थान / कॉलेज डिप्लोमा कोर्स के लिए कोई आयु सीमा प्रदान नहीं करते हैं।

डेंटल हाइजीनिस्ट बनकर संवारे अपना करियर

डेंटल हाइजीनिस्ट एक दंत पेशेवर है जो मौखिक स्वास्थ्य में माहिर है। इनका मुख्य काम आमतौर पर मौखिक स्वच्छता और देखभाल में तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करना होता है। दंत चिकित्सक और डेंटल हाइजीनिस्ट मरीजों की मौखिक स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करने के लिए एक साथ काम करते हैं। शरीर के अन्य भागों की तरह ही दांत भी मनुष्य के शरीर का एक अहम हिस्सा हैं। आमतौर पर ओरल हेल्थ का ख्याल रखना बेहद ही जरूरी माना जाता है और लोग इसका ख्याल रखते भी हैं। हालांकि दांतों व ओरल हेल्थ से संबंधित कई बार लोगों को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है और ऐसे में एक पेशेवर की जरूरत पड़ती है। वैसे जब ओरल हेल्थ को लेकर डॉक्टर का ख्याल आता है तो हम सभी डेंटिस्ट के पास जाना पसंद करते हैं। लेकिन अब, दंत चिकित्सा तेजी से बदल रही है, कई अवसरों और चुनौतियों का निर्माण कर रही है। दंत चिकित्सकों के रूप में मुख्य करियर के अलावा, दंत चिकित्सा सहायक, डेंटल हाइजीन के क्षेत्र में भी आप

करियर के अवसर तलाश सकते हैं। तो चलिए आज हम



जानते हैं कि डेंटल हाइजीनिस्ट बनकर आप अपना करियर कैसे संवार सकते हैं-

शैक्षिक योग्यता

डेंटल हाइजीनिस्ट कोर्स को कई डेंटल कॉलेजों में डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स के रूप में पेश किया जाता है। जो छात्र डेंटल हाइजीनिस्ट का कोर्स करना चाहते हैं,

उन्हें 12वीं की परीक्षा भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान विषय में पास करना अनिवार्य है।

संभावनाएं ही संभावनाएं

दंत चिकित्सा के क्षेत्र में बतौर डेंटल हाइजीनिस्ट बनकर भी आप एक अच्छा करियर देख सकते हैं। एक डेंटल हाइजीनिस्ट अस्पताल से लेकर कम्युनिटी डेंटल सर्विस के रूप में काम कर सकते हैं। इसके अलावा वे पीरियोडॉन्टिक्स या बाल चिकित्सा दंत चिकित्सा में भी काम कर सकते हैं। डेंटल हाइजीनिस्ट डेंटल हॉस्पिटल, आर्मंड फोर्स, पब्लिक हेल्थ सेक्टर व प्राइवेट रूप से भी प्रैक्टिस कर सकते हैं।

आमदनी

डेंटल हाइजीनिस्ट की आमदनी उनकी शिक्षा, अनुभव व स्थान के आधार पर भिन्न होती है। एक डेंटल हाइजीनिस्ट की आमदनी घंटे, दिन, सैलरी या कमिशन बेस पर हो सकती है। हालांकि इस क्षेत्र में एक फ़ेशर प्रति माह आठ से दस हजार रूपए वेतन प्राप्त कर सकता है।

सत्य, न्याय एवं सदाचार के प्रतीक हैं श्रीराम

“

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम में सभी के प्रति प्रेम की अगाध भावना कूट-कूटकर मरी थी। उनकी प्रजा वात्सल्यता, न्यायप्रियता और सत्यता के कारण ही उनके शासन को आज भी 'आदर्श' शासन की संज्ञा दी जाती है और आज भी अच्छे शासन को 'रामराज्य' कहकर परिभाषित किया जाता है। 'रामराज्य' यानी सुख, शांति एवं न्याय का राज्य। रामनवमी पर्व वास्तव में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की गुरु सेवा, माता-पिता की सेवा व आज्ञापालन, जात-पात के भेदभाव को मिटाने, क्षमाशीलता, भ्रातृप्रेम, पत्नीव्रता, न्यायप्रियता आदि विभिन्न महान् आदर्शों एवं गुणों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देता है।

भ गवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ल पक्ष नवमी को रामनवमी का त्यौहार समूचे भारतवर्ष में अपार श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में उत्सवों का विशेष आयोजन होता

कोरोना संक्रमण के चलते ऐसे आयोजन ज्यादा धूमधाम से मनाए जाने की संभावना कम ही रहेगी लेकिन भीड़-भाड़ से बचकर लोग अपने घर में भी अपने आराध्य देव के जन्मोत्सव को श्रद्धापूर्वक मना सकते हैं। वनवासी राम का सम्पूर्ण जीवन सामाजिक समरसता का



अनुकरणीय पाथेय है। श्रीराम ने वनगमन के समय प्रत्येक कदम पर समाज के अंतिम व्यक्ति को गले लगाया। केवट के बारे में हम सभी ने सुना ही है कि कैसे भगवान राम ने उनको गले लगाकर समाज को यह संदेश दिया कि प्रत्येक मनुष्य के अंदर एक ही जीव

है, जिनमें भाग लेने के लिए देशभर से हजारों भक्तगण अयोध्या पहुंचते हैं तथा अयोध्या स्थित सरयू नदी में पवित्र स्नान कर पंचकोसी की परिक्रमा करते हैं। समूची अयोध्या नगरी इस दिन पूरी तरह राममय नजर आती है और हर तरफ भजन-कीर्तनों तथा अखण्ड रामायण के पाठ की गूंज सुनाई पड़ती है। देशभर में अन्य स्थानों पर भी जगह-जगह इस दिन श्रद्धापूर्वक हवन, व्रत, उपवास, यज्ञ, दान-पुण्य आदि विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है। हालांकि इस वर्ष फिर से बढ़ते

आत्मा है। बाहर भले ही अलग दिखते हों, लेकिन अंदर से सब एक हैं। यहां जाति का कोई भेद नहीं था। वर्तमान में जिस केवट समाज को वंचित समुदाय की श्रेणी में शामिल किया जाता है, भगवान राम ने उनको गले लगाकर सामाजिक समरसता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। सामाजिक समरसता के भाव को नष्ट करने वाली जो बुराई आज दिखाई दे रही है, वह पुरातन समय में नहीं थी। समाज में विभाजन की रेखा खींचने वाले स्वार्थी व्यक्तियों ने भेदभाव को जन्म दिया है।



विभिन्न हिन्दू धर्मग्रंथों में कहा गया है कि श्रीराम का जन्म नवरात्र के अवसर पर नवदुर्गा के पाठ के समापन के पश्चात् हुआ था और उनके शरीर में मां दुर्गा की नवीं शक्ति जागृत थी। मान्यता है कि त्रेता युग में इसी दिन अयोध्या के महाराजा दशरथ की पटरानी महारानी कौशल्या ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को जन्म दिया था। वाल्मिकी रामायण के अनुसार, "भगवान श्रीराम चन्द्रमा के समान अति सुंदर, समुद्र के समान गंभीर और पृथ्वी के समान अत्यंत धैर्यवान थे तथा इतने शील सम्पन्न थे कि दुश्मनों के आवेश में जीने के बावजूद कभी किसी को कटु वचन नहीं बोलते थे। वे अपने माता-पिता, गुरुजनों, माईयों, सेवकों, प्रजाजनों अर्थात् हर किसी के प्रति अपने स्नेहपूर्ण दायित्वों का निर्वाह किया करते थे। माता-पिता के प्रति कर्तव्य पालन एवं आज्ञा पालन की भावना तो उनमें कूट-कूटकर मरी थी। उनकी कठोर से कठोर आज्ञा के पालन के लिए भी वह हर समय तत्पर रहते थे।"

ब्लू टिक से प्रोफाइल पिक्चर छिपाने तक, बड़े काम की वॉट्सएप्प ट्रिक

इं स्टेट मैसेजिंग एप्प वॉट्सएप्प में लगातार नए फीचर्स आ रहे हैं। लेकिन इन सभी सुविधाओं को याद रखना एक आम यूजर के लिए ना तो आवश्यक और ना ही हर किसी को इस बारे में पता होता है। वॉट्सएप्प पर कई ऐसे अद्भुत फीचर्स हैं, जिनके बारे में हमें पता भी नहीं है। आज हम आपको वॉट्सएप्प के ऐसे 5 फीचर्स या ट्रिक्स के बारे में बता रहे हैं, जो भले ही सरल हो लेकिन आपके लिए बहुत काम के साबित हो सकते हैं। तो चलिए जानते हैं-

ब्लू टिक को गायब करें

ब्लू टिक की एक विशेषता होती है। इसके जरिये यह पता चल जाता है कि उस व्यक्ति ने आपका संदेश देखा है या नहीं। हालाँकि, यह तब परेशानी का कारण बन जाता है जब आप संदेश देखने के बाद भी उत्तर देने में असमर्थ होते हैं। ऐसी स्थिति से बचने के लिए, नीले रंग की टिक को बंद रखना बेहतर है। इसके लिए आपको वॉट्सएप्प ओपन करना होगा और सेटिंग्स में जाकर अकाउंट को टिक करना होगा। इसके बाद आपको प्राइवैसी में जाकर रीड रीसिप्ट्स का विकल्प दिखाई देगा। इसे बंद करने से ब्लू टिक सुविधा बंद हो जाएगी।

प्रोफाइल पिक्चर छिपाएँ

वॉट्सएप्प पर हम सभी अपनी तस्वीरों को प्रोफाइल पिक्चर के रूप में रखते हैं। लेकिन कोई भी उस तस्वीर को अनजान लोगों को शायद दिखाना नहीं चाहेगा।

इसलिए, वॉट्सएप्प पर यह सुविधा दी गई है, ताकि वो लोग उन तस्वीरों को देख सकें जो आपकी कांटेक्ट लिस्ट में शामिल हैं। इसे सक्रिय करने के लिए आपको वॉट्सएप्प की सेटिंग्स को खोलना होगा और अकाउंट में



जाना होगा और फिर प्राइवैसी पर क्लिक करना होगा। यहां आपको प्रोफाइल फोटो का विकल्प दिखाई देगा। इसमें आपको तीन विकल्प दिए गए हैं एवरीवन, माय कांटेक्ट और नोबडी। माय कांटेक्ट का चयन करने पर आपकी तस्वीर केवल आपके कांटेक्ट के लोगों को ही दिखाई देगी।

गुप मैसेज का प्राइवेट रिप्लाई

कई बार ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है जब हम समूह में किसी संदेश का जवाब नहीं देना चाहते हैं। इसके लिए वॉट्सएप्प में प्राइवेट रिप्लाई फीचर दिया गया है। इसके

लिए आपको उस समूह को खोलना होगा और उस संदेश पर लॉग प्रेस करना होगा, जिसे आप उत्तर देना चाहते हैं। फिर आपको ऊपर तीन-डॉट मेनू पर टैप करना है। यहां आपको प्राइवेट तौर पर रिप्लाई का विकल्प दिखाई देगा। इसे चुनने पर समूह में निजी चैट में संदेशों का जवाब दिया जा सकता है।

पिक्चर और वीडियो अपने आप डाउनलोड नहीं होंगे

अगर आप नहीं चाहते कि वॉट्सएप्प पर आने वाली पिक्चर और वीडियो खुद डाउनलोड न हों, तो इसके लिए एक अलग सेटिंग भी दी गई है। इसके लिए आपको वॉट्सएप्प सेटिंग्स खोलनी होगी और स्टोरेज और डेटा पर जाना होगा। मीडिया ऑटो-डाउनलोड का विकल्प यहां दिखाई देगा। आप मोबाइल डेटा और वाई-फाई दोनों के लिए ऑटो डाउनलोडिंग बंद कर सकते हैं, जिससे पिक्चर और वीडियो अपने आप डाउनलोड नहीं होंगे।

वॉट्सएप्प कॉन्टैक्ट को ब्लॉक करें

वॉट्सएप्प पर अक्सर ऐसा होता है कि हमें किसी कॉन्टैक्ट को ब्लॉक करना पड़ता है। ऐसा करने के बाद न तो वॉट्सएप्प पर आपकी कोई बातचीत हो सकती है, न ही आप एक-दूसरे की प्रोफाइल पिक्चर देख सकते हैं। इसके लिए आपको वॉट्सएप्प खोलना होगा और उस व्यक्ति के नाम पर क्लिक करना होगा जिसे आप ब्लॉक करना चाहते हैं। यहां मेनू पर क्लिक करें और मोर पर जाएं। यहां आपको ब्लॉक का विकल्प दिखाई देगा।

12वीं पास के बाद इन कोर्स को करने पर मिलेगी गारंटीड जॉब

जब छात्र 12वीं पास करते हैं तो उनके सामने सबसे पहले यही सवाल होता है कि अब क्या करें। दरअसल, यही समय होता है, जब वह वास्तव में अपने करियर की नींव रखते हैं। इस दौरान वह सबसे ज्यादा दुविधा में होते हैं। जहां कुछ छात्र 12वीं के बाद ग्रेजुएशन और फिर पोस्ट ग्रेजुएशन करना पसंद करते हैं तो वहीं कुछ छात्र चाहते हैं कि उन्हें जल्दी से जल्दी जॉब मिले। इसके लिए वह कुछ कोर्स का सहारा ले सकते हैं। दरअसल, आजकल ऐसे कई कोर्स हैं, जिन्हें 12वीं के बाद करने से आपको अच्छी जॉब मिल सकती है। तो चलिए जानते हैं इन कोर्सेज के बारे में-

वेब डिजाइनिंग

आज के समय में इंटरनेट का इस्तेमाल काफी बढ़ गया है। इतना ही नहीं, हर व्यक्ति खुद को डिजिटल करते हुए अपना बिजनेस व काम इंटरनेट के जरिए सबको दिखाना चाहता है। जिसके कारण वेब डिजाइनर की मांग काफी बढ़ गई है। आप 12वीं के बाद इस कोर्स को कर सकते हैं। वैसे तो यह कोर्स लगभग एक साल का होता



है, लेकिन आप इस फील्ड में तीन से छह महीने के शॉर्ट टर्म कोर्स करके भी जॉब के लिए अप्लाई कर सकते हैं।

इंटीरियर डिजाइनिंग

अगर आपको डिजाइनिंग व पेंटिंग करना पसंद है तो आप इंटीरियर डिजाइनिंग के क्षेत्र में हाथ आजमा सकते हैं। 12वीं के बाद आप किसी अच्छे इंस्टीट्यूट से इंटीरियर डिजाइनिंग का शॉर्ट टर्म कोर्स कर सकते हैं। इसके बाद आपके लिए जॉब पाना काफी आसान हो जाएगा।

मेकअप आर्टिस्ट

आज के समय में मेकअप आर्टिस्ट की हर जगह डिमांड है। फिर चाहे बात न्यूज चैनल की हो या टीवी सीरियल की या फिल्मों की, मेकअप आर्टिस्ट की जरूरत पड़ती ही है। ऐसे में अगर आप अपने स्किल के जरिए अच्छा खासा पैसा कमाना चाहते हैं तो मेकअप व हेयरस्टाइलिंग का कोर्स करें। यह कोर्स एक महीने से लेकर छह महीने तक का होता है। यह कोर्स करने के बाद आप कई जगह पर जॉब पा सकते हैं।

योगा एक्सपर्ट

पिछले कुछ सालों में लोगों का क्रेज योग की तरफ बढ़ा है। इसके साथ ही योगा एक्सपर्ट की मांग भी बढ़ी है। आज के समय में लोग योगा करना चाहते हैं, लेकिन किसी योग विशेषज्ञ की देख रेख में। आप भी 12वीं के बाद योग से संबंधित कोर्स करके अपना करियर शुरू कर सकते हैं। शुरूआत में आप किसी योगा सेंटर में जॉब कर सकते हैं और बाद में आप खुद का योगा सेंटर भी खोल सकते हैं।

Rajasthan

राजस्थान के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल

को रोना के बीच राजस्थान के ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की सैर के लिए पर्यटक राजस्थान भारी संख्या में पहुंच रहे हैं राजस्थान के पर्यटन स्थलों की सैर किए बिना आपकी पर्यटन यात्रा अधूरी रहेगी। वहीं राजस्थान के पर्यटन स्थलों की बात करें तो जोधपुर न सिर्फ राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, बल्कि यह जयपुर के बाद राजस्थान का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर भी है। शहर की स्थापना 1459 में राठौड़ राजपूत शासक, मारवाड़ के राव जोधा सिंह द्वारा की गई थी। जोधपुर को सन सिटी भी कहा जाता है। क्षेत्रफल के आधार पर राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। यहां पर आपको घूमने के लिए कई बेहतरीन जगहें मिल जाएंगी।

जयपुर

राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर की स्थापना 1727 में कछवाहा राजपूत शासक सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा की गई थी, जो अंबर के शासक थे। इसकी इमारतों के गुलाबी रंग के कारण जयपुर को डपक सिटी ऑफ इंडिया के नाम से भी जाना जाता है। इस शहर की योजना वैदिक वास्तु शास्त्र (भारतीय वास्तुकला) के अनुसार की गई थी। 2008 के कॉनडे नास्ट ट्रैवलर रीडर्स चॉइस सर्वे में, जयपुर को एशिया में घूमने के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थानों में से सातवां स्थान दिया गया था।

उदयपुर

इसे झीलों का शहर भी कहा जाता है। यह शहर मेवाड़

के सिसोदिया राजपूतों की राजधानी था और अपने महलों के लिए प्रसिद्ध है जो राजपुताना शैली की वास्तुकला की भव्यता का प्रतीक है। उदयपुर की स्थापना 1553 में सिसोदिया राजपूत शासक महाराणा

स्थल भी है। यहां पर आने वाले सैलानियों के लिए देखने के लिए बहुत कुछ है।

गोल्डन फोर्ट



उदय सिंह द्वितीय ने की थी। आज यहां पर अधिकांश महलों को होटलों में बदल दिया गया है और दूर-दूर से लोग इन होटलों में आकर एक राजसी अनुभव करना चाहते हैं।

जोधपुर

जोधपुर न सिर्फ राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, बल्कि यह जयपुर के बाद राजस्थान का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर भी है। शहर की स्थापना 1459 में राठौड़ राजपूत शासक, मारवाड़ के राव जोधा सिंह द्वारा की गई थी। जोधपुर को सन सिटी भी कहा जाता है। इसे पश्चिमी राजस्थान का सबसे महत्वपूर्ण शहर माना जाता है क्योंकि यह भारत-पाकिस्तान सीमा से केवल 250 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जोधपुर एक महत्वपूर्ण पर्यटन

अगर आप जैसलमेर जाते हैं तो वहां का सबसे अच्छा अनुभव है गोल्डन फोर्ट, ये काफी खूबसूरत फोर्ट है जहां आप दिन में घूम सकते हैं और यहां पर रात में स्टे भी कर सकते हैं। रात में रुकने के लिए आपको पहले से ही बुकिंग करवानी पड़ेगी। आप गोल्डन फोर्ट की वेबसाइट पर जाकर वहां से अपना होटल बुक कर सकते हैं। यहां हर सात अलग-अलग तरह के इवेंट होते हैं। इवेंट के हिसाब से ही यहां के होटल के रेट भी बदलते हैं और वहां रहने का अनुभव भी बदलता है। गोल्डन फोर्ट में एक समय में केवल 300 लोग ही रह सकते हैं इसके लिए आपको यहां पर पहले बुकिंग करवानी होगी क्योंकि लोग जल्दी से होटल बुक कर लेते हैं। यह फोर्ट पर्यटकों के लिए सुबह 9 बजे खुल जाता है और शाम 5 बजे तक खुला रहता है।



कोरोनाकाल में फिर खड़ा हो पाएगा बॉलीवुड?

सा ल भर से निराशा के अंधकार में डूबे बॉलीवुड को आशा की नई किरण नजर आई थी लेकिन एक बार फिर लॉकडाउन के अंधेरे में बॉलीवुड डूबता हुआ नजर आ रहा है। अंधेरे हॉल में मूवी देखना कई पीढ़ियों से सिनेप्रेमियों का पसंदीदा शौक रहा है और फिल्मकारों को उम्मीद

रणवीर सिंह की इस साल दो से तीन बड़ी फिल्में रिलीज होने वाली हैं। बॉलीवुड इस समय केवल उम्मीद कर सकता है कि लोकप्रिय कलाकारों की 'स्टार पावर' 2021 में उन्हें 2020 के त्रासदी से उबरने का मौका देगी। यह निस्संदेह सुपरस्टारों की असली परीक्षा का साल होगा।

लेकिन असली परीक्षा अप्रैल में शुरू होगी जब रोहित शेट्टी की बहुप्रतीक्षित सूर्यवंशी प्रदर्शित होगी जिसमें अक्षय कुमार, अजय देवगन और रणवीर सिंह सरीखे बड़े स्टार हैं। पिछले एक वर्ष में इंडस्ट्री के लिए बहुत

तैयार हैं लेकिन अब समय बदल गया है। सुपरस्टार सिर्फ अपने बल पर अब सिनेमाघरों में दर्शकों को नहीं खींच सकते।

केंद्र सरकार के 100 प्रतिशत क्षमता के साथ सिनेमाघरों को फिर से खोलने की छूट देने के बावजूद महाराष्ट्र सहित कई राज्य हैं, जहां पूरी क्षमता के साथ सिनेमाघरों को चलाने की अनुमति नहीं



कुछ बदल गया है। मार्च से लागू देशव्यापी तालाबंदी के कारण लगभग 1000 सिंगल-स्क्रीन सिनेमाघर बंद हो चुके हैं। इस संकट के दौर में, अमेजन प्राइम वीडियो और नेटफ्लिक्स जैसे वैश्विक ओटीटी प्लेटफॉर्म ने छोटे-छोटे शहरों में अपनी पैठ बना ली है। इस दौरान गुलाबो सिताबो, लक्ष्मी, शकुंतला देवी और कुली नंबर 1 जैसी बड़ी फिल्मों की डायरेक्ट स्ट्रीमिंग होने से सिनेमाघरों का एकाधिकार खत्म हो गया है। हालांकि, ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर सीधे रिलीज की गई अधिकांश फिल्में कुछ खास नहीं कर पाई हैं, जिससे फिल्म बिरादरी को कुछ राहत मिली। उनका कहना है कि थिएटर अभी तक डिजिटल युग में अप्रासंगिक नहीं हुए हैं। इंडस्ट्री का मानना है कि दर्शकों को वापस सिनेमाघरों में ले जाने का दारोमदार अब सलमान खान, अक्षय कुमार, शाहरुख खान, आमिर खान और अजय देवगन जैसे बड़े सितारों के कंधे पर है, जिनका टिकट काउंटर पर वर्षों से वर्चस्व रहा है। उनसे उम्मीद की जा रही है कि वे आने वाले हफ्तों और महीनों में अपने ब्लॉकबस्टर से फिल्मोद्योग को वापस पटरी पर ले आएंगे, जैसा वे महामारी के पूर्व करते थे। लेकिन, क्या अब यह उनके लिए आसान है?

इस साल कई सुपरस्टारों की फिल्में रिलीज के लिए

मिली है। इस कारण बड़े निर्माता अपनी फिल्मों की रिलीज टाल रहे हैं। थिएटर मालिकों ने बाद में सलमान खान से अपनी अगली फिल्म राधे- योर मोस्ट वांटेड भाई को सीधे सिनेमाघरों में रिलीज करने की गुहार लगाई है। सलमान ने अब घोषणा की है कि राधे 13 मई को ईद के अवसर पर सीधे सिनेमाघरों में रिलीज होगी। हालांकि, उनका अब भी कहना है कि स्थितियां पूरी तरह से अनुकूल नहीं हैं। मुंबई के एक हालिया कार्यक्रम में उन्होंने कहा, 'कई थिएटर बंद हो गए हैं और वे कब्रिस्तान जैसा एहसास दे रहे हैं। यह दुविधा वाली स्थिति है। सलमान के अनुसार, उनके पास इस साल रिलीज होने वाली तीन फिल्में (राधे, अंतिम और कभी ईद कभी दीवाली) हैं। इसके अलावा उनकी ब्लॉकबस्टर फेंचाइज, किक और टाइगर के अगले संस्करणों पर भी काम हो रहा है। लेकिन क्या वे अपने प्रशंसकों को वैसे ही आकर्षित कर पाएंगे, जैसा उन्होंने अतीत में किया था?

है कि लोग बड़ी संख्या में इन फिल्मों को देखने के लिए लौटेंगे। इस महीने रूही के बाद जॉन अब्राहम की मुंबई सागा और यश राज फिल्म्स की संदीप और पिंकी फरार सहित कई हिंदी फिल्मों रिलीज के लिए तैयार हैं। इस माह के अंत तक बॉलीवुड को यह पता चल जाएगा कि कोविड-19 के भय से उबर कर कितने दर्शक सिनेमाघरों में वापस आ रहे हैं। बॉलीवुड ने अपने नामचीन स्टारों की बड़ी फिल्मों पर सब कुछ दांव पर लगा दिया है अक्षय कुमार की कम से कम तीन फिल्में- बेल बॉटम, अतरंगी रे और पृथ्वीराज इस साल रिलीज के लिए तैयार हैं। शाहरुख खान ने अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म पठान की शूटिंग शुरू कर दी है, जिसमें सलमान भी छोटी भूमिका में हैं। आमिर खान इस साल टॉम हैंक्स की चर्चित हॉलीवुड फिल्म फॉरेस्ट गम्प (1994) के आधिकारिक रीमेक लाल सिंह चड्ढा की क्रिसमस पर रिलीज की तैयारी में जुटे हैं। अजय देवगन भी मे डे और मैदान की शूटिंग में व्यस्त हैं। रणबीर कपूर और

वर्तमान युग में, एफ एम रेडियो का महत्व

फि ल्म लगे रहो मुन्नाभाई में आपने विद्या बालन की आवाज में गुड मॉर्निंग मुंबई कहते हुए तो सुना ही होगा। कुछ ऐसा ही काम होता है एक रेडियो जॉकी का। अपनी आवाज के जादू से श्रोताओं को बांधे रखना। वो जमाना

वह अपने शो को और भी बेहतर व इंफॉर्मेटिव बना सके। वैसे तो आरजे अपने शो से पहले पटकथा लिखते हैं, लेकिन फिर भी आपको शो के दौरान चेंज करना आना चाहिए। इसके लिए आपका स्पॉनटेनियस होना आवश्यक है। आज रेडियो

भी बेहद आवश्यक है। आपकी आवाज प्रभावशाली होने के साथ-साथ आपका उच्चारण बेहद साफ व आवाज पर नियंत्रण भी होना चाहिए। आपमें अंदर यह क्षमता होनी चाहिए कि आप अपनी आवाज के उतार-चढ़ाव द्वारा लोगों को आकर्षित कर सकें। साथ ही एक आरजे को हर उम्र के लोगों को एंटरटेन करना होता है, इसलिए उसका बात करने का तरीका भी ऐसा होना चाहिए कि वह हर उम्र के लोगों को प्रभावित कर सके। अगर आप चाहते हैं कि लोग आपको पसंद करें तो आपका अपना खुद का स्टाइल व वह ओरिजिनल होना चाहिए। आपको मिमिक्री, स्थानीय बोली व कॉमेडी करना भी आना चाहिए ताकि आप अपने शो को और भी अधिक मजेदार बना सकें। एक आरजे का म्यूजिक लवर होना भी बेहद आवश्यक है। आपको न सिर्फ बॉलीवुड बल्कि इंटरनेशनल म्यूजिक के बारे में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए।

योग्यता

वैसे तो आरजे बनने के लिए कोई प्रोफेशनल कोर्स करना बेहद आवश्यक नहीं है लेकिन फिर भी अपने गुणों को निखारने के लिए आप 12वीं के बाद किसी संस्थान से डिग्री या डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं। फिर चाहे आप किसी भी स्टीम के छात्र हों। आज देश के हर राज्य में ऐसे बहुत से संस्थान हैं जो रेडियो जॉकी बनने के लिए प्रोफेशनल डिग्री व डिप्लोमा कोर्स कराते हैं।

कोर्सेज

डिप्लोमा इन रेडियो प्रोग्रामिंग व ब्रॉडकास्ट मैनेजमेंट।

डिप्लोमा इन रेडियो प्रोडक्शन व रेडियो जॉकी।
पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन रेडियो एंड ब्रॉडकास्ट मैनेजमेंट।

सर्टिफिकेट कोर्स इन रेडियो जॉकिंग।

संभावनाएं

मीडिया उद्योग में रेडियो जॉकी के लिए काम की कोई कमी नहीं है। आप एआईआर से लेकर टाइम्स एफएम, रेडियो मिड-डे, रेडियो वाणी व अन्य रेडियो स्टेशंस में जॉब के लिए अप्लाई कर सकते हैं। थोड़े अनुभव के बाद आप वॉइस ओवर कमर्शियल, लाइव शो होस्ट, टेलीविजन शो व फिल्मों के लिए भी ट्राई कर सकते हैं।



लद गया जब रेडियो पर सीधे सूचना दी जाती थी। वर्तमान युग में, रेडियो सिर्फ सूचना का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि अब इसमें मनोरंजन भी शामिल हो गया है। इंफोटेन्टमेंट के इस माध्यम में अब आरजे की जिम्मेदारी भी पहले से बढ़ गई है। अब रेडियो जॉकी लोगों को जानकारी भी इस अंदाज में देते हैं ताकि उनका भरपूर मनोरंजन भी हो सके।

क्या होता है काम

एक रेडियो जॉकी का काम सिर्फ रेडियो शो को प्रेजेंट करना ही नहीं होता बल्कि उनके कार्यक्षेत्र में म्यूजिक प्रोग्रामिंग, पटकथा लेखन, रेडियो एडवरटाइजिंग करने से लेकर ऑडियो मैगजीन व डाक्यूमेंट्री भी पेश करने होते हैं। सबसे पहले तो आपको यह समझना होगा कि रेडियो जॉकी की जॉब 9 से 5 की रेगुलर जॉब नहीं है। रेडियो में आपको दिन या रात कभी भी शो होस्ट करना होता है। साथ ही रेडियो जॉकी को न सिर्फ देश-विदेश में होने वाली गतिविधियों की जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसे अपने शहर की सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में भी पता होना चाहिए ताकि

भारत की बड़ी इंडस्ट्री में से एक है। हालांकि रेडियो इंडस्ट्री काफी पुरानी है लेकिन फिर भी पिछले कुछ समय में इस क्षेत्र ने काफी तरक्की की है। इस समय देश में बहुत से रेडियो चैनल्स मौजूद हैं, जिन्हें लोगों द्वारा काफी सराहा जा रहा है। जिसके कारण रेडियो जॉकी भी लोगों के काफी प्रिय हो जाते हैं। रेडियो अब घरों से निकलकर लोगों के हाथों तक पहुंच गया है। लोग बसों में सफर करते हुए, कार चलाते हुए यहां तक कि पैदल चलते हुए भी रेडियो सुनना पसंद करते हैं।

स्किल्स

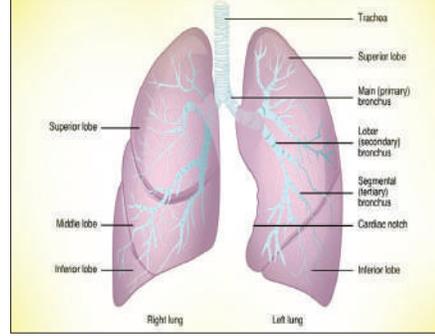
एक आरजे का न सिर्फ एक बेहतर वक्ता होना आवश्यक है बल्कि उसे हर स्थिति को अच्छे से हैंडल करना भी आना चाहिए। साथ ही आपमें प्रेजेंटेशन स्किल भी बेहतर होना चाहिए। इसके लिए आपका आत्मविश्वासी व हाजिरजवाब होना



फेफड़ों को हेल्दी रखने के लिए अपने भोजन में शामिल करें ये मसाले...

आ जकल ज्यादातर लोग अपनी सेहत को लेकर चिंतित रहते हैं। इसके लिए वो खानपान से लेकर योग या व्यायाम तक सहारा लेते हैं। लाइफस्टाइल में हर छोटे से छोटे बदलाव कर हम खुद को सेहतमंद बनाए रख सकते हैं। बदलती लाइफस्टाइल के कारण लोग पहले से ही अपनी सेहत को चिंतित थे ही कि कोरोना वायरस महामारी इस चिंता को और ज्यादा बढ़ा कर रख दिया है। ऐसे में जो लोग अपनी सेहत पर खासा ध्यान नहीं देते थे उन्होंने भी खुद के खानपान से लेकर रहन-सहन में बदलाव कर दिए हैं, जिससे कि वो इस गंभीर वायरस की चपेट में आने से बच सके। वहीं, चिकित्सकों के अनुसार सेहतमंद रहने के लिए इम्यून सिस्टम यानी प्रतिरक्षा तंत्र का मजबूत होना काफी जरूरी है। इसके कमजोर होने से मधुमेह, दिल संबंधित रोग, मोटापा, अस्थमा और ब्लड प्रेशर जैसी समस्या होती है और इससे कोरोना वायरस होने का खतरा ज्यादा रहता है। इसके अलावा बढ़ते प्रदूषण के कारण हमारे फेफड़ों पर भी बेहद खराब असर पड़ता है, जिससे फेफड़ों से संबंधित रोग हो सकते हैं। इसलिए हमें अपने इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाए रखने के साथ-साथ अपने फेफड़ों को भी स्वस्थ रखना चाहिए। इसके लिए आज हम आपको कुछ खास मसालों के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्हें अपने भोजन में शामिल कर सकते हैं, आइए जानते हैं... **हल्दी-हल्दी** एक ऐसा मसाला है जिसे संजीवनी बूटी के जैसा माना जाता है। इससे कई तरह के

रोगों से बचा जा सकता है। इसमें मौजूद एंटीसेप्टिक और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण सूजन को कम करने का कार्य करते हैं। इसके अलावा ये एंटी वायरल होने के कारण हमारे



फेफड़ों को संक्रमण से बचाव करने में मदद करता है। इसलिए हमें अपने भोजन में हल्दी का इस्तेमाल जरूर करना चाहिए। आप चाहें तो रोजाना दूध में हल्दी मिलाकर भी सेवन कर सकते हैं। ये आपके फेफड़ों को सेहतमंद बनाए रखने के साथ-साथ हमारे शरीर को अन्य तरह के रोगों से भी बचा सकता है।

अजवाइन-अजवाइन का इस्तेमाल मसाले के तौर पर तो किया जाता ही है, इसके अलावा इसका इस्तेमाल आयुर्वेद में औषधि के रूप में किया जाता है। जब भी पेट में किसी तरह की कुछ गड़बड़ होती है तब भी इसे घरेलू नुस्खे के रूप में गुनगुने पानी के साथ सेवन करते हैं। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स सांस के मार्ग को

आराम पहुंचाने के साथ-साथ फेफड़ों को साफ करता है। इसके सेवन से सूजन को भी कम किया जा सकता है। **आरिंगेनो-आजकल** पिज्जा, पास्ता या मोमोस पर आरिंगेनो को डालकर उसके स्वाद को बढ़ाया जाता है। हालांकि, ये कम ही लोग जानते हैं कि अजवाइन की पत्तियों का अंग्रेजी में आरिंगेनो कहा जाता है। इसमें फ्लेवोनॉयड्स, बायोएक्टिव कंपाउंड पॉलीफेनोल्स और एंटीमाइक्रोबियल गुण मौजूद होते हैं। जिससे हिस्टामिन कम होता है जोकि सूजन के कारण होती है। इसके अलावा ये कई तरह के रोगों और संक्रमण से बचाव करने के लिए भी काफी मददगार साबित होता है। इससे फेफड़ों को भी सेहतमंद बनाए रखने में मदद मिलती है। **मुलेठी-भारतीय रसोई** में मुलेठी का इस्तेमाल किया जाता है। इससे सर्दी, श्वसन संबंधी समस्याओं और खांसी को दूर किया जा सकता है। इसमें कंपाउंड मौजूद होता है, जो फेफड़ों में जमे बलगम को निकालने का कार्य करता है। भोजन में इस मसाले का इस्तेमाल कर फेफड़ों को स्वस्थ रखा जा सकता है।

गिलोय-आयुर्वेद में गिलोय को रसायन माना जाता है जोकि सेहत के लिए काफी लाभदायक होता है। इसके सेवन से कई तरह के रोगों से बचा जा सकता है। ये हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत करने के अलावा फेफड़ों को भी सुरक्षित रखने में मदद करता है। इसमें मौजूद एंटीमाइक्रोबियल गुण सूजन को कम करने का कार्य करता है।

कोरोना काल में बच्चों का अतिरिक्त ध्यान रखना है जरूरी

बी ते वर्ष हम सभी ने यह देखा कि जिन लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत रही, वह इलाज मौजूद ना होने के बावजूद भी बेहद आसानी से इस बीमारी को मात दे पाए। इसलिए बच्चों को कोरोना से सुरक्षित रखने के लिए उनके इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाएं। देश में कोरोना वैक्सीन लगाना शुरू हो गया है, लेकिन इसके बावजूद खतरा अभी पूरी तरह से टला नहीं है। हाल में जिस तरह कोरोना के मरीजों की संख्या बढ़ रही है, इससे तो यही लग रहा है कि संकट और गहराता जा रहा है। इस बीमारी में बूढ़ों के अलावा बच्चों का भी अतिरिक्त ध्यान रखने की जरूरत होती है। अगर उनके स्वास्थ्य के साथ किसी तरह की लापरवाही बरती जाए तो गंभीर परिणाम देखने को मिल सकते हैं। तो चलिए जानते हैं कि कोरोना काल में बच्चों को कैसे रखें सुरक्षित-

भीड़ से रखें दूर-बच्चों के लिए हरवक्त घर के अंदर रहना मुश्किल होता है। वैसे भी उनके विकास के लिए फिजिकल एक्टिविटी बहुत जरूरी है। लेकिन कहते हैं न! जान है तो जहान है। इसलिए बच्चों को इन दिनों किसी भी तरह की सार्वजनिक जगहों पर न ले जाएं।

बाल रोग विशेषज्ञों की मानें तो बच्चों को भीड़ भरे इलाकों से दूर रखें। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि



कोविड बहुत आसानी से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को हो सकता है। इसे फैलने में बहुत कम समय लगता है। बच्चों को भी यह बीमारी आसानी से हो सकती है। इसलिए बच्चे को लोगों के संपर्क से दूर रखें। जितना संभव हो, उन्हें घर में रहने की ही सलाह दें।

हाईजीन का रखें ध्यान-स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार इस बीमारी से बचने का एक आसान और सरल उपाय है, अपनी साफ-सफाई यानी हाईजीन का ध्यान रखना।

बच्चे से कहें कि किसी भी ऐसी चीज को हाथ न लगाएं, जिसे किसी और ने छुआ है। यदि वह ऐसा करते हैं, तो उन्हें तुरंत हाथ धोने या हैंड सैनिटाइज करने को कहें। इन दिनों हालांकि ज्यादातर बच्चों की ऑनलाइन क्लासेस चल रही हैं। इसके बावजूद कुछ बच्चे ट्यूशन जाने लगे हैं। ट्यूशन में कई बच्चों के साथ मुलाकात होती है। बातचीत होती है और एक ही चीज को कई बच्चे हाथ लगाते हैं। ट्यूशन से लौटने के बाद बच्चों को उनकी ड्रेस चेंज करने को कहें। इसके साथ ही घर की साफ-सफाई पर भी पूरा ध्यान दें।

प्रतिरक्षा प्रणाली को बनाएं मजबूत-बीते वर्ष हम सभी ने यह देखा कि जिन लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत रही, वह इलाज मौजूद ना होने के बावजूद भी बेहद आसानी से इस बीमारी को मात दे पाए। इसलिए बच्चों को कोरोना से सुरक्षित रखने के लिए उनके इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाएं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखकर, सही खानपान और अच्छी जीवनशैली को अपनाकर आप स्वस्थ रह सकते हैं। बच्चों की डाइट में उन चीजों को शामिल करें, जो उनके इम्यून को बेहतर बनाते हैं। जंक फूड आदि से उन्हें बिल्कुल दूर रखें।

टमाटर और दूध की मदद से बनाएं फेस पैक, मिलेगी निखरी-निखरी त्वचा

रिक न की केयर करने के लिए नेचुरल चीजों से बेहतर चीज कोई हो ही नहीं सकती। इसका लाभ यह होता है कि नेचुरल चीजों का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता। इन्हें हर स्किन टाइप पर इस्तेमाल किया जा सकता है और यह काफी सस्ते भी पड़ते हैं। आप भी अपनी स्किन के लिए कई तरह के फेस पैक का इस्तेमाल अब तक करती आ रही होंगी। लेकिन अब एक बार आप टमाटर और दूध की मदद से बनने वाले फेस पैक को अप्लाई करके देखें। इससे आपकी स्किन को कई बेहतरीन लाभ होंगे। तो चलिए इस लेख में जानते हैं टमाटर और दूध से बनने वाले फेस पैक की खूबियों और इसे अप्लाई करने के तरीके के बारे में-

यू बनाएं फेस पैक

स्किन केयर एक्सपर्ट बताते हैं कि यह फेस पैक आपकी स्किन की क्लींजिंग में मददगार है। इस फेस पैक को बनाने के लिए आपको एक टमाटर और आधा कप दूध की जरूरत होगी। एक बाउल में टमाटर को मेश करके उसमें दो टेबलस्पून दूध मिलाएं। अब चेहरे को साफ करें और इस फेस मास्क को चेहरे पर इवन अप्लाई करें।

अब इसे करीबन पांच मिनट के लिए ऐसे ही छोड़ दें।



लैक्टिक एसिड एक्ने के कारण स्किन पर होने वाली

इंजिंग सेंसेशन को कम करने में सहायक है। साथ ही यह आपकी स्किन को मॉइश्चराइज भी करता है। वहीं दूसरी ओर टमाटर में मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटी टेट्रोसिनेस एक्टिविटीज स्किन की कॉम्प्लेक्शन को लाइटन करने के साथ-साथ स्किन डैमेज को भी कम करता है। इसके अलावा टमाटर एंटी-एजिंग की तरह भी काम करता है, जिससे फाइन लाइन्स, रिकल्स और एज-स्पॉट्स आदि भी कम होते हैं। इसमें मौजूद विटामिन सी त्वचा में कोलेजन और इलास्टिन उत्पादन में सुधार करता है, जिससे स्किन ब्यूटीफुल हो जाती है। वहीं, यह त्वचा के पीएच स्तर को संतुलित करता है। डेड स्किन सेल्स को हटाता है

आखिरी में साफ पानी की मदद से इसे क्लीन करें।
होते हैं यह लाभ
स्किन केयर एक्सपर्ट के अनुसार, दूध आपके ब्यूटी रूटीन का एक अहम हिस्सा होना चाहिए। साथ ही यह मुंहासे के उपचार में भी सहायक है। इसमें मौजूद

एजिंग की तरह भी काम करता है, जिससे फाइन लाइन्स, रिकल्स और एज-स्पॉट्स आदि भी कम होते हैं। इसमें मौजूद विटामिन सी त्वचा में कोलेजन और इलास्टिन उत्पादन में सुधार करता है, जिससे स्किन ब्यूटीफुल हो जाती है। वहीं, यह त्वचा के पीएच स्तर को संतुलित करता है। डेड स्किन सेल्स को हटाता है

गर्मियों में इन ब्यूटी प्रॉडक्ट्स का करें इस्तेमाल, मिलेगा बेहद फायदा

रिक न व मेकअप एक्सपर्ट कहते हैं कि समर्स में आप हमेशा ऐसे ब्यूटी प्रॉडक्ट्स को चुनें, जो ऑयल फ्री हो। भले ही आपकी स्किन ऑयली हो या रूखी, समर्स में स्किन से अतिरिक्त ऑयल निकलता है, जिससे त्वचा चिपचिपी नजर आती है। जब मौसम बदलता है तो आपकी स्किन की जरूरतें भी बदल जाती हैं। इतना ही नहीं, इस मौसम में अगर आप सच में अपनी स्किन की केयर करना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि आप सही प्रॉडक्ट्स का भी चयन करें। आपकी स्किन अधिकतर इसी बात पर निर्भर करती है कि आप किन ब्यूटी प्रॉडक्ट्स को चुनते हैं। तो चलिए आज हम आपको कुछ ऐसे ब्यूटी प्रॉडक्ट्स के बारे में बता रहे हैं, जो समर्स में आपकी स्किन के लिए बेहद लाभदायक होते हैं-

ऑयल फ्री हो प्रॉडक्ट

स्किन व मेकअप एक्सपर्ट कहते हैं कि समर्स में आप हमेशा ऐसे ब्यूटी प्रॉडक्ट्स को चुनें, जो ऑयल फ्री हो।

भले ही आपकी स्किन ऑयली हो या रूखी, समर्स में



स्किन से अतिरिक्त ऑयल निकलता है, जिससे त्वचा चिपचिपी नजर आती है। वहीं अगर ब्यूटी प्रॉडक्ट भी ऑयल बेस्ड होंगे तो इससे आपकी स्किन हमेशा ग्रीसी नजर आएगी।

जरूरी है सनस्क्रीन

आमतौर पर सांवली स्किन की लड़कियां यह मानती हैं कि उन्हें सनस्क्रीन की कोई जरूरत नहीं है। जबकि यह

सच नहीं है। वैसे तो आपको हमेशा ही घर से बाहर निकलने से पहले सनस्क्रीन अप्लाई करना चाहिए। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपकी स्किन टोन क्या है, सूरज की हानिकारक किरणें आपकी स्किन को बेहद नुकसान पहुंचा सकती हैं। सूरज की किरणों से आपको सनटैन के अलावा स्किन रैशेज व अन्य स्किन प्रॉब्लम्स होने का खतरा भी रहता है।

एसपीएफ युक्त हो लिप बाम

चूंकि समर्स में आप लिप्स पर सनस्क्रीन नहीं लगा सकती हैं, इसलिए अपनी लिप्स की अतिरिक्त केयर करने व उसे सूरज की किरणों से प्रोटेक्ट करने के लिए आप समर्स में ऐसे लिप बाम को अप्लाई करें, जो एसपीएफ युक्त हो। इस तरह के लिप बाम समर्स में आपके होंठों को नमी प्रदान करने के साथ-साथ सूरज से भी प्रोटेक्ट करते हैं।

बीबी क्रीम आएगी काम

समर्स में जब मेकअप की बात होती है तो आपको खुद को लाइट रखना चाहिए। इसके लिए हैवी फाउंडेशन या मेकअप प्रॉडक्ट अप्लाई करने की जगह बीबी क्रीम लगाएं। यह एक हल्का मेकअप प्रभाव देता है और एक मॉइश्चराइज़र के रूप में कार्य करता है, जो आपकी त्वचा को यूवी क्षति से बचाता है। यह आपके चेहरे पर एक चमक प्रदान करता है और आपकी स्किन को इवन टोन लुक देता है।



चुनिंदा फिल्मों में काम करना चाहती है परिणीति चोपड़ा

बॉ लीवुड अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा चुनिंदा फिल्मों में काम कर लोगों को चौंकाना चाहती है। परिणीति चोपड़ा की इस वर्ष द गर्ल ऑन द ट्रेन, संदीप और पिकी फरार और साइना प्रदर्शित हूँ, जिसमें उनके अभिनय को पसंद किया गया। परिणीति चोपड़ा ने बताया कि वह ऐसी चुनिंदा फिल्मों में काम करने वाली हैं जिनमें उनका परफॉर्मेंस देखकर लोग चौंक जाएंगे। परिणीति ने कहा, “मैं बेहद खुश और उत्साहित महसूस कर रही हूँ, क्योंकि मेरी फिल्मों को काफी अच्छे रिव्यू मिले हैं। मुझे लगता है कि वर्सेटाइल रोल्स निभाने का मेरा फैसला दर्शक और समीक्षकों को काफी पसंद आया, जिससे एक कलाकार के तौर पर मुझे अपनी प्रतिभा को निखारने में मदद मिली।” परिणीति ने कहा, “मुझे उम्मीद है कि तीन बैक-टू-बैक फिल्मों की तरह आने वाली फिल्मों में भी लोग मेरा काम देखकर हैरान रह जाएंगे।



प्रभास के साथ नजर आएंगी

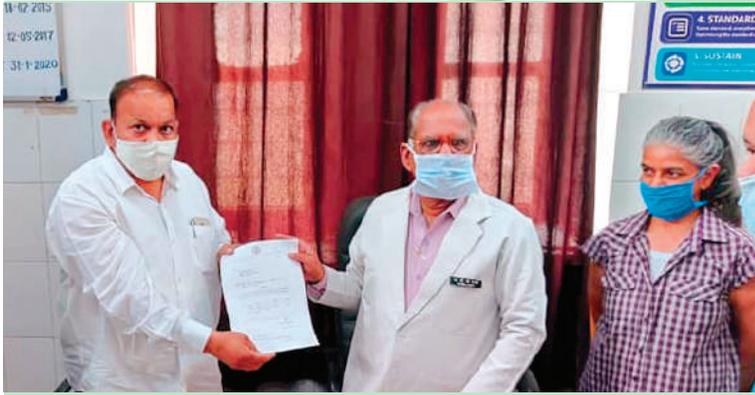
दीपिका

सि नेमा के बाहुबली प्रभास और दीपिका पादुकोण ने एक साइंस-फिक्शन फिल्म के लिए हाथ मिलाया है, जिसे नाग अश्विन द्वारा निर्देशित किया जाएगा। एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार फिल्म के निर्माताओं ने फिल्म को अंग्रेजी में रिलीज करने की योजना बनाई है क्योंकि फिल्म का विषय वैश्विक है। इस साल के अंत में फिल्म वैनचंती की शूटिंग शुरू हो जाएगी। प्रभास और दीपिका पादुकोण की फिल्म का प्री-प्रोडक्शन का काम अभी चल रहा है। एक एंटरटेनमेंट पोर्टल में प्रकाशित एक रिपोर्ट में बताया गया है कि निर्माता फिल्म को पांच भारतीय भाषाओं में रिलीज करने के अलावा अंग्रेजी में भी रिलीज करेंगे। फिल्म की यूनिट से जुड़े एक सूत्र ने कहा, नाग अश्विन और इस विज्ञान कथा की पूरी टीम न केवल पांच भारतीय भाषाओं- तेलुगु, हिंदी, तमिल, मलयालम और कन्नड़ बल्कि अंग्रेजी में भी फिल्म को रिलीज करने की योजना बना रही है। ये वैश्विक स्तर पर भारत की फिल्म के लिए प्लेटफॉर्म होगा।

जनता के सच्चे जनसेवक सतीश सिकरवार

ग्वालियर पूर्व से विधायक डॉ सतीश सिंह सिकरवार एक सच्चे जनसेवक हैं यह बात हम नहीं बल्कि जनता खुद कहती है सतीश जमीन से जुड़े नेता हैं राजनीति उन्हें विरासत में मिली है इसलिए वो जानते हैं कि राजनीति में समाजसेवा जनता की सेवा ही सर्वोपरि होती है जब भी जनता को उनकी जरूरत होती है उनका नेता उनके बीच पहुंचकर उनकी समस्याओं का समाधान करा देते हैं इसीलिए सबसे लोकप्रिय विधायक के रूप में डॉ. सतीश सिंह सिकरवार ने अपनी अलग ही पहचान बनाई है। श्री सिकरवार के द्वारा कराए जा रहे जनउत्थान के कार्यों से सतीश सबके चहेते हैं एवं लोकप्रिय नेता के रूप में उभरे हैं मेधावी छात्रों के सम्मान, हो या युवाओं की प्रतिभा निखारने के लिए क्रिकेट टूर्नामेंट, गुरुजनों के सम्मान के लिए शिक्षक दिवस पर उनका सम्मान, दीपावली पर बच्चों को आतिशबाजी वितरण, बुजुर्गों का सम्मान, गरीबों को आर्थिक मदद, निःशुल्क नेत्र शिविर, गरीब मरीजों का निःशुल्क इलाज जैसे जनहित के काम उनके द्वारा निरंतर किए जाते हैं।

● गूज न्यूज नेटवर्क



कोरोना: विधायक ने दिए दस लाख रुपये

ज्वा ग्वालियर पूर्व विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस विधायक डा. सतीश सिंह सिकरवार द्वारा हारेगा कोरोना, जितेगा ग्वालियर अभियान शुरू किया गया है। विधायक ने कोरोना संक्रमितों के उपचार एवं रोकथाम के लिए विधायक निधि से दस लाख रुपये जिला अस्पताल के सिविल सर्जन को दिए हैं। यह राशि सैनिटाइजर, आक्सीजन सिलिंडर, रेमडेसिविर इंजेक्शन एवं कोरोना उपचार की दवाइयां खरीदने उपयोग की जाएगी। विधायक सिकरवार ने जिला अस्पताल मुरार के डाक्टरों एवं स्टाफ से चर्चा कर उनकी परेशानियों को जाना। डाक्टर एवं स्टाफ ने उन्हें बताया कि अस्पताल के आइस्यू में एसी नहीं है। मरीजों के लिए कूलर व पानी के लिए वाटर कूलर नहीं है, जिस कारण मरीज एवं अस्पताल के स्टाफ को टंकी का गरम पानी पीना पड़ता है। अस्पताल में सैनिटाइजर, दस्ताने, मास्क एवं टोपी भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है। इस पर विधायक ने अपना एक माह का मानदेय भी (एक लाख रुपये नगद) जिला अस्पताल मुरार को दिए। विधायक ने अस्पताल में भर्ती मरीजों की परेशानी भी सुनी।

पानी की सप्लाई हेतु दिये 3 टैंकर

ग्वालियर कांग्रेस विधायक डा. सतीश सिकरवार ने आज मांडेर की माता हार्डवेयर पर तीन पेयजल टैंकरों का पूजन कर

जनता को समर्पित कर दिया। ग्वालियर पूर्व विधानसभा में व्याप्त पेयजल समस्या को देखते हुये विधायक डा. सिकरवार



ने आमजन तक पेयजल पहुंचाने के लिये यह जरूरी कार्य किया है। इससे विधानसभा के किसी भी क्षेत्र में जनता की मांग पर पानी पहुंचाने का कार्य किया जायेगा। डा. सिकरवार ने नगर निगम के पीएचई अमले को कहा है कि जिन स्थानों पर गंदे पेयजल सप्लाई होने की शिकायतें आ रही है, उनका निराकरण तत्परता से कराया जाये। कार्यक्रम में अवधेश कौरव, विजय बहादुर त्यागी, सुरेश प्रजापति, साहब सिंह बघेल, टिन्कू परिहार, अभय कुमार सिंह (कल्लू), राजेन्द्र गुप्ता, अंकित कठवल आदि मौजूद रहे।

जनसुनवाई में सुनते हैं जनसमस्याएं

कांग्रेस विधायक डॉ. सतीश सिंह सिकरवार ने मुरार ब्लॉक कांग्रेस कमेटी कार्यालय बारादरी चौराहा पर जनचौपाल

लगाई। इस जनचौपाल में उन्होंने सुबह 9 बजे से क्षेत्रीय जनता की समस्याएं सुनी एवं उनका तत्काल निराकरण करवाया। जनचौपाल में क्षेत्रीय जनता के शहरी घरेलू कामकाजी महिला कार्ड, हाथठेला कार्ड,

विधायक सिकरवार ने दी आर्थिक सहायता

विधायक डॉ. सतीश सिंह सिकरवार ने दो परिवारों की आर्थिक सहायता की। इसके तहत उन्होंने एक परिवार की उपचार तथा दूसरे को पुत्री के विवाह के लिए बीस-बीस हजार रुपए की मदद की। डॉ. सिकरवार को यह जानकारी मिली थी कि भीमनगर निवासी हरीश जाटव और उनकी माताजी बीमार होने के कारण कोई भी काम करने में असमर्थ है, परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो चुकी है इसके बाद वे हरीश के घर पहुंचे और इलाज के लिए 20 हजार रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान की।





मैं पार्टी के सच्चे कार्यकर्ता के तौर पर काम करता हूँ और करता रहूंगा : तुषमुल झा

राजनीति में तुषमुल ने बनाई अलग पहचान, युवाओं में हैं काफी लोकप्रिय

● गूज न्यूज नेटवर्क

बीजेपी के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सांसद प्रभात झा के पुत्र तुषमुल झा की पहचान एक युवा ऊर्जावान



राजनेता की है। राजनीति में तुषमुल झा का चेहरा काफी चर्चित है उन्हें राजनीति विरासत में मिली है उनके पिता प्रभात झा बीजेपी के वरिष्ठ नेता और सांसद हैं। तुषमुल काफी मिलनसार और जन-जन में लोकप्रिय हैं और युवाओं के रोल मॉडल हैं। उनकी यही पहचान उन्हें और अन्य नेता पुत्रों से अलग बनाती है उनके पास युवाओं की एक बड़ी टीम है। तुषमुल जनेसवा के कार्यों में बढ़चढ़ हिस्सा लेते

हैं। विगत वर्ष उनके द्वारा स्वेच्छानुदान राशि वितरण समारोह का आयोजन किया था कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गोरखपुर से लोकसभा सदस्य रवि किशन थे कार्यक्रम मेला के फेसिलिटेशन सेंटर में आयोजित किया गया था कार्यक्रम में गोरखपुर सांसद एवं अभिनेता रवि किशन ने कहा था कि गरीबों एवं जरूरतमंदों की सहायता करना एक पवित्र कार्य है। इस कार्यक्रम में केवल जरूरतमंदों को ही सहायता के लिए चुना गया है। इसके लिए राज्यसभा सांसद के पुत्र बधाई के पात्र हैं।

तुषमुल झा का जन्म 17 जनवरी 1988 को ग्वालियर में ही हुआ उन्होंने अपनी शिक्षा दीक्षा एनआईटी रायपुर से और एमटेक झारखंड के धनबाद से की 2015 व 16 से इन्होंने राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में खुद को उतारा है। गूज न्यूज नेटवर्क से बात करते हुए तुषमुल झा ने कहा कि राजनीतिक में आदर्श के रूप में यह भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेई जी को मानते हैं। अभी तक की राजनीतिक कैरियर में सबसे सुकून देने वाला पल सबसे अच्छा दिन यह 4 जनवरी 2020 को मानते हैं। तुषमुल बताते हैं कि जिस दिन इन्होंने देश के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी से फेस टू फेस मुलाकात की नेता पुत्र होने की वजह से टिकट ना मिल पाने का कोई मलाल नहीं है 2023 में जो पार्टी का फैसला होगा वह सम्माननीय है मैं तो एक कार्यकर्ता के तौर पर काम करता हूँ और करता रहूंगा फैसले लेने का अधिकार पार्टी का है कार्यकर्ताओं को अपना भाई समझ कर ही कार्य करता हूँ।



पिता प्रभात झा के साथ तुषमुल झा।



सच्चे मन से लोगों की सेवा में कार्य कर रही सेवा भाव समिति



● गूज न्यूज नेटवर्क

गवालियर में कोरोना काल और लॉकडाउन में गरीब बेसहारा लोगों की सच्चे मन से सेवाभाव का कार्य ग्वालियर शहर की एक संस्था

सेवा भाव समिति द्वारा विगत कई वर्षों से निरंतर किया जा रहा है समिति 7 वर्षों से जे.एच.कैम्पस लश्कर ग्वालियर में, सेवा कार्य कर रही है जैसा कि समिति का नाम है (ग्वालियर सेवा भाव समिति) समिति इसी भाव से कार्य कर रही है। सुरेश चंद बिंदल अध्यक्ष, ग्वालियर सेवा समिति ने बताया कि समिति द्वारा सभी कार्य निः शुल्क किए जाते हैं। लॉकडाउन के पहले हॉस्पिटल के अंदर 8 वाटर कूलर समिति की ओर से लगाए गए हैं, एवं 2 वाटर कूलर हॉस्पिटल के रिपेयर भी कराए गए हैं। समिति द्वारा हॉस्पिटल को 50 गद्दे एवं 5 व्हीलचेयर दी गई। इसके अलावा 50 लोगों की सिटिंग की स्टील की बेंचे, रेडियोलोजिस्ट को प्रदान की गई। 6 फुटम 6 फुटम 3 फुट का संदूक टीवी हॉस्पिटल को प्रदान किया गया। मरीज के परिजनों को निःशुल्क प्रातः स्वल्पाहार, चाय, वितरित की जाती थी, एवं आदर सहित बिठा कर निःशुल्क भोजन प्रसादी वितरित की जाती है। समिति द्वारा सर्दियों में मरीज के परिजनों को कंबल भी निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं। मार्च 2020 लॉक डाउन के समय समिति द्वारा जीवायएमसी में ग्वालियर में मजबूर व असहाय, लोगों को भोजन की व्यवस्था एक माह तक, करीब 1लाख भोजन के पैकटों की व्यवस्था कर ग्वालियर शहर में वितरित किए गए इसके साथ ही हॉस्पिटल में मरीज के परिजनों को भोजन की व्यवस्था का भी ध्यान रखा गया एवं सुचारू रूप से मरीज के



परिजनों के लिए भोजन वितरित किया जाता रहा, और आज दिनांक तक वितरित किया जा रहा है इसमें प्रतिदिन करीब 500 परिजन भोजन लेने आते हैं संस्था के अध्यक्ष ने कहा कि आगे भी हमारी व्यवस्था सेवा व्यवस्था यूं ही चलती रहे और आप सभी के सहयोग से और आप सभी के मार्गदर्शन से यह पुण्य कार्य चलता रहे ऐसी समिति की इच्छा रहती है।

32 माह से नियमित कर रहे हैं राष्ट्र गान का सम्मान

भारत विकास परिषद शाखा समर्पण के 2 मिनट राष्ट्र के नाम में राष्ट्र गान को लगातार करते हुए 32 माह पूरे हो गए हैं। उपाध्यक्ष एवम राष्ट्रगान प्रभारी गिरीश अग्रवाल ने बताया कि 2 मिनट राष्ट्र के नाम कार्यक्रम में पिछले 32 माह से लगातार नियमित ठीक 8: 30 बजे ग्वालियर के हृदय स्थल महाराज बाड़े राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न होता है। कार्यक्रम में पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता ने व सत्यनारायण मानव विकास सेवा समिति की प्रीति झा व उनकी टीम ने स्वच्छता, सुरक्षा व सतर्कता ही बचाव है, 2 गज दूरी मास्क है जरूरी इस संदेश को भारत विकास परिषद शाखा समर्पण के साथ मिलकर दिया। इस कार्यक्रम को राष्ट्र गान संयोजक अरविंद दूदावत , संस्थापक संजय धवन , संस्थापक अनूप अग्रवाल ,अध्यक्ष गुलाब प्रजापति , उपाध्यक्ष गिरीश अग्रवाल ,सचिव प्रदीप लक्षणे ,

सहसचिव महेश धीमान , बसन्त खोडेला , सतीश



राजोरिया , कमल गुप्ता , नरेंद्र शिवहरे , महेश अग्रवाल , रमन गांधी, प्रदीप शर्मा , बी के मिश्रा ,संजय रावत ,पन्नालाल ने इसे सफल बनाने में अपना विशेष योगदान दिया है। राष्ट्रगान प्रभारी गिरीश अग्रवाल ने सभी के प्रति

कृतज्ञता ज्ञापित की है व आशा की है कि आगे भी आप सभी का सहयोग इसीप्रकार मिलता रहेगा और ये राष्ट्रभक्ति का 2 मिनट राष्ट्र के नाम हमारा कार्यक्रम इसी तरह अनवरत चलता रहेगा। समीक्षा गुप्ता जी ने 2 मिनट राष्ट्र के नाम इस कार्यक्रम को काफी सराहा व कहा कि आप सब समर्पण भाव के साथ सर्दी गर्मी बरसात आंधी तूफान में भी लगातार इसके पिछले 32 माह से लगातार कर रहे हैं ये अपने आप में एक अनुपम उदारण है। संजय धवन ने बताया कि यहाँ प्रतिदिन सभी उपस्थित जरूरतमन्दों को मास्क ब्रेड टोस्ट बिस्कुट आदि का नियमित वितरण किया जाता है। गिरीश अग्रवाल ने संजय धवन को प्रान्तीय कार्यकारणी में ससंस्कार प्रमुख बनाये जाने पर आपको बधाई दी है व आपके उज्वल भविष्य की कामना की है।



पंडित श्री सतीश कौशिक महाराज जी को गूँज पत्रिका की प्रति भेंट करतीं गूँज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह

श्रीमद् भागवत में भगवान के प्रति प्रेम, गुरुभक्ति एवं संस्कार सीखने को मिलते हैं पं. सतीश कौशिक जी महाराज

● गूँज न्यूज नेटवर्क

पं पंडित सतीश कौशिक जी महाराज श्री का जन्म गालव ऋषि की तपस्थली ग्वालियर में एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में दिनांक 24 जनवरी 1987 को हुआ। कौशिक जी का पत्रिक गांव परीक्षा



जिला मुरैना मध्य प्रदेश है। लेकिन जन्म एवं शिक्षा क्षेत्र ग्वालियर एवं वृंदावन धाम रहा है। बचपन से ही कौशिक जी का रूझान धार्मिक क्षेत्र की तरफ रहा संगीत में विशेष रूची होने के कारण कौशिक जी विधिवत भारतीय शास्त्रीय (गायन एवं वादन) संगीत की शिक्षा प्राप्त की।



आप बचपन से ही ईश्वर की भक्ति में इतने सराबोर थे कि भगवान थे कि भगवान की कथा कहना एवं धर्म का प्रचार करना ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। आपके परम पूज्यनीय श्रीश्री 1008 महामण्डलेश्वर संत श्री रामदास जी महाराज दंदरौआ सरकार के द्वारा दीक्षा

संस्कार हुआ गुरुजी की कृपा से आज कथा वाचकों में आप की एक अलग छवि है। कौशिक जी ने अनेक विद्वानों के सानिध्य में रहकर श्रीमद् भागवत का अध्ययन किया। आपने संस्कृत, हिन्दी साहित्य एवं संगीत में एम.एम. की डिग्री प्राप्त की है। आपने छोटी सी आयु में

पंडित सतीश कौशिक महाराज जी ने परम पूज्यनीय श्रीश्री 1008 महामण्डलेश्वर संत श्री रामदास जी महाराज दंदरौआ सरकार के द्वारा दीक्षा संस्कार हुआ गुरुजी की कृपा से आज कथा वाचकों में आप की एक अलग छवि है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भारत के बाहर भी अपनी वाणी से भगवान की कथा का रसपान कराया है, महाराज श्री के अंदर सभी के प्रति आदर-सम्मान देने का भाव सदैव दिखाई पड़ता है। कौशिक जी की कथा एवं प्रवचन में विशेष रूप से भगवान के प्रति प्रेम, गुरुभक्ति एवं संस्कार सीखने को मिलते हैं। इनकी समथी वीणा से अनेकानेक भक्त एवं श्रोतावृन्द अपनी समस्त चिंताओं को भूलकर भगवान की लीलाओं में ली हो जाते हैं और भगवान को अपने हृदय में अनुभव करते हैं। इसी प्रकार अपने धर्म की ध्वजा देश दुनिया में हमेशा फहराते रहें। हम सब उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

GOONJ भागवत की चित्रमय झलकियां



भक्ति ज्ञान यज्ञ सप्ताह मुवतानंद आश्रम हरिशंकरपुरम में श्रीमद भागवत का आयोजन किया गया जिसमें पंडित श्री सतीश कौशिक महाराज जी ने प्रवचन दिए कथा के दौरान भक्तगणों ने महाराज की के प्रवचन सुने इस अवसर पर कलशयात्रा भी निकाली गई भागवत में भण्डारे का भी आयोजन किया गया भक्तों ने प्रसादी ग्रहण की।



कोरोना से बचने के लिए मास्क जरूर लगाएं



**माँ पूर्णागिरी महिला मंडल सामाजिक संस्था ने चलाया मास्क वितरण अभियान
मास्क वितरण कर कोरोना के प्रति लोगों को किया जागरूक**

● गूज न्यूज नेटवर्क

माँ पूर्णागिरी महिला मंडल सामाजिक संस्था ने ग्वालियर में गरीब बस्तियों में जाकर मास्क वितरण किया एवं कोरोना के प्रति बच्चों को जागरूक किया। संस्था द्वारा मास्क वितरण अभियान एवं कोरोना के प्रति जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है जिसमें लोगों को मास्क पहनने एवं कोरोना के प्रति जागरूक करने का कार्य कर रहे हैं संस्था की अध्यक्ष कृति सिंह ने बताया कि घर से जब भी निकले मास्क लगाकर निकले स्थिति इतनी खराब है इस समय कि लोग अपनी जान की परवाह न करते हुए बिना मास्क लगाए ही घर से निकल रहे हैं उन्होंने कहा कि जब भी घर से निकले मास्क लगा कर निकले क्योंकि मास्क ही वैक्सीन है आप लोग मास्क लगाकर रहें। सामाजिक संस्था माँ पूर्णागिरी महिला मंडल जो कि गरीब एवं असहाय लोगों के लिए निरंतर कई सालों से कार्य कर रही हैं संस्था की अध्यक्ष कृति सिंह हैं। संस्था की टीम द्वारा कोरोना काल में गरीब मजदूरों को भोजन एवं मास्क व सैनेटाइजर वितरित किए जा रहे हैं। माँ पूर्णागिरी महिला मंडल की अध्यक्ष कृति सिंह ने लोगों को जागरूक करते हुए कहा कि कोरोना महामारी से सुरक्षित रहने के लिए मास्क पहनें, बार-बार हाथ धोएं, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें अपनी सुरक्षा अगर आप खुद रखेंगे तो परिवार व समाज के लोग भी सुरक्षित रहेंगे मास्क वितरण में संस्था के पदाधिकारीगण विशेष रूप से मौजूद रहे जिनमें अलका तोमर, वंदना तोमर, स्तुति सिंह, राजीव सिंह तोमर, रामनरेश तोमर, आकांक्षा तिवारी आदि लोगों ने अपना योगदान दिया।





आपकी अपनी आवाज़

2 MONTHS CERTIFICATE COURSE OFFERED

**CONTENT
WRITING**

**Communication
& Personality
Development**

**RADIO
JOCKEY**

**RADIO
PRODUCTION**

 @8Goonj
 Goonj 90.8FM-Aapki Apni Awaz
 7880071908, 7880040908
 goonj90.8

**NEWS
ANCHORING**

GOONJ (M.P.)

आपकी अपनी आवाज़

देश-दुनिया और अपने आसपास की हर खबर को पढ़ने के लिए जुड़ें हमारे साथ
गूज एमपी न्यूज पोर्टल में देश-विदेश, राजनीति, खेल, बॉलीवुड, अपराध, व्यापार,
मध्य प्रदेश, अंचल की खबरें पढ़ने के लिए लॉग इन करें.....

www.goonj.mp.in

(अगर आपके पास कोई खबर हो तो हमें भेजें हम उसे प्रमुखता से फ्लैश करेंगे)

website : www.goonjgw.com, Email : goonjgw@gmail.com
Address : E-69, Harishankarpuram, Gwalior (M.P.)



PARAKH

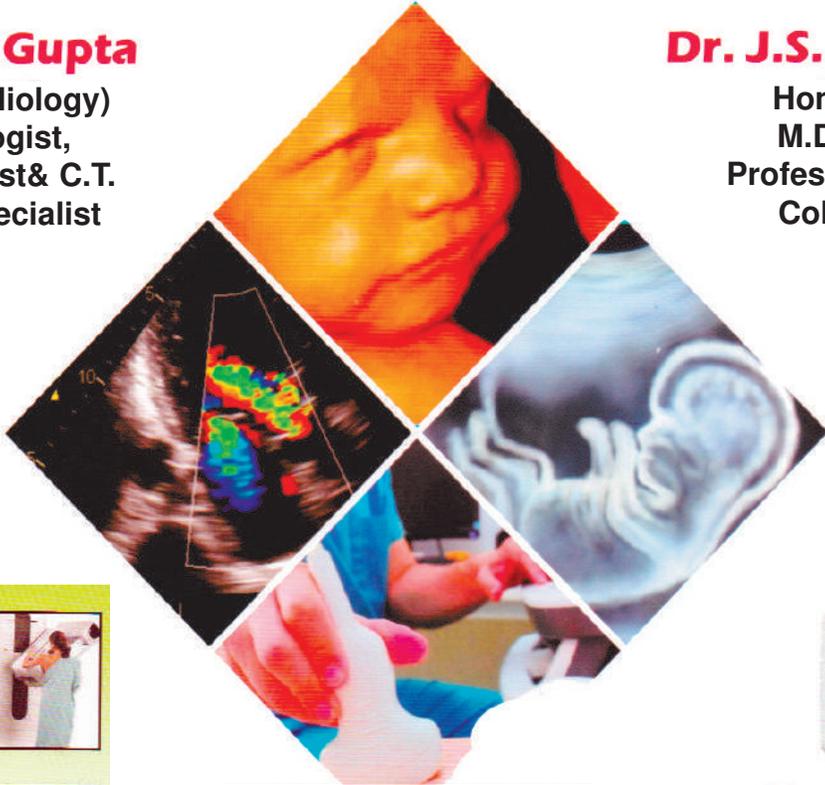
X-RAY, ULTRASOUND & COLOUR DOPPLER CENTRE

Dr. R.P. Gupta

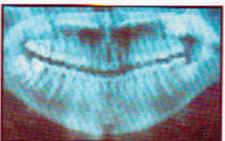
M.D. (Radiology)
Sonologist,
Radiologist & C.T.
Scan Specialist

Dr. J.S. Sikarwar

Hony. Consultant
M.D. (Radiology)
Professor, G.R. Medical
College, Gwalior



PARAKH X-RAY & ULTRASOUND



Facilities Available

Digital X-Ray
Ultrasonography
High Resolution Sonography
Colour Doppler
USG - 3D / 4D
Anomaly Scan / Target Scan
O.P.G.
ECHO Cardiography
Mammography



OLD BUS STAND, KAMPOO, LASHKAR, GWALIOR- 474009 (M.P.)
PHONE : 0751- 2628850, 4030299